घट रामायन

[भाग २]

सतगुरु तुलसी साहिब (हाथरस वाले)

की रची हुई

यह ग्रंथ दो प्रमानिक लिपियों का मिलान करके
बड़ी शुद्धता से दो भागों में पूरा छापा
गया है, मय उन महात्मा के

जीवन-चरित्र

के

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुई

सन १९१७ ई०

दूसरा एडिशन] [दाम प्रति भाग १)

Printed at The Belvedere Steam Printing Works, Allahabad, by E. Hall

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओँ की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैँ उन मेँ से बिशेष तो पहिले छपी ही नहीँ थीँ और जो छपी थीँ सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप मेँ या छेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीँ उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और ब्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैँ और फुटकल शब्दोँ की हालत मेँ सर्ब-साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैँ, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियोँ का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीँ छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दोँ के अर्थ और संकेत फुट-नोट मेँ दे दिये ह। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तोँ और महापुरुषोँ के नाम किसी बानी मेँ आये हैँ उन के बृत्तांत और कौतुक संछेप से फुटनोट मेँ लिख दिये गये हैँ।

दो अंतिम पुस्तकेँ इस पुस्तक-माला की अर्थात संतबानी संग्रह भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीँ जिन का नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था— "न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओँ और बुद्धिमानोँ के बचनोँ की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य मेँ सन् १६१६ मेँ छपी है जिसके बिषय मेँ श्रीमान महाराज काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओँ का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयोँ की सेवा मेँ प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि मेँ आवेँ उन्हेँ हम को कृपा करके लिख भेजेँ जिस से वह दूसरे छापे मेँ दूर कर दिये जावेँ।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनोँ से इन पुस्तकोँ के छापने मेँ बहुत ख़र्च होता है तौ भी सर्ब-साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ (रायल) से अधिक नहीँ रक्खा गया है।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

मार्च सन् १६१७ ई०

इलाहाबाद

तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की

घट रामायन

भाग २

रेवतीदास चरित्र

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सँग रहि इक साधा । मनमुख और मान मद माता ॥
रेवतीदास ताहि कर नामा । फूलदास देखि घबराना ॥
पुनि बोला मन मैं रिसियाना । स्वामी अब चलिये अस्थाना ॥
फूलदास कहै आज न आवौं । तुम सब मिलि अस्थानै जावौ ॥
हमहूँ भोर बिहानै अइहैं । राति यहीं चरनन मैं रहिहैं ॥
तिन पुनि तरक कीन्ह इक बाता । तुमहूँ रहिहौ इन के साथा ॥
हम को सूझि परा अस लेखा । तुम्हरी मति बुधि अचरज देखा ॥

॥ फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

गुसा खाइ बोले अस बोली । लै उतार दीन्ही सोइ सेली ॥
फूलदास दीन्ही तेहि हाथा । रेवती सीस नवायौ माथा ॥
गल बिच डारि महंती दीन्हा । सुखपालै बकसीसी कीन्हा ॥
तुम तौ करौ महंती जाई । अब हम नहिं अस्थानै आई ॥
चेला चला बैठि सुखपाला । फूलदास भया और हवाला ॥
चेला मारग मता बिचारा । मन मैं सोच किया अधिकारा ॥
छाँड़ि महंती हम को दीन्हा । या से अधिक बात कछु चीन्हा ॥
सब सुख भोग मनै नहिं लाये । ये तौ अधिक बात कछु पाये ॥

जो महंत पद होता भारी । तौ छाँड़त ये देत न डारी ॥
ये सब बात तुच्छ सम होई । तब हमरे सिर डारी सोई ॥
ये बिचार मन माहिं समाना । मति भई सुद्ध उठा अस ज्ञाना ॥
फिरि पीछे मारग से आये । सुखपालै अस्थान पठाये ॥
सब मिलि कै जावौ अस्थाना । हम महंत सँग उपज्यो ज्ञाना ॥
मंगलदास रहे गुरु भाई । टोपी सेली तेहि पहिराई ॥
आये पुनि महंत के पासा । जहँ तुलसी की कुटी निवासा ॥
चौरदार सुखपाली गइया । चौरा पर उन खबर जनइया ॥
मंगल चेला सुनि पछिताना । चौरा सून भया अस्थाना ॥
पुनि बिचार कीन्हा मन माईं । यह अस्थान महंती जाई ॥
ये दोनौं मिलि कीन्ह बिचारा । हम छाँड़ैं तौ होय बिगारा ॥
जो कछु होइ होइ सो होई । अब निबाह बिन बनै न सोई ॥
मंगल मन में बहुत रिसाना । सेली पहिरि बैठि अस्थाना ॥
रेवतीदास कुटी पर आवा । ले पकरे तुलसी के पाँवा ॥
रेवतीदास बोले अस बानी । मैं रहिहौं इन के ढिंग स्वामी ॥
कुटी सामने कुटी बनाई । दोनौं रहे कुटी के माईं ॥
रेवतीदास दीन दिल आनी । स्वामी से पूछौं इक बानी ॥
गुरु चेला कर कैसा लेखा । सो स्वामी मोहिं कहौ बिबेका ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

रेवतीदास सुनौ तुम भाई । याकी बिधी कहौं समझाई ॥
नहिं कोइ गुरू नहीं कोइ चेला । बोलै सब में एक अकेला ॥
जो कोइ गुरु चेला कर जाना । सोइ सोइ परे नर्क की खाना ॥
एक बोल सब माहिं बिराजा । गुरु चेला दोइत बिधि साजा ॥
चेला होइ नीकि बिधि भाई । गुरू होइ चौरासी जाई ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी मैं तू जो तजै, रहै दीन गति सोइ ।
गुरू नवै जो सिष्य को, साध कहावै सोइ ॥ १ ॥
तुलसी कह रेवती सुनौ, कहौं कबीर मुख बात ।
कहि कबीर सब मैं बसौं, को गुरु चेला साथ ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

कह कबीर सब माहिँ बिराजौं । सब मैं किया सभी मैं साजौं ॥
कह कबीर हम सब के माईं सब हम किया सभी सब ठाईं ॥
सब के माहीं बासा कीन्हा सब मैं हमीं हमीं को चीन्हा ॥
जो महंत चेला करै भाई सब मैं रहा कबीर समाई ॥
ये बिधि बिधी कबीर पुकारा का को चेला करै लबारा ॥
घट घट माहिँ कबीर समाना का को चेला करै हैवाना ॥
कह कबीर मोहिँ सब मैं बूझा चेला करै आँखि नहिँ सूझा ॥
है कबीर सब काया माईं । ता को तुम चेला ठहराई ॥
कह कबीर सब ठाम ठिकाना । सोई कबीर का फूँको काना ॥
तुम्हरी मति कहौ कौन हिराई । कहा कबीर हम ठामै ठाईं ॥
कहते तुम को लाज न आई । कहौ कबीर फिरि गुरू कहाई ॥
कहौ कबीर सब माहिँ समाना । गुरु कबीर की करौ बखाना ॥
तुम कबीर को स्वामी गावौ । पुनि वा को चेला ठहरावौ ॥
कस कस ज्ञान तुम्हारा भाई । भूल न अपनी देखौ जाई ॥
अगम निगम का ज्ञान सुनावौ । अपने घर की भूल न पावौ ॥
कहि कबीर मुख गाना गावौ । सब्द न खोजौ पोल चलावौ ॥
नहिँ कोइ तुम को पकरनहारा । सो धन सब्द समझ की लारा ॥
ता से सोल पोल तुम लाई । पकरै तो कछु ज्वाब न आई ॥
और अनेक बात अस नासी । कौन कौन कहुँ तुम्हरी फाँसी ॥
अपना मता ऊँच करि ठानौ । ऊँचे का कछु मरम न जानौ ॥

कहि कबीर मुख साँची बानी । तुम अबूझ कछु परख न जानी ॥
कहि कबीर कथनी को गावै । बूझै जवाब न ता कै आवै ॥
एक स्वाल हम पूछैं भाई । कँवल चौरासी कौने ठाईं ॥
या की भेद राह बतलाई । कौन ठाम वे कँवल रहाई ॥
नौलख कँवल कबीर बखाना । कहौ तुम उन का कौन ठिकाना ॥
सहस कँवल दल सो पुनि भाखा । अष्ट कँवल दल भेद कहौ ता का ॥
चारि कँवल दल देव बताई । दोइ दल कँवल कौन से ठाईं ॥
ये सब कँवल जोग से न्यारा । जोगी न जानै भेद बिचारा ॥
कँवल चक्र षट जोगी गाई । उन कँवलन से न्यारे भाई ॥
या की बिधि बिधि कहौ बुझाई । कही कबीर पंथ तेहि नाहीं ॥
जो कबीर मुख भाखि बखानी । ता की तुम से पूछौं बानी ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुन भेद कहौं समझाई । रेवतीदास सुन चित्त लगाई ॥
षष्ट कँवल जोगी पुनि गाई । या का तुम को भेद बताई ॥
रहै चार दल गुदा के माईं । और दूजे की बिधी बताई ॥
छः दल कँवल नाभ के नीचे । अष्ट दल कँवल पुहमी के बीचे ॥
पखड़ी बारह हिरदे माईं । सोला पखड़ी कंठ रहाई ॥
उदित मुदित दुइ दीप कहावै । ता मैं सहस कँवल को पावै ॥
कँवल चक्र षट खुल के कहिया । संत कँवल भिनि न्यारे रहिया ॥
ये कँवला षट चक्र से न्यारा । उन को जानै संत बिचारा ॥
षोड़स द्वार काया के माईं । तुम जानौ दस द्वार रहाई ॥
छः त्रिकुटी काया के माईं । तुम जानौ पुनि एकै भाई ॥
नाल सताइस काया माईं । अट्ठाइस पुनि बंक कहाई ॥
बाइस सुन्न संत बतलावा । ये कबीर मुख अपने गावा ॥
मान सरोवर सुषमनि नारी । तिरबेनी ब्रह्मंड के पारी ॥
इतना भेद कहा हम गाई । भिन्न भिन्न कर दिया बुझाई ॥

ये हम कहा भाखि सोइ देखा । ये कबीर ने भाखा लेखा ॥
जो कोइ या का भेद बखानै । पंथ कबीर जाहि को जानै ॥
कहि कबीर की भाखि सुनावै । ये झूठै औरन की गावै ॥
अपना चखा स्वाद बतलावै । और की करनी काम न आवै ॥
और की करनी बूझ बुझावै । सो अपना कारज नहिं पावै ॥
गुरु चेला का बूझो लेखा । सो गुरु का मैं कहौं बिबेका ॥
जगत गुरू नहिं संत पुकारा । सतगुरु भेद जगत से न्यारा ॥
जो कोइ चढ़ै गगन को धावै । सो सतगुरु के सरनै आवै ॥
सतगुरु सत्त पुरुष हैं स्वामी । सो चौथा पद संत बखानी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बिचार, रेवती यह बिधि गुरु लखौ ।
चखौ अमर पद सार, देखि आदि अंदर मई ॥

॥ प्रश्न रेवतीदास और फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि रेवती मन संसय आनी । तुम ने औरै और बखानी ॥
जस जस बचन बिधी समझावा । अस आगे कोउ संत न गावा ॥
औरौ संत गये वोहि राही । सो अब उनकी साखि सुनाही
सत्त सुधा रस जिन की बानी । कहिये नाम भेद गुर छानी ॥
येहि बिधि फूलदास पुनि बोला । पूछै बिधी गुरू और चेला ॥
स्वामी या की साखि सुनाई । अगम पंथ को संतन पाई ॥
भिनि भिनि न्यारा नाम बताई । जिनकी साखी सब्द सुनाई ॥
अनुभौ भिनि भिनि सब कर न्यारा । भाखौ एक एक बिस्तारा ॥
संत संत की न्यारी बानी, एक एक की कहौ निसानी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी तुम सुनियो काना । संत सब्द का करौं बखाना ॥
दादू मीरा नाभा भाई । नानक दरिया सूर सुनाई ॥

अरु कबीर पुनि भाखा भाई । और अनेक संत बिधि गाई ॥
जो जो संत अगमपुर धाये । जिन जिन साखी सब्द सुनाये ॥
संत चरन रज तुलसीदासा । कछु कछु भाखा अगम बिलासा
तुलसी संत चरन की लारा । मेरी बुद्धि न उन अनुसारा ॥
संत चरन महिमा पुनि भाखैँ । उनके चरन सीस पर राखैँ ॥

॥ दोहा ॥

संत सब्द बिधि बिधि कहैँ, सुनियो फूलादास ।
जो जो सब्द उन भाखिया, कहैँ चरन होइ दास ॥

॥ शब्द ॥

तुलसी तुल जाई, गुरु पद कंज लखाई ॥टेक॥
मैँ तो गरीब कछू गुन नाहीँ, मो को कहत गुसाँईँ ।
जो कछु कीन्ह कीन्ह करुनामय, मैँ उनकी सरनाई ॥१॥
मैँ अति हीन दीन दारुन गति, घट रामायन बनाई ।
रावन राम की जुद्ध लड़ाई, सो नहिँ कीन्ह बनाई ॥२॥
ये तत सार तती निज जानत, जो ये लखै लखाई ।
काल काया परिवार मयाई, ये गुन ग्रंथन गाई ॥३॥
ता मैँ सार पार पद न्यारा, सो कोइ संत जनाई ।
पंडित भेष जगत अरु ज्ञानी, भेद कोऊ नहिँ पाई ॥४॥
अब बरतंत कहैँ याही को, भरत चत्रगुन भाई ।
दसरत सीता और कौसिल्या, सिया लछमन्न कहाई ॥५॥
काग भसुंड गरुड़ सबै सब, मंथ्रा अरु केकाई ।
रघुपति रंग संग परिवारा, येहि बिधि जगहिँ सुनाई ॥६॥
और सुनौ रावन रँग राई, सब परिवार बताई ।
कुंभकरन भाभीषन भाई, इंद्रजीत सुत राई ॥७॥
रानी राइ मँदोदरि सोई, सब परिवार सुनाई ।
ये घट माहिँ घटा घट ही मैँ, रामायन्न बनाई ॥८॥

रावन ब्रह्म बसै त्रिकुटी मैं, लंक त्रिकूट बनाई ।
कुंभ तनै करता मनहीं को, कुंभकरन्न कहाई ॥९॥
भय भौ खानि भभीषन भाई, सो भौ माहिं भ्रमाई ।
इंद्रजीत जीतै मनहीं को, सो इंद्रजीत कहाई ॥१०॥
रावन ब्रह्म बसै मन दौरी, ता को मँदोदरी बनाई ।
मन की दौर को दूर बहावै, त्रिकुटी ब्रह्म कहाई ॥११॥
दस इंद्री रत दसरत कहिये, राम रमा मन जाई ।
सत की सीता असत सिया को, कुमति कौसिल्या बसाई ॥१२॥
मन थिर सुरति करै थिर कोई, सो मन मंथ्रा कहाई ।
वहँ की बात कहौ कौन सुनाई, कर्मन थिर केकाई ॥१३॥
ले छै रस मनही को भाई, लछमन बीर बड़ाई ।
गो मैं रूढ़ गरूढ़ गिनाई, भय ले भसुंड भुलाई ॥१४॥
भय रत भरम भरत है सोई, चाह त्रिगुन्न गिनाई ।
ता को नाम चतुरगुन कहिये, ये सब भेद बताई ॥१५॥
ये नौ द्वार काया के माहीं, सो हनुमान हँसाई ।
ये तो चिन्न भिन्न बिन देखे, जोग करै सो जनाई ॥१६॥
काया सोध कसै इंद्रिन को, त्रिकुटी ध्यान लगाई ।
स्वाँसा धाइ बंक खुल खोलै, सहस कँवल दल पाई ॥१७॥
जो कोइ जोग जुगति करि लाई, जेहि घट ब्रह्म दिखाई ।
जोगी का जोग इष्ट जगही को, ये गति योँ बिधि गाई ॥१८॥
दूजा जोग ज्ञान गति गाई, आतम तत्त लखाई ।
मुद्रा पाँच अवस्था चारी, ज्ञान तीनि गति गाई ॥१९॥
चाचरि भूचरि और अगोचरि, खेचरि खेह लगाई ।
उनमुनि उभै अकास के ठाइ, ज्ञान बिधी बतलाई ॥२०॥
रेचक पूरक कुंभक कहिये, येहि बिधि ज्ञान गिनाई ।
और अवस्था अरथ बताई, ज्ञानी किनहुँ न पाई ॥२१॥

जाग्रत सुपन सुषोपति कहिये, तुरियातीत कहाई।
तुरियातीत बसै वोहि पारा, जो या करै तिन पाई ॥२२॥
चारो बानी का भेद बताई, सास्तर संध लखाई।
परा पसंता मधिमा सोई, बैखरी बेर बताई ॥२३॥
ये सब जोग ज्ञान गति गाई, ज्ञानी यही बताई।
इनके परे भेद है न्यारा, सो कोइ संत जनाई ॥२४॥
और सुनौ जो अगाध अघाई, संतन की गति गाई।
जा को भेद बेद नहिं जानै, जोगी किनहुँ न पाई ॥२५॥
परमहंस बैरागी गुसाँईं, जगत की कौन चलाई।
ये कहुँ देखि कहूँ न कहाई, काहू प्रतीति न आई ॥२६॥
तुलसी तोड़ फोड़ असमाना, सूरति सार मिलाई।
सरकी चाँप चली धौ धाई, धनुवा धनुष चढ़ाई ॥२७॥
तीनि लोक तिल खेई पारा, चौथे जाइ समाई।
वो साहिब सतनाम अपारा, तिन मोहिं अंग लगाई ॥२८॥
या के पार परे गति न्यारी, सो कोइ संत जनाई।
जा को नाम अनाम अमाई, केहि बिधि कहैं बुझाई ॥२९॥
ता के रंग रूप नहिं रेखा, नाम अनाम कहाई।
तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिं जानै, ता घर जाइ समाई ॥३०॥
सब संतन के चरन सीस धरि, आदि अजर घर पाई।
तीनि लोक उपजै और बिनसै, चौथे के पार बसाई ॥३१॥

॥ सोरठा ॥

येहि बिधि रघुपति रंग, रावन संग प्रसंग भयो।
सुरति चढ़ो चित चंग, ज्योँ पतंग डोरी गह्यो ॥

॥ शब्द १ दादू साहिब ॥

दादू देखा अदीदा, सब कोइ कहत सुनीदा ॥टेक॥
हवा हिरस अंदर बस कीदा। तब यह दिल भया सीधा ॥१॥

अनहद नाद गगन चढ़ गरजा । तब रस पिया अमीं दा ॥२॥
सुखमनि सुन्न सुरति महलैं नभ । आया अजर अकीदा ॥३॥
अष्ट कँवल दल म दृग दरसन । पाया खुद्द खुदी दा ॥४॥
जैसे दूध दूध दधि माखन । त्रिन मथे भेद न घी दा ॥५॥
ऐसे तत्त मत्त सत साधन । तब टुक नसा पिय पीदा ॥६॥
नहिं यह जोग ज्ञान मुद्रा तत । यह गति और पदीदा ॥७॥
जो कोइ चीन्ह लीन्ह यह मारग । कारज हो गया जी दा ॥८॥
मुरसिद सत्त गगन गुरु लखिया । तन मन कीन्ह उसी दा ॥९॥
आसिक यार अधर लखि पाया । हो गया दीदम दीदा ॥१०॥

॥ शब्द २ दादू साहिब ॥

जानै अंतरजामी अचरज अकथ अनामी ॥ टेक ॥
नौ लख कँवल जुगल दल अंदर । द्वादस साहिब स्वामी ॥१॥
सूरत कड़क कँवल दल नभ पर । झटकि झटकि थिर थामी २
जैसे जहाज चलै सागर मैं । बरद्वान[1] बहै धोमी ॥३॥
तैसे यार प्यार लखि पाया । तब सूरति ठहरानी ॥४॥
सूरति सब्द सब्द मैं सूरति । अगम अगोचर धामी ॥५॥
का से कहैाँ पिया सुख सारा । ज्योँ तिरिया मुसकानी ॥६॥
नहिं ये जोग ज्ञान तुरिया तत । यह गति अकथ कहानी ॥७॥
चंद न सूर पवन नहिं पानी । क्योँकर करौं बखानी ॥८॥
सुन्न न गगन धरन नहिं तारा । अल्ला रब्ब न रामी ॥९॥
कहा कहैाँ कहिबे की नाहीं । जानत संत सुजानी ॥१०॥
बेद न भेद भेष नहिं जानत । कोऊ देत न हामी ॥११॥
दादू दृग दीदार हिये के । सूरति करति सलामी ॥१२॥
मैं पिया प्यार प्यार पिय अपने । मिलि रहे एक ठिकानी ॥१३॥
सूरति सार संध लखि पाई । ये गति बिरले जानी ॥१४॥

(१) बादबान अर्थात पाल ।

॥ शब्द नानक साहिब ॥

उघरा वह द्वारा वाह गुरू परिवारा ॥ टेक ॥
चढ़ गइ चंग पतंग संग ज्यौं । चंद चकोर निहारा ॥१॥
सूरति सोर जोर ज्यौं खोलत । कुंजी कुलफ किवारा ॥२॥
सूरति धाइ धसी ज्यौं धारा । पैठि निकसि गइ पारा ॥३॥
आठ अटा की अटारि मँझारा । देखा पुरुष नियारा ॥४॥
निराकार आकार न जोती । नहिं वहँ बेद बिचारा ॥५॥
औंकार करता नहिं कोई । नहिं वहँ काल पसारा ॥६॥
वे साहिब सब संत पुकारा । और पखंड पसारा ॥७॥
सतगुरु चीन्ह दीन यह मारग । नानक नजर निहारा ॥८॥

॥ शब्द दरिया साहिब ॥

दरिया दरबारा खुल गया अजर किवारा ॥ टेक ॥
चमकी बीज चली ज्यौं धारा । ज्यौं बदरी बिच तारा[१] ॥१॥
खुलि गया चंद बंद बदरी का । घोर मिटा अँधियारा ॥२॥
लै लगी जाइ लगन के लारा । चाँदनी चैाक निहारा ॥३॥
सूरति सैल करै नभ ऊपर । बंक नाल पट फारा ॥४॥
चढ़ि गइ चाँप चली ज्यौं धारा । ज्योँ मकरी मुख तारा ॥५॥
मैं मिलि जाइ पाय पिया प्यारा। ज्यौं सलिता जल धारा ॥६॥
देखा रूप अरूप अलेखा । लेखा वार न पारा ॥७॥
दरिया दिल दरवेस भये तब । उतरे भैाजल पारा ॥८॥

॥ शब्द मीरा बाई ॥

मीरा मन मानी सुरति सैल असमानी ॥ टेक ॥
जब जब सुरति लगै वा घर की । पल पल नैनन पानी ॥१॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "वीज" की जगह "बीच" और "बदरी" की जगह "बिजुली" है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

ज्यौं हिये पीर तीर सम सालत । कसक कसक कसकानी ॥२
रात दिवस मोहिं नींद न आवै । भावत अन्न न पानी ॥३॥
ऐसी पीर बिरह तन भीतर । जागत रैन बिहानी ॥४॥
ऐसा बैद मिलै कोइ भेदी । देस बिदेस पिछानी ॥५॥
ता से पीर कहौं तन केरी । फिरि नहिं भरमौं खानी ॥६
खोजत फिरौं भेद वा घर का । कोऊ न करत बखानी ॥७॥
रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु । दीन्ही सुरति सहिदानी ॥८
मैं मिलि जाइ पाइ पिया अपना । तब मोरी पीर बुझानी ॥९
मीरा खाक खलक सिर डारी । मैं अपना घर जानी ॥१०॥

॥ शब्द सूरदास जी ॥

मुरली धुनि गाजा, सूर सुरति सर साजा ॥टेक॥
निरखत कँवल नैन नभ ऊपर । सब्द अनाहद बाजा ॥१॥
सुनि धुनि मैल मुकर मन माँजा । पाया अमी रस झाँझा ॥२॥
सूरति संध सोध सत काजा । लखि लखि शब्द समाजा ॥३॥
घट घट कुंज पुंज जहँ छाजा । पिंड ब्रह्मंड बिराजा ॥४॥
फोड़ि अकास अललपच्छ भाजा । उलटि के आपु समाजा ॥५॥
ऐसे सुरति निरखि निःअच्छर । कोटि कृष्न तहँ लाजा ॥६॥
सूरदास सार लखि पाया । लखि लखि अलख अकाया ७
सतगुरु गगन गली घर पाया । सिंध मैं बुंद समाया ॥८॥

॥ शब्द नाभा जी ॥

नाभा नभ खेला, सुरति केल सर सैला ॥टेक॥
दरपन नैन सैन मन माँजा । लाजा अलख अकेला ॥१॥
पल पर दल दल ऊपर दामिनि । जोत मैं होत उजेला ॥२॥
अंडा पार सार लखि सूरति । सुन्नी सुन्न सुहेला ॥३॥
चढ़ि गई धाय जाय गढ़ ऊपर । सब्द सुरति भया मेला ॥४॥
ये सब खेल अपेल अमेला । सिंध नीर नद मेला ॥५॥

जल जल धार सार पद जैसे। नहीं गुरू नहिं चेला ॥६॥
नाभा नैन ऐन अंदर के। खुलि गये निरखि निहाला ॥७
संत उचिष्ट वार मन झेला। दुरलभ दीन दुहेला ॥८॥

॥ शब्द कबीर साहिब ॥

कबीर पुकारा, मैं तो जगत से न्यारा ॥टेक॥
आदि पुरुष अविगत अबिनासी। दीप लोक पद पारा ॥१॥
सूरति सहर हेर हिये द्वारा। सब्द न सिंध अकारा ॥२॥
काल न जाल स्वाल नहिं बानी। सो घर अधर हमारा ॥३॥
अंत न आदि साध कोइ जानै। सतगुरु पदम निहारा ॥४॥
नहिं तहँ आदि निरंजन जोती। सत्त पुरुष दरबारा ॥५॥
ब्रह्मा बिस्नु बेद बिधि नाहीं। नहीं आदि ओंकारा ॥६॥
ये सच यार प्यार लख पूरा। रूप न रेख जहूरा ॥७॥
कहै कबीर संत वोहि द्वारा। चकवा चौक हुकारा ॥८॥

॥ दोहा ॥

फूलदास तुलसी कहै, संत सब्द की रीत।
जो जो गये अगाध को, सोइ सोइ संत समीर ॥

॥ छंद ॥

तुलसी गति गाई सब्द सुनाई, पंथ अगम सुर्त सार भई ॥१॥
नानक और दादू दरिया साधू, मीरा सूर कबीर कही ॥२॥
नाभा नभ जानी भाखि बखानी, सुरति समानी पार गई ॥३॥
सब की बिधि न्यारी एक विचारी, सब संतन इक राह लई ॥४॥
सब चढ़े इक धारा पहुँचे पारा, लखी गगन गति गवन गई ५
कोइ करिहै संका महा मतिरंका, तुलसी डंका दीन्ह सही ॥६॥
ये सतमत भाखा देखा आँखा, साखि सब्द मैं गाइ कही ॥७॥
ये करी बखाना भेष न जाना, सब्द निसाना सुरति लई ॥८॥
कागद नहिं स्याही ग्रन्थन पाई, गाइ गाइ सब जनम गई ॥९॥

कोइ संत लखैहैं न्यारी कहिहैं, कथन बदन मैं नाहिं नहीं ॥१०
जो पोथी पढ़िहैं ज्ञान से अड़िहैं, नरक परैं पन भक्ति नहीं ॥११
बिन भक्ति न पैहैं जनम गमैहैं, संत सरन बिन राह नहीं ॥१२॥
जिन जिन यह मानी सत कर जानी, भक्ति संत सब भाखि कही १३
संतन को जाना सब्द पिछाना, सुरति समानी आदि लई १४
तुलसी तत सारा अगम निहारा, गुरू पिया पद पार लई ॥१५
महुँ पुनि गाई संत सुनाई, संत सब्द रस अगम कही १६
सब संत पुकारा महुँ पुनि लारा, सारा चारा पार गई ॥१७॥
चौथा पद गाई संत सुनाई, सुरति सैल अज आदि लई १८
संतन कर भेदा जानै न बेदा, खेद कर्म की दूर भई ॥१९॥
संतन की सरना दुख सुख हरना, बरना तुलसी तोल लई ॥२०
संतन मुख भाखी अगम की आँखी, उन से ता की तरक कही ॥२१
कोइ बूझै न संधा पड़ा जम फंदा, अंधा जग को बूझ नहीं ॥२२
संतन बिधि लाई सब्द सुनाई, भई बानी सब गाइ कही २३
सब्द जो गावै आँखि न आवै, बिन सतसंगति भर्म सही २४
छूटै सब टेका बूझै एका, ये संतन ने सार दई ॥२५॥
तुलसी गोहराई बूझ न पाई, बिन बूझे सब खानि मई २६
दीन निहारा संत पुकारा, सब्द बिचारा पार भई ॥२७

॥ सोरठा ॥

तुलसी सब्द बिचार, फूलदास ये बिधि सुनौ ।
सब्द करै निरधार, सार पार पद लखि परै ॥१॥
सब्द सब्द बहु भेद, ये अभेद गति भाखिया ।
तुलसी ता की धार, सब्द निरखि रस जिन पिया ॥२॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सब्द संत जो भाखा । निज निज संत जो गये अगाधा ॥
अपने अपने सब्द बनाये । अपनी अपनी साखि सुनाये ॥

जो जो गये अगम के द्वारा । पंथ अगम के उतरे पारा ॥
पार जाइ बिधि सगरी भाखी । जो जो देखा अपनी आँखी ॥
अपनी देखी कही बखानी । आदि अंत जो जिन ने जानी ॥
कही संत और कही कबीरा । सब मिलि कही एक बिधि हीरा ॥
पहुँचे पहुँचे एक ठिकाना । बिन पहुँचे का और बखाना ॥
जो जो संत जो भये सनाथा । पहुँचे पार सार रस माता ॥
बरनि न जाइ संत गति न्यारी । मेरी मति कछु नाहिं बिचारी ॥
संतन की गति कस कस गाऊँ । दादू की कहै साखि बताऊँ ॥
दादू सब्द संत गति गाई । सब्द संत उन भाखि सुनाई ॥
उनकी निसा साखि दरसाऊँ । तुलसी उन की अगम सुनाऊँ ॥

॥ शब्द (३) दादू साहिब ॥

दादू जानै न कोई, संतन की गति गोई ॥टेक॥
अविगत अंत अंत अंतर पट अगम अगाध अगोई ॥१॥
सुन्नी सुन्न सुन्न के पारा अगुन सगुन नहिं दोई ॥२॥
अंड न पिंड खंड ब्रह्मंडा सूरति सिंध समोई ॥३॥
निराकार आकार न जोती पूरन ब्रह्म न होई ॥४॥
इनके पार सार सोइ पैहै तन मन गति पति खोई ॥५॥
दादू दीन लीन चरनन चित मैं उनकी सरनोई ॥६॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, फूलदास सुन संत गति ।
दादू साखि बताइ, निसा बूझि कै यह कही ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सुनियौ चित लाई । यह दादू की साखि बताई ॥
जो संतन ने देखा माहीं । रूप रेख बिन रहै अकाई ॥
तन भीतर जो लखा अलेखा । रूप रेख ना रहै अदेखा ॥
जा के रूप रेख कछु नाहीं । सो वो देखा घट के माहीं ॥

पुनि दादू की साखि बताऊँ । सब्द एक जो गाइ सुनाऊँ ॥
जो जो संतन दिल मैं देखा । जिन जिन भाखा अगम अलेखा

॥ शब्द (४) दादू साहिब ॥

दादू दिल बिच देखा, रंग रूप नहिं रेखा ॥टेक॥
हद हद बेद कितेब बखानै । मैं कहा बेहद लेखा ॥१॥
मुल्ला सेख सैयद और पंडित । ये मुए अपनी टेका ॥२॥
राम रहीम करीम न केसो । हरि हजरत नहिं एका ॥३॥
वो साहिब सबहिन से न्यारा । कोइ कोइ संतन पेखा ॥४॥
दादू दीन लीन हुइ पाया । क्या कहूँ अगम अलेखा ॥५
जिन जिन जाना तिन पहिचाना । मिटि गया मन का धोखा ॥६

॥ शब्द (५) दादू साहिब ॥

दादू देखा मैं प्यारा, अगम जो पंथ निहारा ॥टेक॥
अष्ट कँवल दल सुरति सब्द मैं । रूप रेख से न्यारा ॥ १ ॥
पिंड ब्रह्मंड और बेद कितेबै । पाँच तत्त के पारा ॥ २ ॥
सत्त लोक जहँ पुरुष बिदेही । वह साहिब करतारा ॥ ३ ॥
आदि जोत और काल निरंजन । इन का वहँ न पसारा ॥ ४ ॥
राम रहीम रब्ब नहिं आतम । मुहम्मद नहिं औतारा ॥ ५ ॥
सब संतन के चरन सीस धर । चीन्हा सार असारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द (६) दादू साहिब ॥

दादू दरस दिवाना, आरसी यार दिखाना ॥ टेक ॥
आधी रात गगन मध चंदा । तारा खिलक खिलाना ॥ १ ॥
चटकी सुरति चढ़ी ज्यों चकरी । फूटि गया असमाना ॥ २ ॥
लै लगी जाइ महल मध ऊपर । सूरति निरत ठिकाना ॥ ३ ॥
मिल गया यार प्यार बहु कीन्हा । खुलि गया अरस निसाना ॥ ४ ॥
आदि अंत देखा मध म्याना । क्योंकर करूँ बखाना ॥ ५ ॥

गुप्त बात गुप्ते भई गाफिल । अंदर माहिँ छिपाना ॥ ६ ॥
मैँ कछु कीन लीन सोइ जानत । और कहूँ नहिँ चीन्हा ॥ ७ ॥
दादू पीर मिटी परलै की । जनम मरन नहिँ माना ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

जो देखा घट माहिँ, जिन जिन संतन सब कही ।
रूप रेख नहिँ ताहि, सो अदृष्ट अंदर लखा ॥

॥ चैापाई ॥

सब संतन ने पाया लेखा । जोई अगम पंथ जिन देखा ॥
जोइ जोइ संतन भाखि सुनाई । सो सब देखा अपने माई ॥
बिन देखे नहिँ संत पुकारा । देखे बिन कहै झूठ लबारा ॥
फूलदास बूझौ मन माइँ । संत कही जो कबीर गुसाँईँ ॥
संत कबीर से अंतर नाहीँ । भिन्न कहै सो नरकै जाई ॥
जो जो संत गये निज धामा । सो कबीर ने कहे मुकामा ॥
चढ़े संत जो गगन ठिकाना । उन को गति काहू नहिँ जाना ॥
संत मते के दुइ कर जानै । ता तेँ परै नरक की खानै ॥
संत की निंदा करै बनाई । आदि अंत भै भटका खाई ॥
संतन की गति भेष न जाना । संत बिना कहुँ नाहिँ ठिकाना ॥
भेष भुलाना भै के माहीँ । रहै काल बस जम की छाहीँ ॥
मैँ कछु कही न निंदा भाई । जस जस देखा तस तस गाई ॥
मुख अपने निंदा नहिँ गाऊँ । और संत की साखि सुनाऊँ ॥
औरैा और और पुनि गाऊँ । तिन तिन की मैँ साखि बताऊँ ॥
तुलसी संत भेष कर चेरा । ये भौ सिंध अनीत अनेरा ॥
तुलसी संत चरन की धूरी । दादू सब्द बताऊँ मूरी ॥
उन की साखी सब्द बताऊँ । पुनि दादू की साखि सुनाऊँ ॥
भेष भूलि सब जग के माईँ । ता कारन ये सब्द सुनाई ॥
भेष भुलान खान सुख कारन । ता तेँ दादू सब्द पुकारन ॥

॥ शब्द (७) दादू साहिब ॥

दादू भेष भुलाना, जम सँग कीन्ह पयाना ॥टेक॥
षट दरसन पंडित और ज्ञानी । पढ़ि पढ़ि मुए पुराना ॥१॥
परमहंस जोगी सन्यासी । बेद करत परमाना ॥२॥
आतम ब्रह्म कहैं अपने को । सब मैं हमीं समाना ॥३॥
ता से भौजल पार न पावैं । अहँग ब्रह्म मन माना ॥४॥
मन बिहंग की खबरि न जाने । तन निहंग है बाना ॥५॥
जग जज्ञास मोह मद माते । ता से बहु लपटाना ॥६॥
वे साहिब समरथ हैं दाता । तिन को नहिं पहिचाना ॥७॥
वा को भेद बेद नहिं पायौ । अगम पंथ नहिं जाना ॥८॥

॥ शब्द (८) दादू साहिब ॥

दादू दो दिन रहिहौ, जम दुख बंधन सहिहौ ॥टेक॥
तू मत जान ज्ञान आतम कस । इन बस धोका खैहौ ॥१॥
ये संसार भाव भय भावत । खोजत फिरि फिरि बैहौ ॥२॥
भेप भुलान खान सुख कारन । सार न पुनि फिरि पैहौ ॥३॥
ये जग खोट मोट कौं पूजत । सूझत स्वारथ दैहौ ॥४॥
ये भौ-सिंध अथाह अपारा । बूझि बूझि पग दैहौ ॥५॥
जम की जाल बड़ी अति दारुन । आपै आपु बँधैहौ ।६॥
दादू कहत पुकारि जगत जग । भेप सबै सुनि लैहौ ॥७॥
भौजल पार जबै होइ जैहौ । सूरति सब्द समैहौ ॥८॥

॥ शब्द (९) दादू साहिब ॥

दादू दीन अवाजा, जग जिव भेष न लाजा ।टेक॥
सिव सनकादि सिंगी पारासर । इन कौ सस्यौ न काजा ॥१॥
ये तन तोर काल कर खाजा । छिन छिन सिर पर गाजा ॥२
सुकदेव ब्यास जनक नारद मुनि । घट घट उन पर छाजा ॥३॥

तू केहि लेखे माहिँ न बचिहै । पचि पचि मरत अकाजा ॥४॥
बाघ उपाव करै गउ कारन । जम दल यहि बिधि साजा ॥५
पल मैँ छुटि जैहै सुख सम्पति । ज्योँ माखी मधु राजा ॥६॥
राति दिवस धावै धन कारन । मरन काल कित आ जा ॥७॥
जिन कोइ सुरति सत्त लखि चीन्हा। जनम मरन भै भाजा ॥८॥
दादू भेष भेद जब छूटै । सूरति सब्द समा जा ॥९॥
जब भया सिंध बुंद का मेला । वोहि साहिब को लाजा ॥१०

॥ शब्द (१०) दादू साहिब ॥

दादू कहत पुकारी, कोइ मानै नाहिँ हमारी ॥टेक॥
पंडित काजी बेद कितेबा । पढ़ि पढ़ि मुए लबारी ॥१॥
ये तीरथ वे हज को जाते । बूड़े भौजल धारी ॥२॥
हिंदू तुरक दीन दोउ भूले । करम धरम पचि हारी ॥३॥
नूर जहूर खुदा हम पाया । उतरे भौजल पारी ॥४॥

॥ शब्द (११) दादू साहिब ॥

दादू दीन अधीना, मैँ मति काहू न चीन्हा ॥टेक॥
देह भाव जानत जग सारा । मैँ तिन से तस कीन्हा ॥१॥
मैँ अति नीच जाति कर बेहना । का कहुँ बूझि न सैना ॥२॥
जो कछु कही सही नहिँ लीन्हा । पुनि पुनि उत्तर दीन्हा ॥३॥
मैँ कहा सार पार परमारथ । स्वारथ जग मति हीना ॥४॥
जो कोइ कहन गहन लखि लीन्हा। कही संतन मत भीना ॥५॥
आठ अरब बानी पद पूरन । सूर न सार यकीना ॥६॥
दादू दूरि गाँव बसि पारा । धुनि कपास रस पीना ॥७॥
सतगुरु संध मारग अति झीना । ज्योँ जल तैरत मीना ॥८॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी भेष भुलान, जानि मानि भै मैँ लसा ।
फंसा रस सार न जान, जानि कानि बूझी नहीं ॥

॥ चरचरी ॥

तुलसी सब तोल देख, भेष भाव जाई ॥ टेक ॥
तुलसी रस खान पान, जान मान माईं ।
ऐसा मन भूल भेष, भिन्न चिन्ह न पाई ॥ १ ॥
संतन से बैर हेर, साथ चहत नाईं ।
तुलसी सब भेष भूल, अपने हँग[1] माईं ॥ २ ॥
देखा सब झार झार, पार कोउ न पाई ।
लाई लै लार लार, जग असार साईं ॥ ३ ॥
भूलो हक[2] सक्क नाहिं, तुलसी कछु गाई ।
पैहै सुख संत साथ, और कहूँ नाहीं ॥ ४ ॥
संत साँच और काँच, पाँच भूत माईं ।
तुलसी सब हेर देख, भेष अनेक ठाईं ॥ ५ ॥
देखा सब जोइ जोइ, चौज[3] कहुँ न पाई ।
तुलसी मन टूट फूट, छूट छाँड़ ताही ॥ ६ ॥
बिना संत सत्त तत्त, हाथ नहीं आई ।
देखा सब जोइ दोइ, द्वार खानि माईं ॥ ७ ॥
तुलसी निरखा निहार, पार सार नाहीं ।
चित्त कहन बर्त बूझ, कर्म काल जाई ॥ ८ ॥
मैं तो कही पेखि नैन, देख भेद जाई ।
बूझा नहिं सुपन सैन, ऐन आद नाहीं ॥ ९ ॥
ता से मन चेत बूझ, देखि दृष्टि जाई ।
तुलसी तन तोड़ फोड़, मोड़ पोढ़ पाई ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

भेष भुलान सबै जग माईं । आदि अंत की खबरि न पाई ॥
जो कोइ भेद कहै समझाई । भेष कान पर एक न लाई ॥

(१) हँगता, अहंकार । (२) सत्त, सत्तपुरुष । (३) आनन्द, बिलास ।

कपरा रँगे भेष भये साधू । बूझै न बस्तु जो आदि अनादू ॥
दया जानि कोइ भेद बतावै । तौ वह नगर रहन नहिं पावै ॥
गृही भेष सब मारि निकारै । कहै हमरा रुजगार बिगारै ॥
परमारथ नहिं बूझि गँवारा । पढ़ि पढ़ि बूड़े भव जल धारा ॥
या ते संत मता नहिं पावै । ता ते जिव भव मैं रहि जावै ॥
कर्म बंध जिव भरमै खाना । बिना संत नहिं लगै ठिकाना ॥
फूलदास रेवती सुन दासा । संत मिलै तौ होइ सुबासा ॥
और जो सुनौ जगत सब बोरा । भेष टेक मैं बूड़ न थोड़ा ॥
संत मता कहुँ देख न आवै । भेष मता सब जगत बुड़ावै ॥
ऐसी सोल पोल कहा कीजै । उपजै बिनसै नित नित छीजै ॥
ऐसी कहा कहा की कहिये । ता से गुप्त मैान होइ रहिये ॥
को जग अजगुत सिर पर लेही । परी भूल सर्ब मत येही ॥

हाल मुसलमान साधू अली मियाँ का

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

एक समय इक अचरज भइया । इक फकीर मक्के से अइया ॥
नाम अली तेहि जाति फकीरा । राति भई रहे हमरे तीरा ॥
अल्ला कुह कुह करै निमाजा । हमरे माहिं देखि मन लाजा ॥
फारिग भये तब खाना खाया । ले आसन कुटिया मैं आया ॥
हम से खुदा खुदा कर बोले । खुदा नबी बिन कछू न तोले ॥
पूछा अल्ला नबी केहि ठावाँ । उन पुनि ले असमान बतावा ॥
हम पुनि कहा तुम्हारे पासा । मुरसिद मिलै तो होय खुलासा ॥
हमरी बानी कान न लावा । तब दादू का सब्द सुनावा ॥
अली मियाँ सुन हक्क इमाना । मुरसिद दादू किया बखाना ॥
अंदर अली भली कर मानै । अल्ला अलिफ जुबान बखानै ॥

॥ अली मियाँ ॥

॥ चौपाई ॥

भूल रसूल रमक दरसावौ। पैगम्बर परमान बतावौ ॥
पैगम्बर कहि भाखि सुनावौ। मसजिद हक मक्का को गावौ ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

किननी कही इमान न लावा। गजल एक उन भाखि सुनावा ॥
खुदा खुदाय सब खलक बखानै। खुदा बिना कहो एक न मानै ॥

॥ ग़ज़ल अली मियाँ ॥

बंदा बेहोश याद हर दम लावै।
तेरे बिन खुदी खूब कैसे भावै ॥१॥
कीन्हे तैं आफ़ताब ख़लक़ आफ़रीं।
कलमा बिन पढ़न कहै कुफ़र काफ़रीं ॥२॥
तुलसी ये अली ग़ज़ल गाइ सुनाई।
दादू दुरवेश देश हमहूँ गाई ॥३॥

॥ ग़ज़ल तुलसी साहिब ॥

दिल का दुरवेश एक दादू फ़क़ीरा।
भाखि कही साखि शब्द मुरशिद पीरा ॥१॥
सुनिये म्याँ अली अलिफ़ बानी उनकी।
रोज़ा निमाज़ कही अंदर धुन की ॥२॥
कलमा पढ़ खुदा खोज अपने माहँ।
देखो तन बदन बीच भिस्त बनाई ॥३॥
तुलसी की कहन मियाँ दिल मैं लावो।
बदन बीच खोज यार अंदर पावो ॥४॥

॥ सोरठा ॥

अली अजब दीदार, पार परख दादू कही।
दिल दुरबीन निहार, सो बिचार कह्यो सब्द मैं ॥

॥ दोहा ॥

फहम फकीरी अरस की, मुकर देखि दुरबीन ।
चीन्ह चलै उस राह को, रूह रहम लैालीन ॥

॥ सोरठा ॥

दादू दूर दराब,[1] आबताब[1] पट अबर नहिँ ।
अल्ला अलिफ मकान, अबर फाड़ि पट राह लख ॥ १ ॥
दिल बिच अलिफ दीदार, स्याम सहर पर रूह लखै ।
चखै अरस रस सार, ये बिचार दादू कही ॥ २ ॥

॥ चैापाई ॥

दरिया भी दादू बतलाई । अली मियाँ सुन साखि सुनाई ॥
जो सराब दादू भरि पीना । सो सुनि कर कै करै यकीना ॥
आब अलिफ जिन की चलि आई । सो फकीर दुरबेस कहाई ॥
उन कुरान का मझब सुनावा । भिस्त खोज खुद खुदा लखावा ॥
अब दादू का सब्द सुनाऊँ । परस पिया रस लखन लखाऊँ ॥

॥ शब्द (१२) दादू साहिब ॥

दादू दूरि दराबी, पिय रस पियत सराबी ॥ टेक ॥
पियत पियाला मन मतवाला । भोर भई उँजियारी ॥ १ ॥
खूबी खलक खुदी खोइ ख़्वाबी । अंदर खिलि गइ स्वाबी ॥ २ ॥
मक्का भिस्त हज्ज को देखा । अबरा आब और ताबी ॥ ३ ॥
अल्ला आदि नबी लख छूटा । रोजा निमाज अजाबी ॥ ४ ॥
मलकुत नासुत जबरुत जा के । लाहुत हाहुत पागी ॥ ५ ॥
लै लगी लामुकाम रब्बि ही से । जगत जहान खराबी ॥ ६ ॥
दादू दृग दीदार हिये के । चूँ बेचूँ बेज्वाबी ॥ ७ ॥
चैाथा तबक रियाजत बाजा । आया अरस अराबी ॥ ८ ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "दराव" की जगह "निशान" श्रौर "श्राबताब" की जगह "श्राफ़ताब" है लेकिन श्रागे की चैापाई की पहिली श्रौर तीसरी कड़ी श्रौर दादू के शब्द (१२) की टेक श्रौर तीसरी कड़ी के देखने से हमारा पाठ शुद्ध समझ पड़ता है ।

॥ सोरठा ॥

अली मियाँ सुन साखि, दिलै फहम बेदिल हुआ।
मुए रूह से बाद, साथ स्वाल काफर कहा॥

॥ चौपाई ॥

अली मियाँ सुन हमरी बानी। गुन गुन मन मैं बहुत रिसानी॥
कही कुरान अल्ला मुख बानी। हिंदू को काफर कर जानी॥
और रसूल पर करौ यकीना। उन फकीर ताजीमी कीन्हा॥
स्वाल भाखि पुनि आसन लीन्हा। उठकर चलन फिकर मन कीन्हा॥
हाथ पकरि हम गुसा उतारा। आसन जिमीं डारि बैठारा॥
हम पर मेहर करौ तुम साँईं। अपने दिल मैं बूझौ भाई॥
तुम खुदाइ का खोज न पावा। मट्टी महजित को सिर नावा॥
जो महजित तुम आप बनाई। ता महजित मैं खोज लगाई॥
कहौ खुदा तुम सब के माईं। ऐसे कुरान कितेब सुनाई॥
अपने मुख से सब मैं भाखौ। मट्टी महजित को फिर ताकौ॥
समझौ अपने दिल के माहीं। खुदा खोज खोजौ दिल माहीं॥
पाँच यार मुहम्मद जो भाखा। आग खाक जल पौन अकासा॥
ता को खोजो अपने माहीं। बिन मुरसिद कोइ खोज न पाई॥
सब मैं खुदा कुरान बतावै। करौ हलाल सो दरद न आवै॥
अपना कुफर चीन्ह नहिं भाई। हिंदू को काफर बतलाई॥
सुन कर अली मियाँ कछु बूझा। ये तो ज्वाब खूब कर सूझा॥
खुसी भये और गुसा उतारा। है खुदाइ सब मैं इक प्यारा॥
फिर हम से वो पूछन लागा। कहौ खुदाइ सब माहिं बिराजा
अली कहै कछु देख न आवै। खोजै खुदा खोज नहिं पावै॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कह म्याँ अली सुन, खुदा भिस्त के द्वार।
दो अनार लटकत रहैं, कुंजी मुरसिद हाथ॥१॥

अली मियाँ अचरज भया, कही बात सब साँच।
तुलसी भेद बताइये, दीन होय मैं जाच[१] ॥२॥

॥ चौपाई ॥

कहि तुलसी हम भेद बतावा। भिस्त के द्वार अनार लखावा ॥
येहि अनार पर सुरति लगावौ। खुलै द्वार भिस्त तब पावौ ॥
तब तुलसी के कदम उन लीन्हा। अली मियाँ आधोनी कीन्हा ॥
हुआ अधीन भेद बतलाई। तब उठि मियाँ राह को जाई ॥
फूलदास बूझो तुम मूला। हिंदू तुरक भेद दोउ भूला ॥
भूला भेष काल भरमाया। काल अपरबल सब को खाया ॥
संत मते की राह न जानै। काल चाल बिधि कालहि मानै
जम फाँसी म भेष भुलाना। केहि बिधि पावै जीव ठिकाना
ये जग माहिं फाँस जम डारा। संत बिना नहिं होइ उबारा ॥
बारा[२] मते काल ने कीन्हा। आदि अंत फाँसी जिव दीन्हा॥
सतजुग द्वापर त्रेता माईं। और कलजुग की कहा बताई ॥
अनेक जुगन जुग फाँस फँसानी। भेद न चीन्हा पड़े पुनि खानी ॥
जब निरगुन बैराट पसारा। सत्त नाम से माँगि लबारा ॥
बारा मते मोहिं को दीजे। मोरा मता साध अस कीजे ॥
बारा मत की राह चलाऊँ। जा से जीव जगत उरझाऊँ ॥
ऐसे निरगुन माँगा भाई। काल जाल मति जिनहिं चलाई॥
बारा माहिं भेष सब भूला। सो जग जाल सहै जम सूला ॥
निरगुन काल जग कीन्हे भेषा। चारो जुग जग बाँधो टेका ॥
भेष किया जग काल कराला। संत बिना नहिं छूटै जाला ॥
काल भेप जग भये अनेका। अपनी अपनी बाँधो टेका ॥
ता से तुलसी पंथ न कीन्हा। जगत भेष भया काल अधीना ॥
जो जो कहे जीव निरबारा। सो सो फाँसी सब ने डारा ॥

(१) माँगता हूँ, प्रार्थना करता हूँ। (२) बारह।

बिन आँखी सूझा नहिं भाई। बिना संत कहै कौन लखाई ॥
चीन्है संत तो होइ उबारा। नहिं तो बूड़ै भौजल धारा ॥
जो कोइ बारा[1] मत को चीन्हा। काल रहै पुनि तासु अधीना ॥
ता पर काल जाल नहिं डारा। जम होइ दीन ताहि की लारा ॥
संत मिलैं पुनि मारग पावै। ऐसे जीव लोक[2] को आवै ॥
ये जग भेष काल बस होई। इन की बात न मानौ कोई ॥
जो कोइ काल भेष पहिचानै। गति मति भेद संत कर जानै ॥
दस औतार निरंजन जाना। ब्रह्मा बिष्नु काल उत्पाना ॥
बेद कितेब अस फंद पसारा। ये जग काल जाल मत डारा ॥
या को जब चीन्है कोइ प्रानी। मत बारा की राह पिछानी ॥
पुनि बारा से भये अनेका। कहँ लग कहौं पार नहिं जेका ॥

॥ फूलदास ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिनती करै, स्वामी कहौ बुझाइ।
ये बिधि मो को लखि परी, पुनि कबीर कहि गाइ ॥

॥ सोरठा ॥

अनुराग सागर माहिं, कही कबीर धर्मदास सौं।
हम पुनि देखा ताहि, स्वामी यह बिधि सत्त है ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा

तुलसी पूछै बात, फूलदास कहिये बिधी।
कस कबीर बिख्यात, काल मते बारा कहे ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास यह भाखौ साखी। बारा मते काल कस भाखी ॥
कस कबीर ग्रंथन मैं गावा। सो बारा को बिधी बतावा ॥

(१) बारह। (२) सत्तलोक।

तुम ग्रन्थन मेँ देखा आँखी । सो सब भाखि कहौ बिधि ता की॥
पहिले तुम भिनि भिनि बतलाई। फिरि तुम को हम बरनि सुनाई॥
बारा भेद नाम गुन कहिये । भिन्न भिन्न पुनि बरनि सुनैये॥
कस कबीर ने भाखि बताई । सो बिधि तुम हम को समझाई ॥

॥ उत्तर फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास अस भाखा लेखा । कही कबीर सो कहूँ बिबेका ॥
तुम ने बचन जो भाखि सुनावा । सो कबीर मुख अपने गावा ॥
तुम भाखा सत नाम से पावा । बारा मते काल लै आवा ॥
या मेँ वा मेँ अंतर नाहीं । ता की बिधि मैँ बरनि सुनाईं ॥
ये कबीर मुख अपने कीन्हा । काल निरंजन को मत दीन्हा॥
उन अपना खुद ज्ञानै भाखा । तुम ने भक्ति भाव कर राखा ॥
दोनोँ बिधी एक सम जानी । या मेँ कछू भेद नहिँ मानी ॥
बारा मते काल को दीन्हा । मन अपने परमान जो कीन्हा॥
ये तो स्वामी सत्त जनाई । कहि कबीर ग्रन्थन मेँ गाई ॥
भाखा सोई सुनाऊँ लेखा । जोइ कबीर ग्रन्थन मेँ देखा॥
ये कबीर मुख अपने भाखी । बारा मते काल बिधि ताकी ॥
धरमराइ नीरंजन होई । बारा मते दीन्ह हम सोई ॥
अस कबीर ग्रन्थन मेँ गाई । देखी जस बिधि ताहि सुनाई ॥
प्रथम दूत मृतअंध कहावा । दास नरायन नाम धरावा ॥
काल अंस ये नाम नरायन । जीव फाँस फंदा जिन लायन॥
तिरमिर दूजा नाम बखाना । जाति अहेरी कुफर कहाना॥
दूत तीसरा भाखि सुनाऊँ । अंधअचेत ताहि कर नाऊँ ॥
सुरति गुपाल नाम तेहि पावा । कह कबीर ऐसी बिधि गावा॥
चौथा दूत भंगमन होई । झंगा मूल पंथ कहै सोई ॥
पँचवाँ दूत ज्ञानभँग नामा । परचा करन मंत्र को थामा ॥

मकरंद षष्टम दूत कहावा । नाम कमाली तासु धरावा ॥
सप्तम दूत आहि चितभंगा । नाना रूप करै मन रंगा ॥
अष्टम दूत का नाम बताऊँ । अकलभंग तासु कर नाऊँ ॥
नवाँ दूत कर नाम बताऊँ । दूत बिसंभर बरनि सुनाऊँ ॥
अब मैं दसवाँ दूत बताई । नकटा दूत ताहि कर नाँई ॥
एकादस दूत नाम बतलाऊँ । दुर्गदानी तेहि बरनि सुनाऊँ ॥
द्वादस दूत नाम बतलाऊँ । हंस मुनी तेहि बरनि सुनाऊँ ॥
ऐसे बारा दूत बखाना । अनुराग सागर करत बखाना ॥
साहिब कबीर ऐसी बिधि गावा । सो मैं तुम को भाखि सुनावा ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी बिधी सुनाई । कस कस मता काल बिधि पाई ॥
या की बिधि मोहिं बरनि सुनैये । सब बिधि नाम दूत कर कहिये

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सुनियौ चित लाई । अब या कौ हम बरनि सुनाई ॥
निरगुन काल निरंजन जानो । सोई याहि मनै पहिचानौ ॥
सत्त सब्द तन माहिं रहाई । वा को छाँड़ि खानि को जाई ॥
बारा मत नहिं कहिया भाई । वाही राह की मती बुझाई ॥
मन ये राह की मति जो राखा । या को बारा की मति भाखा ॥
मन ये द्वैत भाव जग राखा । दूत नाम येही बिधि भाखा ॥
एक नाम बिधि भूला भाई । ता से मन को दूत बताई ॥
ये मन की बिधि कहूँ बखाना । फूलदास सुनियौ दै काना ॥
बारा मत मनही के जाना । द्वैत न छाँड़ि एक नहिं माना ॥
यों बारा मत मन के भइया । बारा मत मन नाम कहइया ॥
द्वैत राह मन छाँड़ न भाई । तहँ लगि यह मन काल कहाई ॥

द्वैत काल मन यह बिधि गाया। मन मत द्वैत जगत सब आया॥
मन मत द्वैत वो राह न पाया। ये कबीर ने यों बिधि गाया॥
या मन की बिधि बिधि समझाई। बारा दूत मन काल कहाई॥
ये मत बिधि सब कही बखाना। बारा नाम मनहिं के जाना॥
नरायनदास नर मन है भाई। येहि बिधि दास कबीर बनाई॥
मन मृतअंध दूत बतलाई। मन नित मृत्त करै जग जाई॥
ये मन तिमर जगत को लावा। या ते तिमर नाम मन पावा॥
मन जगअंध अचेत करावा। अंधअचेत दूत ठहरावा॥
सुरति गुपाल नाम तेहि कहिया। सूरति मन गो पालन करिया॥
मन मत भंग करै जग केरी। मन मत भंग नाम अस फेरी॥
मन मत ज्ञान करै चित भंगा। मन मत दूत नाम रस रंगा॥
मन पतंग माया मन राखा। मन मकरंद दूत यों भाखा॥
मन अरु चित भँग करै अनेका। चित भंग दूत नाम यों लेखा॥
मन अकुल को भंग लगावा। अकलभंग नाम अस गावा॥
बिषै अमर मन करिकै राखै। सुरति नाम को नेक न ताकै॥
ताकर नाम बिसंभर दूता। बिष रस जीव किया मजबूता॥
मन कहँ नकटा दूत कहाई। ज्ञान सुनै फिरि बिष रस खाई॥
या को लज्जा नेक न आवै। नकटा होइ पीछे पुनि धावै॥
नकटा नाम दूत येहि जानौ। या की साखि न कोऊ मानौ॥
मन दुर्ग[1] गुन के दान चुकावै। गुन तीनों से जग बौरावै॥
दुर्ग दानी येहि मन को जाना। अस दुर्ग दानी नाम कहाना॥
या की बात सत्त कर मानी। येहि बिधि मन को दूत बखानी॥
यह मन निरमल सुरति कराई। मन होइ हंस सुरति घर जाई
हंस मुनी होइ दूत उड़ाई। सुरति सब्द घर अपने जाई॥
सत्य नाम पद पहुँचै भाई। चौथा पद रस पियै अघाई॥

(१) देखो नोट पृष्ठ १४, भाग १।

मुनि होइ हंस ताहि कर नामा। बारा मत मन के पहिचाना ॥
यह कबीर ने भाखा पेखा। औरौ संत यही बिधि लेखा ॥
ये सब मन के मते बताये। मन से पंथ भेप जग आये ॥
मन बाहर कोइ पंथ न होई। ये सब मते काल कर जोई ॥
मन से भिन्न सुरति को पावै। सुरति जाइ पद नाम समावै ॥
सो बारा से न्यारा होई। सो जिव अमर पंथ को जोई ॥
मन से राह सुरति नहिं जाने। सो सब पंथ काल मत साने ॥
यह महंत मन अंधा धुंधा। येहि माँ काल रखावा फंदा ॥
दास कबीर येही पुनि भाखा। हमहूँ दीन्ह येही बिधि साखा ॥
वह कबीर यह तुलसी लेखा। मन मानै तो करो बिबेका ॥
तुलसी संत चरन की आसा। संत सरन मैं सुरति निवासा ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास मत भाखिया, मते काल के नास ।
बारा मत मन के बसे, जगत भेप के पास ॥

॥ छंद ॥

बारा मत गाई मनहिं लखाई। बूझ बुझाई राह कही ॥१॥
तुम अंते गावौ भेद न पावौ। मनहिं काल घट घाट मई ॥२॥
या को नहिं बूझा अंत न सूझा। ता से तुम को भूल रही ॥३॥
जिन मन को जाना सुर्त पिछाना। निरत तोल असमान गही ॥४॥
संतन निज जानी करी बखानी। महुं पुनि उन सम गाइ कही ॥
मन की बिधि जानी सुरति पिछानी। बिन सूरति यह राह नहीं ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, फूलदास सूरति लखौ ।
ये चौका येहि पान, सुरति जानि पद रस चखौ ॥

॥ चौपाई ॥

सुरति चीन्ह रस जानौ भाई। तब वा घर का मारग पाई ॥
कमठ ध्यान कछुवा मत ताकौ। ऐसी सुरति नाम से राखौ ॥

ज्यों चकोर चंदा को ताकै। येहि बिधि सुरति नाम रस चाखै
सूरज-मुख पषान इक होई। रबि सनमुख तेहि पावक जोई॥
पथरी सूरज सन्मुख लावै। तत खन ता मैं अगिनि समावै॥
चंद्र मुखी इक पथरी भाई। सन्मुख चंदा जाय दिखाई॥
तत खन नीर चुवै तेहि माईं। देखो पथरी हाल मँगाई॥
ऐसे दृढ़ करि सुरति लगावै। चूवै अमी नाम रस पावै॥
चौका पान झूठ है भाई। सुरति नाम पान से पाई॥
भाखा संत सरन को चीन्हा। सुरति पान लखि होइ यकीना॥
नील सिषर खिरकी के पारा। वहँ से ताकै अगम दुवारा॥
अलख पलक से न्यारा होई। खलक राह सब छूटै सोई॥
निस दिन सुरति गगन मैं राखै। झँझरी सुरति नजर से ताकै॥
येहि बिधि निस दिन सुरति लगाई। मन मैं इष्ट भरम नहिं लाई
ऐसे सुरति द्वार पर खेला। स्याम सपेदी न्यारी सैला॥
स्याम लोक पुनि सेतहि दीपा। संख चक्र मध पुनि एक सीपा॥
वा के परे बंकगढ़ न्यारा। सुखमनि सैल मानसर पारा॥
वा के परे त्रिबेनी घाटी। ता से निकरि अगमपुर बाटी॥
करि असनान अगम को धावै। तब साँचे सतगुरु को पावै॥
चारि कँवल द्वै भीतर माईं। ता मैं पैठि द्वादस मैं जाई॥
ता के परे पुरुष इक देखा। रूप रेख बिन अगम अलेखा॥
अठमेवा पूरुष को जाना। अठवाँ लोक तेहिं संत बखाना॥
कोउ कोउ आठ अटारी भाखो। कोउ कोउ आठ महल कहै जाको
संत बिना कोउ भेद न पावै। ताते तुलसी येहि बिधि गावै॥
यह बिधि भेष पंथ मैं नाहीं। संत मिलै तो पावै राही॥
सूरति चढ़ै गगन को धावै। तौ अठमेवा पुरुष को पावै॥
पाँच बासना मन से जावै। तब मन राह पुरुष की पावै॥
नरियर ऐनक मुकर लगाई। मन मोड़ै पुनि बास उड़ाई॥

तीनि गुनन का तिनुका तोड़ै । इंद्री गौ घृत रित को मोड़ै ॥
कदली छेद बास चढ़ पारा । सेत के परे निरखि वहि द्वारा ॥
सो पारी जाइ पवन सो पावै । सेत सुपारी पुनि दरसावै ॥
यहि विधि चौका जो कोइ जानै। सोई कबीर पंथ हम मानै ॥
और अनेक बिधि कस कस कहिये। स्याना होइ समझि लखि लैये ॥
थोड़े मैं लखि लेइ सयाना । बहुत बहुत क्या करूँ बखाना ॥
सूच्छम बूझ भेद हम भाखा । थोड़े माहिं भेद कह्यो ता का ॥
या से भेद संत कर न्यारा । कोइ बूझै संतन का प्यारा ॥
जिन पर संत दयाली कीन्हा । अगम बूझ कोइ बिरले लीन्हा॥
कहा कहा कहूँ अगम की बाता । तुलसी बूझ संत सँग साथा ॥
ता से मौन मौन होइ रहिये । जस जग देखि ताहि विधि कहिये

भेद राम रामायन के रचने का

॥ चौपाई ॥

भेष अबूझ जगत नहिं जानै । कस कस कहूँ कोऊ नहिं मानै ॥
जग अपनी बिधि मैं सब माना । ता से उन से करी बखाना ॥
राम रमायन माहीं गाई । सात कांड कहि अस विधि भाई
रावन राम किया सम्बादा । औरौ कही बनाइ जियादा ॥
जग सब अंध फंद गति बूड़ा । राम राम गति जानि अगूड़ा ॥
उन अँधरन मिलि कै हम गायौ। यहि विधि राम चरित्र सुनायौ
सब जग कहै राम रस भाखी । राम बिना कछु इष्ट न राखी ॥
तुलसी तौ भये राम उपासी । येहि बिधि सकल जगत करै हाँसी ॥
सब अंधन मैं महुँ पुनि चोटा[१] । कस कस कहूँ जगत सब खोटा॥
राम काल जग खाइ बढ़ाया । मैं दयाल पद औरै गाया ॥
राम काल जग कारन भाखा । सो सूझा नहिं इनकी आँखा ॥

(१) चोट्टा = चोर ।

राम जगत हम येहि बिधि गावा। नहिँ देखा जग मोर निभावा॥
राम राम कछु इष्ट न मानी। जग अँधरे को कहा बखानी॥
राम चरित्र राम बिधि राखी। दसरत राम अजुध्या भाखी॥
ये नहिँ अगम राह कर पंथा। अगुन सगुन जहँ नाहिं तहँ संता
निरगुन सरगुन इष्ट न जाना। चौथा पद सत नाम बखाना॥
अगुन सगुन दोउ काल की फाँसी। जग मैं कहूँ जगत करै हाँसी॥
वो साहिब पद इन से न्यारा। तीनि लोक निरगुन के पारा॥
निरगुन सरगुन दोउ न जाई। तेहि घर संत करै पासाही[1]॥
तुलसी इष्ट संत को जाना। निरगुन सरगुन दोउ न माना॥
जो जो संत अगम गति गाई। निरगुन सरगुन नहिँ ठहराई॥
जो कोइ बूझै तुम कस गावा। राम राम कहि ग्रंथ बनावा॥
हम कछु और भेद दरसावा। जब अबूझ अँधरा समझावा॥
जो ग्रंथन मैँ गाइ सुनाई। जियत न मिलै मुए कस पाई॥
मैँ मति ठीक ठीक कर गावा। पंडित भेप जगत नहिँ पावा॥
राम राम कहि सब जग मरिया। आदि अंत मध कोउ न तरिया॥
राम जो कहै परै भौ खानी। राम मरम मन आप न जानी॥
जो कोइ करै राम की टेका। सो भौ भरमै खानि अनेका॥
तुलसी सत्त सत्त कहि भाखी। जस जस सूझ जौन जेहि आँखी
फूलदास बिधि सुनहु बनाई। येहि बिधि तुलसी ग्रंथन गाई॥
और कबीर दादू रैदासा। दरिया नानक अगम तमासा॥
सूरदास नाभा अरु मीरा। औरौ संत अगम मति धीरा॥
अरु अस बिधि सब साखि बनाई। सो सो सभन अगम गति गाई
जस जस मैँ पुनि भाखि सुनावा। संत कृपा रज महुँ पुनि गावा॥

---

(१) बादशाहत, राज।

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुनु बैन, आदि सैन अंतै कही ।
जो कबीर मत ऐन, संत सार लारै लई ॥१॥
ये संतन मत सार, जो अगार अंदर लखा ।
चखा सुरति पद सार, आदि अंत बिधि सब लखी ॥२॥

॥ दोहा ॥

तोल बोल जेहि लखि परै, तुलसी निरखि निहार ।
सार पार सूरति करै, तब लख लोक अगार ॥

॥ राग बिलावल ॥

तुलसी जग तरक तोल, बोल हेर हारा ॥ टेक ॥
देखो दुर्ग काल जाल, माँगै स्वर्ग बास हाल ।
लिये मोह भरम जाल, ख्याल खोजि पारा ॥
बूझै नहिं साध संत, खोजै नहिं आदि अंत ।
पावै कस पिया पंथ, बूड़ै भौ धारा ॥
ऐसा भौ भरम माहिं, काम क्रोध लारा ॥१॥
राम प्रिये परन ठान, मन से सुत त्रिये मान ।
माया बस परत खानि, बूझ खोज पारा ॥
येहि बिधि अज्ञान बास, बूझो मृत अंत नास ।
प्रीति मुक्ति कह अकास, स्वाँस नास न्यारा ॥
ऐसी बुधि हीन चीन्हि, बूझि ले गँवारा ॥२॥
चाहत पद राम बास, रामहिं पुनि होत नास ।
वोहू पुनि काल फाँस, आस मौत मारा ॥
वा से कोउ करै न हेत, बूझो नर अंध अचेत ।
सूरति छबि नाम लेत, चौथे पद पारा ॥
याही ब्रत बान ठान, संत पंथ न्यारा ॥३॥
देखो कृत कर्म काग, या से पुनि निकस भाग ।
साधो सत सुरति लाग, लखि अकास पारा ॥

ऐसी लख मान सीख, नाहीं भौ खानि नीक ।
ऐसी अज अमर लोक, तुलसी तन छारा ॥
याही घट खोज रोज चौज मौज मारा ॥४॥

भाखा सत मन पसार, ता का भौ भिन अपार ।
चाखा पद मूर सार, जाहिर जग सारा ॥
पावै सत मत्त सार, देखै अगमन बिचार ।
उतरौ भौ सिंध पार, नौका भौ वारा ॥
तुलसी घर घोर सोर, निरतौ चित चारा ॥५॥

तुलसी तन माहिं पैठि, छाँड़ौ नर सकल टेक ।
आदि और अंत देखि, टेक एक सारा ॥
कहनी मन मैं बिचार, तेरा कोउ ना निहार ।
निरखौ नैना पसार, वाहि को अधारा ॥
तुलसी ये खूब अजूब, पावै मन मारा ॥६॥

मो को सब जगत कहत, तुलसी के राम टेक ।
जाना निज एक अलेख, संतन के लारा ॥
जा के नहिं रूप रेख, देखा जो जाइ अदेख ।
ऐसा पद पार पेख, कोटि राम चेरा ॥
तुलसी लल करि बिचार राम खानि घेरा ॥७॥

तुलसी सतगुरु की दृष्ट, ता से निरखा अदृष्ट ।
सत्त लोक पुरुष इष्ट, वे दयाल न्यारा ॥
मोरी लौ चरन लार, छिन छिन निरखत निहार ।
कीन्हा पद पूर पार, काल जाल मारा ॥
तुलसी ये जगत भ्रष्ट, देख मैं दिदारा ॥८॥

तुलसी ये अंड खंड, निरखा सगरा ब्रह्मंड ।
मारा मन काल डंड, छाँड़ छूट न्यारा ॥

धरती और चंद सूर, निरखा सगरा जहूर ।
लीन्हा रन खेत सूर, संतन मत सारा ॥
तुलसी दीदा निहार, भागे बटपारा[१] ॥९॥

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुन बात, जगत भूल बिधि योँ कही ।
राम रहै भा खानि, जा की आसा जग महीं ॥

॥ चैापाई ॥

फूलदास सब बिधी बताई । जगत राम हम यहि बिधि गाई ॥
हम संतन मत अगम बखाना। हम तो इष्ट संत को जाना ॥
संत इष्ट लखि वार अरु पारा। उन चरनन सूझा सत सारा ॥
उन सम और इष्ट नहिं भाई। राम करम राव भा के माईं ॥
संत अगम घर कीन्ह पयाना। सो घर राम न सुपने जाना ॥
राम करम बस भा के माईं। संत अगम घर निज प्रति जाई ॥
संत जाइ निरगुन के पारा। राम रहै निरगुन भा वारा ॥
संत जाइ निरगुन जहँ नाहीं। सरगुन की कहा कैान चलाई ॥
सरगुन निरगुन दोउ से न्यारा। वा घर संत करै दरबारा ॥
निरगुन राम भा जग मेँ आई। संत अगम घर अपने जाई ॥
राम रहा तिहुँ लोक समाई। कर्म भोग भा खानि रहाई ॥
तीनि लोक के चैाथे पारा। वा से परे संत घर न्यारा ॥
राम काँच राम की मत जाना। संत गती हीरा परमाना ॥
वो पैसे मेँ जग ले आवै। राम काँच मन जग को भावै ॥
संत अगम हीरा गति न्यारी। केहि बिधि पावै जगत भिखारी ॥
ये मत बिरले खोज कोउ कीन्हा। संत कृपा से हीरा चीन्हा ॥
जो जेहि संत लखावै भाई। जब वह हीरा हाथै आई ॥
वो हीरा पत्थर मत जानो। हीरा नाम अगम घर मानो ॥

(१) ठग ।

वो हीरा चौथे पद पारा। राम जगत जौहरी निहारा ॥
राम जगत जौहरी पै नाहीं। हीरा अगम संत पै पाईं ॥
संत कृपा कोइ दास निहारा। संत चरन लागे सोइ लारा ॥
राम काँच चूरी जग माहीं। तिरिया पहिरि हाथ मैं जाईं ॥
फूटै बिनसै बहुरि बनाईं। धक्का लगे फूट जिमि जाईं ॥
टूक टूक चूरीगर लीन्हा। घरिया करम आँच पुनि दीन्हा ॥
घरिया करम माहिं पुनि डारा। चूरी मनिया बहुरि सँवारा ॥
ले बजार गलियन के माईं। करि खरीद ले तिरिया जाईं ॥
पुनि कमनीगर कहत पुकारे। नीच बुद्धि तिरिया के लारे ॥
ऐसी नीच जगत मति जानी। राम काँच जेहि अगम बखानी ॥
राम राम बिधि ऐसी जाना। चूरी फूट कमनीगर आना ॥
तोड़ फोड़ भट्टी औंटाईं। ये बिधि राम कर्म भौ माहीं ॥
तन भट्टी कमनीगर काला। ये जग खान राम बेहाला ॥
ता को जाय जगत मन लाईं। ता की कहो कौन गति गाईं ॥
राम आप कर्मन बस परिया। कहौ ता से जग कस कस तरिया ॥
राम राम मन बूझौ भाईं। मन को राम संत गोहराईं ॥
देखौ सब संतन की साखी। बूझि ज्ञान जब खुलि है आँखी ॥
मन जो राम को जपै बनाईं। मनहिं राम को गारी लाईं ॥
मन से कहत बहुत यह खोटा। राम जपे केहि बिधि ह्वै मोटा ॥
मुख से मन को खोट लगावै। वही राम मन इष्ट बतावै ॥
राम इष्ट मन गारी दइया। तुम्हरा ज्ञान आहि कस भइया ॥
राम राम जपिया दिन राती। मन को खोट कहौ केहि भाँती ॥
मन को खोट देउ तुम गारी। इष्ट राम पर परिहै सारी ॥
अपने मन मैं ज्ञान बिचारा। बूझ करौ सतसंगति लारा ॥
जग सब भूल भूल के माहीं। बुद्धि कर्म बस बूझ न आईं ॥
भेष पंथ सब झारि बिचारा। बहु पुनि परे राम की लारा ॥

राम राम पुनि आपुहि गावै। जो कोइ बूझि ताहि बतलावै ॥
उन से बूझ राम कहँ होई। कह सब माहीं रहा समोई ॥
राम राम सब माहिं बताई। चारि खानि चर अचर समाई ॥
येहि बिधि मुखसे बोलै बाता। नर पसु पंछी सब के साथा ॥
पूछै नर मैं राम बतावै। कंठी बाँधि चेला ठहरावै ॥
राम राम बिधि सब मैं गावै। पुनि चेला कस कस ठहरावै ॥
मुख से राम कहै सब माहीं। पुनि पूछै सेवक बतलाई ॥
सेवक मन से ता को जानै। फिर कस राम को स्वामी मानै ॥
स्वामी सब के माहिं समावा। पुनि सेवक कस कस बतलावा ॥
राम बसा सब जग के माहीं। ये तो जग स्वामी भया भाई ॥
सब घट माहीं राम बिराजा। घट मैं रामहिं करै अवाजा ॥
चेला करि तुम नाम पुकारी। बोलै को लख दृष्टि पसारी ॥
को अवाज चेला मैं दीन्हा। को बोलै केहि चेला कीन्हा ॥
बोलनहार राम बतलावौ। सिष्य करौ सेवक ठहरावौ ॥
कस कस बुद्धि तुम्हारी भाई। बुद्धि गई मति ज्ञान हिराई ॥
राम राम करि मुक्ति तुम्हारी। बोलै चेला राम बिचारी ॥
बोल राम तुम चेला कीन्हा। चेला मुक्ति कौन बिधि दीन्हा ॥
बोल राम रित चेला थापा। बुद्धि गई तुम बूड़े आपा ॥
बूझौ खूब खूब कर देखौ। तुलसी बचन हृदै मैं पेखौ ॥
तुलसी बूझ अबूझ बिचारा। साँच झूठ परखौ निरधारा ॥
मन गुन ज्ञान बुद्धि सँग बूझी। तुलसी नहिं कछु कही अबूझी ॥
निंदा भाव कीन्ह कछु नाहीं। निंदा संत न करिहैं भाई ॥
निंदा भाव नर्क की खानी। ता को संत न करैं बखानी ॥
ये अबूझ अपने से जानौ। ता से निंदा कहि कर मानौ ॥
तुम निंदा कर बूझा भाई। संत मता सतसंग न पाई ॥
संत मता सतसंगति जानौ। सार असार सबै पहिचानौ ॥

बिन सतसंग बूझ नहिं आवै। ता से निंदा करि ठहरावै ॥
संत सरन से उतरै पारा। सो तो तुम निंदा कर डारा ॥
मुख से कहो संत मत न्यारा। संत बिना नहिं होइ उबारा ॥
संत गती न्यारी तुम भाखौ। न्यारी कहि पुनि ताहि न ताकौ ॥
संत का भेद बेद से न्यारा। अस अपने मुख कहौ बिचारा ॥
संत साध कहो सब से न्यारा। पुनि सुनि कै नहिं मानो लबारा ॥
न्यारी कहै सत्त सत जाना। न्यारी सुनै देइ नहिं काना ॥
न्यारी को न्यारी कर बूझै। न्यारी गुनै सुनै नहिं सूझै ॥
कहै न्यारी मुख मीठा लागै। न्यारी सुनै तभी उठि भागै ॥
अपने मुख से न्यारी भाखै। न्यारी सुनि उठि कै कस भागै ॥
न्यारी सुनि बूझै नहिं भाई। ता से कछू हाथ नहिं आई ॥
ये अद्‌बुद सुनियौ अज्ञाना। न्यारी कहै सुनै नहिं काना ॥
भेष जगत की ऐसी रीती। ज्यों भेड़ी जग बहै अनीती ॥
या बिधि से जग बेद भुलाना। संत मता ता से नहिं जाना ॥
फूलदास ये येहि बिधि लेखा। परघट नहीं संत गति पेखा ॥
जो कोइ परघट कहत बुझाई। तो झगरा करने को धाई ॥
गुप्त मता संतन ने भाखी। कागद में मिलिहै नहिं साखी ॥
साखी सब्द ग्रंथ जो गावै। बिन सतसंग समझ नहिं आवै ॥
ये झूठे कागद के माहीं। ढूँढ़ ढूँढ़ सब जनम सिराई ॥
ज्यों बाजीगर डंका मारा। ठगन जगत इंद्रजाल पसारा ॥
ऐसी सब ग्रंथन की बानी। ता में ढूँढ़ै भेष अजानी ॥
या से इन के हाथ न आवै। गुप्त संत बिधि कैसे पावै ॥
फूलदास मति बूझो भाई। अस जग अंध कहा कहौं गाई ॥
सब सब बिधि बिधि गाइ बताई। फूलदास बिधि भूल सुनाई ॥

सम्बाद साथ गुनुवाँ बेटा हिरदे अहीर के

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

इतने में हिरदे चलि आये । संगहिं सुत दरसन को लाये ॥
दोऊ दरस डंडवत कीन्हा । चरन धाइ पुनि हमरे लीन्हा ॥
हम पूछी हिरदे से बाता । आज को लाये अपने साथा ॥
हिरदे पुत्र सामने कीन्हा । हम पूछी केहि नाम से चीन्हा ॥
हिरदे कहै यह जगत बिधाना। गुनुवाँ नाम से पुत्र कहाना ॥
पूछी तुलसी कौन ठिकाना। कहँ से आये कहौ बिधाना ॥
हिरदै कहै सुनो हो स्वामी । मोसे जुदा रहै यह जानी ॥
रह लखनऊ मोर यह बेटा । बहुत दिनन पर मो से भैंटा ॥
मोरे मिलन काज यह आवा। सो स्वामी के दरसन पावा ॥
स्वामी चरचा सुनी बिख्याता। फूलदास साध के साथा ॥
इन सब वह चरचा सुनि पावा। या के मन में भर्म समावा ॥
ये स्वामी जस ज्ञान बखाना । या की समझ बूझ नहिं माना ॥
राम राम तुम कछू न गाई । राम से और कोऊ बतलाई ॥
राम से और कोऊ नहिं दूजा। यह या के मन आई बूझा ॥
कह तुलसी गुनुवाँ सुन बाता। रह दो चार रोज यहिं राता ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

माथ नवाइ जोरि जुग पानी। स्वामी से बूझौं इक बानी ॥
राम राम जग बिरत बिराजा। जिन ने किये अनेकन काजा ॥
जक्त भेष सब साध बतावा। तुम ता को कछु नहिं ठहरावा ॥
सब मिलि के ये बिधी बखानी। महुँ पुनि सुनी कहौं यह बानी॥
राम ने सिंध पखान तरावा। जल पर सिला राखि उतरावा॥

और पहलाद भक्त को तारा। ता कारन हरनाकुस मारा।
गुजरी एक बिन्द्राबन माहीं। तिन पुनि कथा सुनी इक ठाहीं॥
कथा माहिं इक सुना प्रसंगा। राम राम नौका चित चंगा॥
उन सुनि साँच मान मन धारी। वो उतरी जमुना के पारी॥
अजामील अस पातकि होई। ता सुत नाम नरायन सोई॥
मरत बार सुत नाम पुकारा। सो पहुँचा मुक्ती के द्वारा॥
गनिका सुवा पढ़ावत तारी। राम राम कहि उतरी पारी॥
ध्रू ने अटल तपस्या कीन्हा। पदवी राम अटल तेहि दीन्हा॥
और गज अर्ध नाम गोहरावा। ता को तुरत स्वर्ग पहुँचावा॥
बालमीक जपि उलटा नामा। राम राम कहि मुक्ति समाना॥
महादेव दुइ अच्छर बासी। राम राम कहि भये अबिनासी॥
अस परचे जो राम के गावै। तुलसी पत्र लिखा इक ठाँवै॥
राम राम इक पत्र लिखाया। या की बिधि सब साखि सुनाया॥
पत्र एक पर राम लिखाना। पलरा माहिं धरा तेहि जाना॥
इक पलरा पर द्रव्य चढ़ावा। दूजा पलरा पत्र धरावा॥
पलरा पत्र उठा नहिं भाई। राम राम की ऐसो बड़ाई॥
महिमा राम राम अस गाई। नामदेव पुनि गाइ जियाई॥
येहि बिधि साखी बेद पुकारै। सास्तर कहै राम ही तारै॥
ऐसी बिधि मिलि राम की साखा। सोई राम तुम ने नहिं राखा॥
राम राम बिधि तुमहूं गावा। तुमहूँ राम राम समझावा॥
या का भरम बहुत मोहिं आई। या की बिधी बिधी समझाई॥
पहिले तुमहुं राम कहि गावा। राम राम कहि भाखि सुनावा॥
अब तो मोड़ तोड़ तुम डारा। राम राम कहो झूठ पसारा॥
या की बिधी भेद समझावौ। राम छाँड़ि तुम केहि को ध्यावौ॥
सब जग साखि तुम्हारी गावै। तुलसी राम राम समझावै॥

या की स्वामी साखि सुनैये । मोरे मन का भर्म मिटैये ॥
सो स्वामी मो को समझावौ । मोरे मन का भर्म छुड़ावौ ॥

॥ दोहा ॥

स्वामी कहै। बुझाइ, भर्म भाव मो को भयो ।
मन मैँ संक समाइ, राम राम कछु ना कह्यो ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन गुनुवाँ तो को समझाऊँ । आदि अंत या की बतलाऊँ ॥
सत्तलोक इक पुरुष अपारा । चौथे पद के पार बिचारा ॥
तासु अंस जिव पुरुष नियारा । जा का पद चौथे के पारा ॥
ता के पुत्र भये पुनि भाई । सोला निरगुन तिन कर नाईं ॥
सो निरगुन जो पुरुष से भैया । जा मैँ लघू निरंजन कहिया ॥
ता को संत काल गोहरावै । सोई राम रमतीत कहावै ॥
सोई निरंजन कहिये काला । आदहि जोति बिछाई जाला ॥
पुरुष निरंजन जोती नारी । ये दोऊ मिलि सृष्टि रचा री ॥
तिन के पुत्र तीनि जो जाना । ब्रह्मा बिष्नु ताहि कर नामा ॥
तीजे संभू छोटे भाई । तीन पुत्र या बिधि उपजाई ॥
निरंजन पिता जोति है माता । ये तीनाेँ इन से उतपाता ॥
रमतीता सोइ बूझो काला । जोती काल रचा जंजाला ॥
ता के भये दसो औतारा । काल अंस जग राम पसारा ॥
रमता राम कर्म के माहीँ । रमतीत राम काल की छाहीँ ॥
रमतीत काल ने जाल पसारा । रमता रहा राम भो जारा ॥
राम कहो सोइ मन है भाई । मनहिँ राम जिन जक्त बुड़ाई ॥
राम काल सब संत पुकारा । जा को जपै यह जक्त लबारा ॥
ब्रह्मा बिष्नु महेसर जाना । बेद कहे सोइ झूठ पुराना ॥
ये तीनोँ ने जाल पसारा । राम काल ने सब जग मारा ॥

राम काल को जपै बनाई । चर और अचर सभी चरखाई ॥
राम काल को जपिहै भाई । जम बंधन भा खान समाई ॥
रमतीत काल जोति है ठगनी । तीन पुत्र उपजाये अपनी ॥
सास्त्र बेद और दस औतारा । ये सब जानो काल पसारा ॥
या के मत में परिहै प्रानी । काल जाल ये जम की खानी ॥
तीनि लोक जम जाल पसारा । वो दयाल पद इन से न्यारा ॥
वो दयाल समरथ है दाता । सो पद को कोउ संत समाता ॥
वा की राह संत से जानै । भेष जक्त[1] दोउ नहिं पहिचानै ॥
संत मता कोइ भेद न जाना । सूरति संत चढ़ै असमाना ॥
पहुँचै सूरति अगम ठिकाने । अपना आदि अंत घर जानै ॥
सूरति मिलै पुरुष को जाई । तिन को नाम संत है भाई ॥
संत राह सूरति को पावै । और सब भेष खानि मैं आवै ॥
आदि पुरुष को देखै नैना । तब अदृष्ट की बूझै सैना ॥
पतिबरता सो पुरुष पिछानै । वा को इष्ट संत सब मानै ॥
और इष्ट नहिं जानै भाई । राम इष्ट ये काल कहाई ॥
जो कोइ राम पतिब्रत कीन्हा । सो सब परे कर्म आधीना ॥
जिन दयाल से सुरति लगाई । सो पहुँचे वा पद के माईं ॥
येहि बिधि संत कहैं गोहराई । अस अस संत सभी समझाई ॥
राम काल जो जपै बनाई । संत बचन निंदा ठहराई ॥
संत बचन निंदा कर माना । ता ते परे नर्क की खाना ॥
या का कोई भर्म लै आवै । बार बार चौरासी पावै ॥
आप अबूझ बूझि नहिं लावै । संतन को नास्तिक ठहरावै ॥
यह सब भेष अंध भये भाई । संतन को निन्दक ठहराई ॥
संतन की बूझै कोई बानी । तौ छूटै चौरासी खानी ॥
राम काल को दूर बहावै । निस दिन संत चरन लौ लावै ॥

(१) मं० दे० प्र० के पाठ में "भक्त" अशुद्ध है ।

वो दयाल कहुँ राह बतावैं । तब जिव अपने घर को जावै ॥
संत चरन पावै निरबारा । राम काल जग फाँसी डारा ॥
जो कोइ गहै राम की सरना । छूटै न जनम मरन का धरना ॥
कहै राम के होइ गये बेटा । ता को परिहै जम को सोँटा ॥
जो कोइ भये राम के प्यारे । खानि गये जम लातन मारे ॥
तुलसी सत सत यहि मत भाखा । या मैं पच्छपात नहिं राखा ॥
संत बचन जेहि सत्त न भासी । जा की होइ जनम की नासी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, गुनुवाँ बूझौ बात यह ।
राम भर्म भौ खानि, सब कहै संत पुकारि कै ।

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि स्वामी इक पूछौं बाता । केहि बिधि ये जिव होइ सनाथा ॥
ध्रू प्रहलाद जो गनिका भइया । सेसनाग गज नामदेव कहिया ॥
बालमीक अरु सबहि बखानी । अजामील सिव गुजरी जानी ॥
तुलसी पत्र राम लिखवाई । और पखान जल माहिं तराई ॥
ये स्वामी कहो कैसी भैया । कहै गुनुवाँ मो को समझैया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन गुनुवाँ मैं बूझ बताई । मन ठहराइ सुनो चित लाई ॥
राम अनादि चारि जुग भैया । ग्यारह जीव ताहि मैं तरिया ॥
ता मैं सात जीव की चरचा । और चारि बतलावौं परचा ॥
गिरे परे दस पाँच अरु होई । ये सब साखि बतावौं सोई ॥
पोढ़ पोढ़ तो सातै भैया । चारि बिधी परचे की कहिया ॥
चारौ जुग जिव भये अनेका । सतजुग द्वापर त्रेता देखा ॥
कलजुग सुधाँ चार जुग पेखा । चार जुगन का पूछौं लेखा ॥

ता मेँ सात जीव सब तरिया। और जीव गये कहाँ जो मरिया॥
राम राम चारो जुग आवा। चारो जुग सबहिन मिलि गावा॥
निरमल सतजुग जीव अनेका। राम राम जपि बाँधी टेका॥
सो तरे जीव अनेकन होई। तुम ने सात जीव कहे सोई॥
और जीव को भाखो लेखा। तरि गये होइहैँ जीव अनेका॥
और नहीँ थोरे पुनि कहिये। सतजुग क्रोड़ जीव तो चहिये॥
सतजुग उजली बुधि मन होई। राम जपा निस्चय से सोई॥
ता मेँ क्रोड़ जीव तो चाही। ये तो सात नाम भये भाई॥
और अनेक राम जपि जानी। सात तरे की हम नहिँ मानी॥
क्रोड़ जीव का नाम बतावे। तब हमरे मन साँची आवे॥
उजला सतजुग सात बखाना। मैला कलि का कौन ठिकाना॥
सतजुग सात निष्ठ से गैया। कलजुग एक तरे नहिँ भैया॥
सतजुग मेँ तुम सात बतावा। कलजुग कर्म नष्ट लपटावा॥
जो कोइ कहै राम से तरिहै। झूठ समझि मन मेँ नहिँ धरिये॥
राम रमा जुग चारो खानी। तरिहै या से कस कस मानी॥
तुम को कहते सरम न आई। या को मन मेँ बूझो भाई॥
येहि बिधि तुम मन अपने बूझा। करि बिचार तब परिहै सूझा॥
क्रोड़ोँ ऋषि मुनि जपि पुनि होई। क्रोड़ोँ तपसी जानो सोई॥
क्रोड़ोँ इष्ट नेम पुनि करिया। कइ इक राम पतिब्रत धरिया॥
राम राम कहि सब जग तरते। भौसागर मेँ कोइ न परते॥
जो तुम कहो करै परतीता। सतजुग मेँ थी सत की रीता॥
साँचा जुग परतीत न आई। झूठे कलि की कौन चलाई॥
काल राम मन उतपति माहीँ। राम न तारा होइहै भाई॥
सत जुग राम कहे नहिँ तरिया। भौसागर मेँ सब जिव परिया॥
तुम तो कहो राम सब माहीँ। चार खान मेँ रहा समाई॥
राम खान मेँ रहा बिराजा। कस कस भयो तुम्हारो काजा॥

राम खान बस रहिया भाई । तुम को कस मुक्ती पठवाई ॥
ये सब जानौ झूठी बाता । या में खैहै जम की लाता ॥
सत सत लोक राह चढ़ि जाई । तब यह जीव मुक्ति को पाई ॥
राम राम की झूठी आसा । गये राम कहे जम की फाँसा ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

तुम पुनि राम राम कस कहिया । सब ग्रंथन में साखि सुनैया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जग अबूझ कारन हम गाई । जो करै इष्ट राम से भाई ॥
जो हम न्यारा भेद सुनावैं । तो जग माहिं रहन नहिं पावैं ॥
ता से न्यारा भेद न भाखा । संत भेद हम गुप्त राखा ॥
भेद ग्रंथ में गुप्त लखावा । पुनि काहू की दृष्टि न आवा ॥
हम ने भाखा अगम अलेखा । जा कौ मरम न जानै भेषा ॥
हम सतपुरुष अलख लखवावा । बेद न भेद भेष नहिं पावा ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी एक मोहिं समझाई । गुजरी सिला की कहौ बुझाई ॥
सब भाखैं जल में जो तरिया । या बिधि कहौ मोर मन भरिया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

या की मैं परतच्छ बताई । देखौ जाइ नजर से भाई ॥
या की बिधि मैं तुरत बताऊँ । ज्यौं बजार सौदा समझाऊँ ॥
जस बजार में सौदा लीन्हा । परखा तोल दाम तेहिं दीन्हा ॥
अपने मन में साँची आई । पैसा दीन्ह गाँठि बँधवाई ॥
ऐसा परचा ततवर पेखौ । अपने नैन नजर से देखौ ॥

वोहि पानी वोहि पत्थर होई। वोहि पुनि राम लिखावै सोई ॥
राम लिखै पत्थर के माईं। पानी डारि देखि लो भाई ॥
जो पत्थर पानी नहिँ बूड़ा। तौ तुम जानौ राम अगूढ़ा ॥
पत्थर डूबै राम लिखे से। तौ तुम बुड़िहौ राम कहे से ॥
ततवर करौ नजर से पेखौ। ये तो आज आँख से देखौ ॥
संसय सोग सब झारि निकारौ। ले पत्थर पानी में डारौ ॥
जो जल पत्थर रहि उतरानी। सिल गुजरी की साँची मानी ॥
बूड़ै पत्थर राम लिखाना। अपने बूड़न की अस जाना ॥
एक बिधी मैं और बताई। ता से देखौ सत्त बनाई ॥
राम राम जेहि तुमहिं दृढ़ाओ। ले पत्थर वोहि हाथ लिखाओ॥
सोइ पत्थर वोहि हाथ डरावै। जो बूड़ै झूठे कर गावै ॥
नहिं तो और बिधी इक भाखौं। जैसो बिधी जुगत करि ता कौ
राम राम जग कहै अनेका। राम इष्ट जेहि जेहि करि देखा ॥
सोइ सोइ हाथ सभन लिखवावै। पत्थर लिखि पानी सोइ नावौ
एक एक बिधि बिधि से डारी। ये परचा सब देखौ झारी ॥
या में कोइ परतीती होई। सब का परचा भिनि भिनि जोई
या में रहै भरम इक साथा। ये लिखि देखौ अपने हाथा ॥
तुलसी पत्र की बिधी बताई। सोई बृच्छ बहुत जग माइ ॥
पत्र तोड़िकै परचा पेखौ। लिखि वोहि राम पत्र धरि देखौ
पत्र तोल में हलुक उठाना। तौ यहि बिधि झूठी करि जाना

॥ गुनुवाँ उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी सुनु बिख्याता। ये सब वाहि समय की बाता ॥
वाहि समय में यह बिधि होती। आज कलू नहिं होइ यह भोती[१]
राम राम जपि सिव अबिनासी। ये भी वाहि समय की बाती ॥

(१) परिश्रम, काम।

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

रामराम कौने बिधि कहिया । जा से सिव अबिनासी भैया ॥
मुख से जप कीन्हा कछु औरी । ये गुनुवाँ बिधि कहौ बहोरी ॥

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

गुनुवाँ कहै सुनो हो स्वामी । मुख से जपि जपि राम बखानी ॥
महादेव ने मुख जप कीन्हा । ये भया वाहि समय का चीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ।

॥ चौपाई ॥

या मैं राम बड़ा नहिं होई । ये तो समय बड़ा भया सोई ॥
राम कहे सिव नहिं अबिनासी। वे भये समय भाव बिधि बासी ॥
ये तो समय बड़ा बिधि भाखी। राम बड़ा कहो केहि बिधि राखी
राम बड़ा जब जानै भाई । जल में पत्थर आज तराई ॥
उन को बड़ा जबै हम जानैं । आज लिखे पत्थर उतराने ॥
समय भाव पत्थर उतराई । कहौ राम की कौन बड़ाई ॥
कहौ राम से मुक्ति बताई । पुनि फिरि ले समया ठहराई ॥
कभी राम को बड़ा बतावौ । कभी लेइ समया ठहरावौ ॥
एकहि बात सत्त ठहरावै । तब सत हमरे मन में आवै ॥

॥ दोहा ॥

एक कहै दूजी कहै, दो दो कहै बनाय ।
ये दो मुख का बोलना, घने तमाचे खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुनुवाँ भाई । समय बड़ा कै राम बड़ाई ॥
या में एक सत्त करि भाखो । एक बात झूठी करि राखौ ॥
जो तुम कहौ राम सब लारा । परचा देखि न कहै लबारा ॥
ऐसी बड़ी राम गति जेही । समया झूठ ताहि कर देई ॥

राम से समय बड़ा है भाई । कहौ राम की कौन बड़ाई ॥
समया झूठ राम करि डारै । ऐसी कहौ तो साँच बिचारै॥
समय राम की कला उड़ाई । तुम जपि मुक्ति कौन बिधि पाई
अपनी मुक्ति खोज नहिं पावौ । राम राम कहि जगत दृढ़ावौ ॥
जो सच्चा तुम राम सुनावौ । तौ पत्थर पानी में नावौ ॥
जब जानैं वोहि सच्चा रामा । पानी पत्थर आज तिराना ॥
अपनी देखी कहौ न भाई । मुए गये की बिधी बताई ॥
साँचा सोई मिलै जो आजी । मूए मुक्ति बतावै पाजी ॥
जीवत मिलै सोई मत पूरा । मूए कहै समझ सोइ धूरा ॥
अब सुन आगे बिधी बताऊँ । महादेव की बिधि समझाऊँ ॥
महादेव राम नहिं जपिया । ये साखी झूठी तुम कहिया ॥
महादेव तो जोग कमाया । राम राम जोगी नहिं गाया ॥
उन अपनी इंद्री मन जीता । मुद्रा साधी पाँच पुनीता ॥
स्वाँसा साधि गगन मन धावा । उनमुनि साधि कै गगन लगावा
चाचरि भूचरि भावक जानी । खेचरि मिलि योँ पाँच बखानी
आगे अगोचरि साखि सुनाऊँ । ऐसे जोगी जोग जनाऊँ ॥
जोग किया जब भये अबिनासी । राम राम कहे काल की फाँसी
करि के जोग उन जोति समाने । जोति दृष्टि मुक्ती पद जाने ॥
मुक्ती भोग भोग भया भाई । पुनि फिरि फिरि चौरासी पाई
संत मते की राह न जानी । या से भरमे चारो खानी ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी तुम सत्त बताई । ये सब मोरे मन में आई ॥
एक बिधी मोहिं बरनि सुनावौ । बालमीक बिधि साखि बतावौ
अजामील गति कैसी भैया । सो बिधि मो को बरनि सुनैया

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुनुवाँ बाता । बालमीक की सुन बिख्याता ॥
वालमीक जप उलटा कहिया । उलटा जपत मुक्ति नहिं भैया ॥
सूधा जपि जपि जन्म सिराना । मुक्ती को सुपने नहिं जाना ॥
उलटा जपत मुक्ति जो होती । सुलटे मिलन जपा जप थोथी ॥
जीवत मुए मुक्ति नहिं पाई । ये जग झूठी जाल बिछाई ॥
अजामील का भाखौं लेखा । सुन गुनुवाँ अपने मन पेखा ॥
नारायन जेहि सुत का नामा । ता कौ मोह बंध बस जामा ॥
अपने सुत से मोह जो कीन्हा । मरते नाम नरायन लीन्हा ॥
मुक्ति भई अस कहैं बुझाई । या की बिधी कहूँ समझाई ॥
जग में पुत्र सभन के होई । राम कृष्न नारायन सोई ॥
गोबिंद नाम गोपाल मुरारी । येहि बिधि पुत्र नाम जुग चारी
मोह बंध बस नाम पुकारी । नाम पुत्र जग होत उबारी ॥
येहि बिधि मुक्ति होत जो भाई । तो भौ में जिव एक न जाई ॥
ये सब जानौ झूठी बाता । राम काल जिव कीन्ही घाता ॥
और तुम ने ध्रू मुक्ति बतावा । सो तो गगन दृष्टि में आवा ॥
ध्रू तारे की मुक्ति बतावो । सब तारे की बिधि समझावो ॥
तारा गगन मुक्ति जो होती । तारा टूट गिरै भुंइ जोती ॥
जो तुम ध्रू को अटल बताया । गगन फूटि ध्रू कहाँ समाया ॥
पाँच तत्त का होइहै नासा । कहो ध्रू ने कहँ कीन्हा वासा ॥

॥ दोहा ॥

चंद मरै सूरज मरै, मरिहैं जिमीं अकास ।
ध्रू पहलाद भभीषना, परे काल की फाँस ॥

॥ चैापाई ॥

सुन गुनुवाँ सब बिधी बताई। ये सब की तोहि भाखि लखाई ॥
अब पहलाद का भाखौं लेखा। सो तुम सुन कर करो बिबेका ॥
दस औतार काल के भाई। ता मैं नरसिंघ है दस माहीं ॥
हरनाकुस का उदर बिदारा। ये जानी सब काल पसारा ॥
वे दयाल एक सब माहीं। वो कहो केहि का मारन जाई ॥
हरनाकुस को मारि बिदारा। पुनि पहलाद राज बैठारा ॥
राज भोग जिन कीन्हा भाई। सो तेहि पुत्र त्रिलोचन राई ॥
वे लोचन केवलि भयो सोई। जा को बावन बाँधे जोई ॥
जो मुक्ती वा की होइ जाते। बली छुड़ावन केहि बिधि आते ॥
आवागवन मुक्ति नहिं भाई। बली छुड़ावन कस कस आई ॥
भागवत मैं देखौ यह साखी। बली काज आये अस भाखी ॥
जो पहलाद मुक्ति को जाता। आवागवन केहि कारन आता ॥
सहाय करी नरसिंघ बतावा। पिता मारि राज जिन पावा ॥
राज करै सो नरकै जाई। कस कस ता की मुक्ति बताई ॥
जो नरसिंघ जिवत ले जाता। तो ता की हम मानैं बाता ॥
राज थापि तेहि भोग करावा। भोग भोग भो खानै आवा ॥
ता की मुक्ति साखि बतलावो। कहि झूठी झूठी समझावौ ॥
सुवा पढ़ावत गनिका तारी। यह बिधि भाखूँ कहूँ बिचारी ॥
सुवा पढ़त जो गनिका तरती। सहजै होत जक्त सब मुक्ती ॥
सुवा सुवा घर घर मैं होते। तो मुक्ती का सोच न करते ॥
ध्रू तप की तुम साखि बताई। गोपीचंद भरथरी भाई ॥
पढ़ पढ़ सुवा मुक्ति जो होते। तो पुनि राज काहे को तजते ॥
ध्रू को तप की बिधी बताया। राज छाँड़ि तन खाक मिलाया ॥
गनिका मुक्ति सहज बतलावौ। ध्रू जी राज गये किमि गावौ ॥

कभि सुवा पढ़ते सहज बतावा । कभि कभि कष्ट तपस्या गावा
ये तौ बिधी मिली नहिं भाई । ये सब झूठ झूठ सी गाई ॥

॥ सोरठा ॥

सुन गुनुवाँ ये बात, राम काल जग में फँसा ।
बसा करम के माहिँ, लसा खानि चारौ भर्ग ॥

॥ गुनुवाँ उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी सत सत तुम भाखो । समझि परा बूझी सब साखी ॥
ये सब काल जाल कर लेखा । अपने मन मैं किया बिबेका ॥
पुनि गुनुवाँ बोला अस बानी । महूँ आप चरनन लपटानी ॥
चरन दास जानौ मोहिँ चेरा । किरपा दृष्टि मोहिँ तन हेरा ॥
मैं पुनि रहौं चरन के लारा । जीव काज मम करौ सुधारा ॥
अब मैं सरन आपु की लीन्हा । राम काल धोखा यह चीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

अब तुलसी अस करी बखानो । हिरदे की संगत पहिचानो ॥
निस दिन हिरदे संग निहारौ । हिरदे से होइहै निरवारौ ॥
मन को थिर कर बूझो बाता । मन थिर बिना न आवै हाथा ॥
इंद्री मन थिर सूरति हेरो । तब भौजल से होइ निबेरो ॥
ये हिरदे रहै हमरे पासा । तन मन बिधी रहो येहि दासा
ये सत संगत सगरी जानी । या से प्रीति करौ पहिचानी ॥
हिरदे का तुम भेद न पाई । सूरति पाइ चरन चित लाई ॥
या से पिता भाव नहिँ मानौ । सूरति सैल चरन मैं आनौ ॥

॥ हिरदे उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तव हिरदे बोला अस बानी । अब चालन घर कहूँ बखानी ॥
ये गुनुवाँ परसाद कराऊँ । पुनि सिर नाइ चरन मैं धाऊँ ॥
अस कहि दीन डंडवत कीन्हा । चरन पाइ मारग को लीन्हा ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी अरज हमारी । किरपा करौ कहौ निरवारी ॥
हिरदे की मोहिं बिधी बताई । हिरदे पार समझ मोहिं आई ॥
अस बिस्वास मोर मन आवा । या की गती कहौ परभावा ॥
मैं स्वामी निज दास तुम्हारा । ये कहिये बूझौं निज सारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तब तुलसी बोले यहि भाँता । हिरदे भेद सुनाऊँ बाता ॥
इन सतसंगति बहु बिधि कीन्हा । संत चरन मैं रहे अधीना ॥
दीन बिधी और गुरुमत लीन्हा । संत चरन घट अंतर चीन्हा ॥
सूरति लीन अधर रस माती । का पूछौ हिरदे की बाती ॥
सतसंगति बिधि सगरी जाना । सूरति सैल फोड़ि असमाना ॥
दस दिस पार सार सब जाना । नौलख कँवल पार पहिचाना ॥
मानसरोवर बेनी तीरा । जल प्रयाग बहै निरमल नीरा
ता मैं न्हाइ चढ़े असमाना । सतगुरु चौथे पार ठिकाना ॥
निसि दिनि सैल सुरति से खेला । सुरति नाम करै निस दिन मेला
अष्ट कँवल दल गगन समाई । सहस कँवल पर तेहि की राही
ता के परे चार दल लीन्हा । द्वै दल जाइ दोइ मैं कीन्हा ॥
यहि बिधि रहै दिवस अरु राती । जानै कोइ न इन की बाती ॥
कोउ न भेद जान घर माईं । यह रहै सूरति अधर लगाई ॥

ऐसे कई दिवस गये बीती । ता पीछे भइ ऐसी रीती ॥
चलि हिरदे पुनि घर को जाई । घर मैं तिरिया पुत्र रहाई ॥
रात बास घर अपने कीन्हा । भोजन कर पुनि कीन्हा सैना ॥
पुनि पुनि निसा गई अधराती । चढ़ि गई सुरति सैल रस माती ॥
ता समय तिरिया कीन्ह उपावा। रोग सोग अपना दुख गावा ॥
जब हिरदे मन कीन्ह बिचारा। ये गृह साल जाल है न्यारा ॥
अस मन में कछु भई उदासी। पुनि तब से रहे हमरे पासी ॥

॥ गुनुवाँ उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी बिधी बताई । हिरदे की कछु अगम सुनाई ॥
हिरदे पार सार गति पाई । तुलसी स्वामी अगम लखाई

हाल अभ्यास तीनों पंडितों का

॥ नैनू उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

इतने मैं पंडित चलि आई । करो डंडवत परसे पाँइ ॥
स्यामा नैनू माना नामा । तीनों मिलि बैठे वोहि ठामा ॥
पुनि नैनू ने अरज बिचारी । स्वामी तुम चरनन बलिहारी ॥
बाम्हन जाति मान मद भारी । स्वामी तुम ने लीन्ह उबारी ॥
अब मैं अपनी बिधी बताऊँ । स्वामी सुनिये चित कर भाऊ ॥
चमकै बीज अरु गगन दिखाई । अंदर स्वाबी फैलत जाई ॥
पाँच तत्त रँग भिन भिन देखा। कारा पीरा सुरख सपेदा ॥
और जंगाल रंग तेहि माईं । येहि बिधि पाँचौ तत दरसाई॥
ता से सुरति भिन्न होइ खेली । तेहिं के आगे चली अकेली ॥
सहस कँवल से न्यारी जाई । सेत दीप द्वारे के माईं ॥
ता से चली निकर होइ न्यारी। देखा सब ब्रह्मंड पसारी ॥
नैनू यह बिधि बिधी बताई। तुलसी सन्मुख जाइ सुनाई ॥

तुम्हरी कृपा और कछु पैहौं। पुनि चरनन में आनि सुनैहौं ॥
हम जड़ जीव बिद्या के माते। बाम्हन जाति बुद्धि में राते ॥
पढ़ि पढ़ि कै हम जनम गँवावा। संतन सन्मुख राखि दुरावा ॥
मैली बुद्धि ज्ञान मति छोटा। संतन से मन राखा मोटा ॥
ता से बिधी भेद नहिं पाई। अब स्वामी तुम सब दरसाई ॥
तुम्हरी कृपा नजरि बिधि सारी। बिधि बिधि देख परो गति न्यारी

॥ स्यामा उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

तब स्यामा बोला अति दीना। मन बुधि चित चरनन मैं लीना
तुलसी स्वामी मैं बलिहारी। तुम्हरे चरनन में सुख भारी ॥
जिन जिन तुम्हरे चरन निहारा। सो सो उतरे भौजल पारा ॥
जो जो चरन और कोउ धरिहै। भौ के माहिं कधी नहिं परिहै ॥
ये मोरे मन सत कर भासा। तुम्हरे चरन छूटि जम फाँसा ॥
हे दयाल तुम किरपा कीन्हा। मेरी सुरति करी लौलीना ॥
होत उजास जोति हिये माईं। छिन छिन सुरति ताहि में लाई
जोति फाड़ सूरति गइ आगे। मानो सुरति द्वार पर लागे ॥
द्वार बैठि देखा हिये माईं। चंद और सुरज गगन सब छाईं
घट में देखा अगम बिलासा। सो सब भाखूँ तुम्हरे पासा ॥
अब आगे जो परचा पाऊँ। पुनि चरनन में आनि सुनाऊँ
स्वामी हमैं दया नित कीजै। निस दिन चरन सरन रखि लीजै
स्वामी हम ने अपति बिचारी। तुम दयाल कछु मन नहिं धारी
हम ने टहल कछू नहिं कीन्ही। तुम ने वस्तु अमोलक दीन्ही ॥
सास्तर नाहिं न बेदन माहीं। और पुरान येहि जानत नाहीं
ब्रह्मा या को अंक न चीन्हा। येहि बिधि औतारन से भिन्ना
आतम ब्रह्म से यह गति न्यारी। चीन्है कोइ कोइ संत सँवारी ॥
संत चरन जोई जिव जाना। ता का आवागवन नसाना ॥

संत चरन जो चीन्है नाईँ । पुनि पुनि चौरासी भरमाईं ॥
अस अस समझि परा यह स्वामी। सो दयाल किरपा से जानी ॥
संतन की गति अगम अपारा । हम पंडित लघु पावँ न पारा ॥

॥ माना उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

माना कहै जोर दोउ हाथा । चरनन माहिँ डारि कै माथा ॥
स्वामी हम कीन्ही अजगूती। मारन काज कीन्ह मजबूती ॥
तुम दयाल कछु स्वाल न भाखा। मन से द्रोह कछू नहिँ राखा ॥
हम औगुन कहि कर कर भाखा। तुम स्वामी चित कछू न राखा ॥
लड़का कपूत बाप देइ गारी । पितु औगुन तेहि नाहिँ बिचारी
तेहि समझाइ मिठाई दीन्हा । पुनि पुनि ताहि बोध कर लीन्हा
येहि बिधि भाँति भई गति मोरी। स्वामी से कीन्ही बरजोरी ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी माना मनहिँ बिचारी । ये बिधि होति आइ जुग चारी
संत जगत दोऊ के माईं । येहि बिधि आदि अंत चलि आई
अब या का बरतंत सुनाऊँ । बिधि दृष्टांत बहुरि दरसाऊँ ॥
संत जगत-तारन बतलावैँ । जग पुनि उन को मारन धावै ॥
परमारथ की राह बतावैँ । सब जग उनको निंदा लावै ॥
साधू जीव करैँ उपकारा । जिव मत-हीन उन्हीँ को मारा॥
जस बालक फुड़िया दुख माईँ । माता चहै नीक होइ जाई ॥
पकि फुड़िया बालक दुख पावै । माता फोड़न ता को चावै ॥
बालक माता मारन धाई । वो जानै मो को दुखदाई ॥
माता कहै नीक होइ जावै । तब मोर हिरदा माहिँ जुड़ावै ॥
माता सुख उपकार बतावै । बालक के मन मैँ नहिँ आवै ॥

बालक बुधि जग रीती जाना । माता अस मत संत बखाना ॥
ये दुख का उपकार बतावैं । वे पुनि उन को मारन धावैं ॥
ऐसी संत जगत की रीती । या में तुम का करी अनीती ॥
ता का इक दृष्टांत बताऊँ । हाथी ऊपर नकल दिखाऊँ ॥
हाथी की बिधि बरनि सुनाई । माना सुनिये मन चित लाई ॥
हाथी का इक बन रहै भाई । तहँवाँ हथिनी अनेक रहाई ॥
ता में गज मकरंद रहाई । ता की बिधी सुनौ तुम भाई ॥
गज मकरंद की बिधी बताई । सब हथिनी सँग रहै बनाई ॥
दूजा हाथी रहै न लारै । दूजा देखि प्रान से मारै ॥
सब हथिनी सँग आप रहाई । दूजा बन में रहन न पाई ॥
हथिनी ब्याई तेहि को देखै । नर बच्चा होइ मारै जे कै ॥
बच्चा नारी जो कोइ होई । ता को नहिं मारै पुनि सोई ॥
नर को देखि प्रान हरि लेई । मादी देखि बोल नहिं तेही ॥
नर बच्चा जहँ रहन न पाई । यह बिधि आपु रहै बन माईं ॥
सब हथिनी में आप रहाई । दूजा हाथी रहन न पाई ॥
सब हथिनी मिल कीन्ह बिचारा। ये तौ बूढ़ भया तन सारा ॥
हाथी बच्चा रहन न पावै । जो उपजै तेहि मारि गिरावै ॥
बूढ़ भया येहि छूटै प्राना । पुनि फिर अपना कौन ठिकाना
सब हथिनी मिल कीन्ह बिचारा। ये बिधि बच्चा होइ उबारा ॥
वा बन में इक साध रहाई । बच्चा ले राखौ तहँ जाई ॥
साधू दयाहीन नहिं होई । वो पालै पुनि वा कौ सोई ॥
यह कहि हथिनी कीन्ही आसा। बच्चा डारि कुटी के पासा ॥
साधू देखि दया अति आई । बच्चा लीन्ह कुटी के माईं ॥
दया जानि तेहि पालन कीन्हा । मोटा भया जाति को चीन्हा
चल्यौ जहाँ सब हथिनी ठाहीं । गज मकरंद देखि तेहि भाई ॥
सनमुख जुद्ध भया तेहि जाई । ये जवान वो बूढ़ा भाई ॥

गज मकरंद को मारि गिराई । पुनि हथिनी में आप रहाई ॥
पुनि बच्चा ये कीन्ह बिचारा । वोहि साधू ने मोहिं उबारा ॥
साधू मारि मिटाऊँ ख्यालै । मो सरिखा दूजा नहिं पालै ॥
सो पुनि मोरा बैरी होई । ता से साधू मारौं सोई ॥
यह बिचारि साधू को मारा । ये बिधि माना यह संसारा ॥
वो साधू बच्चा को पाला । सो पुनि भया ताहि का काला ॥
दया जानि उन किया उबारा । वे बच्चा साधू को मारा ॥
साधू जग को ये बिधि जाना । येहि बिधि चारौ जुग परमाना
काल बुद्धि सब जग के माहीं । संत दया बिधि मानै नाहीं ॥
वे दयाल बिधि दया बिचारा । कोइ कोइ जीव होइ उपकारा ॥
सब जग जीव काल मुख माईं । कोइ कोइ जीव निकस पुनि जाईं
सुनु माना जग का ब्यौहारा । आदि अंत अस रचा पसारा ॥
या में तुम को दोस न भाई । आदि अंत ऐसै चलि आई ॥

॥ माना उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुम दयाल पूरे हौ स्वामी । जीव काल बस तुम्हैं न जानी
तुम परमारथ राह बताई । जग कर्मी स्वारथ को धाई ॥
अब स्वामी इक अरज बिचारी । मैं तुम चरनन की बलिहारी
जो कछु बस्तु आप ने दीन्हा । ता बिधि भाखि सुनाऊँ चीन्हा
नील सिखर होइ सूरति जाई । स्याम सिखर के पार समाई
सातौ दीप सेत के पारा । जहँ होइ पहुँचे गगन अधारा
तहँ पुनि सैल सुरति से कीन्हा । आतम निरखि भिन्न लख लीन्हा
घट घट देखा सब्द पसारा । सूरति चढ़ी सब्द की लारा
सुरति सब्द मैं जाइ समानी । जस जस भई सो भाखि बखानी
जब स्वामी तुम दाया कीन्हा । बस्तु अगम को हाथै दीन्हा
अनेक जन्म ये देह सिराती । पुनि मरते कहुँ हाथ न आती

मैं पुनि सतगुरु तुम को जाना । तुलसी सत सतगुरु कर माना
जस जस सतगुरु की जस रीती । तस तस मोरे भइ परतीती

॥ श्लोक ॥

मूकं करोति बाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम् ।
यत् कृपालमहं बंदे, परमानंद माधवः ॥१॥
द्वै द्वै लोचन सर्बानां, विद्या त्रय लोचनं ।
सप्त लोचन ज्ञानीनां, भगवान अनंत लोचनं ॥२॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी परम दयाल, काल कँवल स्रुति भिनि भये ।
माना मरम निहाल, को कृपाल तुलसी बिना ॥

॥ चौपाई ॥

माना के मन होस निकारी । तुलसी चरन सरन गति सारी ॥
स्वामी तुलसी सतगुरु दाता । अगम निगम का किया बिख्याता
सतगुरु सत्त सत्त हम जाना । सतगुरु बिना न मिलै ठिकाना ॥
बिन सतगुरु पावै नहिं कोई । बिन सतगुरु सब गये डुबोई ॥
तुम सतगुरु मोहिं राह लखाई । आदि रु अंत नजर में आई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी परम दयाल, तुम स्वामी दाया करी ।
छूटा भ्रम दुख जाल, कहि दयाल बिधि सब लखी ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि माना सीख जो मंगी । नैनू स्यामा तीनौं संगी ॥
सीस टेक डंडवत कीन्हा । चरन छुए पुनि मारग लीन्हा
तीनौं पंडित मारग जाही । कीन्हा गवन भवन की राही
पुनि गुनुवाँ आया तेहि बारा । किया प्रनाम डंडवत सारा ॥

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

गुनुवाँ पूछै तुलसी स्वामी । एक बिधी मैं कहूँ बखानी ॥
जीव राह की जुगत बताही । ता से छूटै जम की राही ॥

तुम दयाल सतगुरु हौ स्वामी। जा से होइ जीव कल्यानी ॥
ये भौजाल जगत ब्यौहारा। ता मैं जीव कर्म बस डारा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु गुनुवाँ यह जम की बाजी। जग संसार यही में राजी ॥
पंडित और समझै नहिं काजी। ये सब झूठ काल से राजी ॥
इन की बात न चित पर दीजे। ये सब पाप पुन्य मैं भीजे ॥
संत चरन की आसा कीजे। संत सरन मुक्ती करि लीजे ॥
ये जग में कछु नाहिन भाई। सुम्र जगत जिव भौ भरमाई ॥
राम कृष्न दोऊ बटमारा। सिव ब्रह्मा मिलि फाँसी डारा ॥
या से संत राह धरि लीजे। उन कि कहनि चित से नहिं दीजे

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

चरन बंद तुम्हरी सरनाई। ये सब झूठ समझ में आई ॥
मोरे चित का भर्म उठावा। जब से चरन सरन में आवा ॥
हिरदे मोहिं बिधी समझावा। भर्म भाव बिधि सबहि बतावा ॥
अब प्रभु कृपा दृष्टि मोहिं कीजे। जीव सरन अपना करि लीजे ॥
मैं तौ स्वामी तुम को पाये। तुम्हरे चरन सरन चित लाये ॥
अब कोउ बात बिधी नहिं भावै। सूरति तुलसी चरन समावै ॥
अब कछु राह मोहिं को दीजै। यह गुनुवाँ अपना करि लीजै ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जब वहि को कछु राह बताई। गुनुवाँ सीस चरन तर नाई ॥
सुनु गुनुवाँ यह बिधी बताई। मन थिर करौ गुनौ[1] मत भाई ॥

(१) मन में गुनावन न उठने देव।

सूरति सोध कँवल में राखै। नित प्रति सुरति दृष्टि होइ ताकै।
येहि बिधि रहै दिवस और राती। गुनुवाँ गुनन करै मत भाँती

॥ सोरठा ॥

सुनु गुनुवाँ यह बात, बिधि बिचार गुप्त रहै।
कहै न काहू साथ, येहि बिधि मन मँ बसि रहै॥

॥ चैापाई ॥

चरन लाग मारग कै लीन्हा। घर को सुरति गवन जिन कीन्हा॥

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चैापाई ॥

स्वामी हम को नाहिं विसारी। नेक सुरति हमहूँ पर डारी॥
हम को अपना दास बिचारै। अस जानि मोरी ओर निहारै

॥ वचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास बिधि करै बिचारा। बिन चैाके नाहीं निरवारा॥
चैाके की बिधि करै बनाई। जब सूरति अपना घर पाई॥
सूरति से नरियर को मोड़ै। हाथै से नरियर नहिं फोड़ै॥
सुरति पान पर बीरा खावै। बरई बीरा दूरि बहावै॥
तीनि गुनन का तिनुका तोड़ै। बासन पाँच इंद्री को मोड़ै॥
और कहाँ लगि बिधी बताऊँ। ये चैाका बिधि औरै गाऊँ॥
जग चैाके को दूरि बहावै। सत चैाका हिरदे मँ लावै॥
जग चैाके की झूठी बाता। सत चैाका संतन रस माता॥
जो चैाका संतन ने जाना। सोइ कबीरदास पहिचाना॥
सो चैाका तुम को बतलैहैाँ। ता से राह अगम की पैहै॥
जो कबीर ने राह बताई। सो चैाके की कहैाँ बुझाई॥
जो कबीर राह बिधि गाई। सोई राह संत बतलाई॥
संत कबीर ये अंतर नाईं। या बिधि से कोइ भर्म न लाई

सूरति चढ़ै संध जो पावै । सो कबीर सम चित मैं लावै ॥
वा मैं भिन्न भाव कोइ लैहै । कर्म भाव बिधि नरकै जैहै ॥
कहै कबीर ने अगम सुनाया । और संत नहिं वहँ से आया ॥
कहै कबीर अविगति से आये । और संत वो घर नहिं पाये ॥
ऐसी बिधि कोइ मन में आनै । तो पुनि परै नर्क की खानै ॥
भेषी पंथ संत ये नाईं । आदि अंत सो संत कहाई ॥
आदि संत सब वहिं से आये । भेष पंथ मैं वे नहिं पाये ॥
भेष पंथ में ढूँढ़ौ भाई । या से तुम को नजर न आई ॥
अंदर की आँखी से देखौ । तब पुनि संत नजर से पेखौ ॥
तुम को नजर कहाँ से आई । चौका पंथ माहिं उरझाई ॥
चौका पंथ को दूरि बहावै । तब वो राह नजर मैं आवै ॥
चौका पट्टा हाट बजारा । या से परै कर्म की लारा ॥
संतन का चौका बिधि न्यारा । ये सब जानौ हाट बजारा ॥
संतन का चौका बिधि गाऊँ । संत कृपा से समझ बताऊँ ॥
सुरति मोड़ नरियर को फोड़ौ । अगम पान चढ़ि धनुवाँ तोड़ौ ॥
राह विधी कोइ संत बतावै । जीवत अगम बस्तु को पावै ॥
तुलसी कहि इक सब्द लखाऊँ । ता मैं सब चौका बिधि गाऊँ ॥
फूलदास तुम सुनियौ काना । बिधि चौका का सब्द बखाना ॥

॥ जैजैवंती ॥

एरी लै आज तो अधर घर आई, तुलसी चढ़ि देखिया ॥टेक॥
सूरत दृग दौड़ अटारी, हिये हेर लखा पिउ प्यारी ।
सारी तो लै हेरि निहारी, प्यारा लै सँग पेखिया ॥१॥
नरियर को मोड़ा जाई, प्रिये बास सुगंध उड़ाई ।
बीरा पान पाये आई, सुगंधी महकाइया ॥२॥
मेवा आठ पुरुष लखि जानी, स्रुति हेर हिये उड़ानी ।
सब्दारस भई रंग रानी, हरखानी पिउ पाइ कै ॥३॥

पलँगा पर जाइ पौढ़ी, धन धन सुख की घड़ी।
अटारी महलन चढ़ी, प्यारा पिउ लेखिया ॥४॥
फूलदास दृग पर चौका, परवाना छाँड़ौ धोखा।
नरियर सुरति से मोड़ौ, तोड़ौ असमान को ॥५॥
तुलसी लखि सूरति जाई, चौका परवाना याही।
बसि तिल हिरदे बिच आई, चढ़ी द्वारा पाइ के ॥६॥
रेवतीदास को समझावा, फूलदास दोऊ लख पावा।
कँवला में सुरति लखाई, तुलसी बिधि पाइ कै ॥७॥
इंद्री पाँच बासन मोड़ा, गुन तीनि तिनुका तोड़ा।
पोढ़े तिनुका बासन छूटै, झूठे जग लूटिया ॥८॥
तुलसी कबीर बखाना, सो चौका बिधि हम जाना।
पूछै कोइ चित ब्रत आई, ता को दरसाइया ॥९॥
पत्र कदली छेदा जाई, जहँ सेत चदरवा तनाई।
तुलसी बिधि कहि समझाई, संत जनाइया ॥१०॥

॥ दोहा ॥

फूलदास चौका बिधी, सुरति नारियर मोड़।
पान अमर बीरा लखौ, चखौ अधर रस और ॥
रेवतीदास तुमहूँ लखौ, नरियर निरत निहार।
निज अकास पर पान है, बीरा है निज सार ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास अस सुरति लगाई। नरियर माहिँ पंथ सोइ राही ॥
येही पंथ की राह जो पावै। पंथ कबीर ताहि कर नावँ ॥
येही पंथ सुरति से लावै। अगम अगोचर घर को पावै ॥
सूरति सैल करै असमाना। निज घर पहुँचै जाइ ठिकाना ॥
या बिधि पंथ संत दरसावै। तब सत सुरति समझ घर आवै ॥
आद रु अंत पंथ पद जाना। भाखै सतगुरु संत बखाना ॥

सतसँग करै बूझ जब आवै। सूझै मत सतसंगत पावै॥
जिन जिन चरन बिधी बिधि जाना। सो गुरुमत जानौ परमाना॥
पंथी राह रीत सब छूटै। मन की मान मनी सब टूटै॥
दीन होइ कर सेवै संता। जब लखि परै अगम पद पंथा॥
जस कबीर ने भाखा चैाका। सो बिधि करौ मिटै जम धोका॥
उन कहि बिधि जो बूझ बिचारै। सो घर पुनि पद पार निहारै॥
संत गूढ़ मत गुप्त पुकारै। बूझै सतगुरु सब्द सुधारै॥
जो कछु कही उलट बिधि बानी। सो बिन समझ बूझ ना जानी॥
सब्द साखि सो भाखि सुनावै। बिन सतगुरु कछु हाथ न आवै॥
सतगुरु मिलैं बतावैं भेदा। जब जम जाल मिटै मन खेदा॥
संत बाग बन अंड पुकारा। सोइ ब्रह्मंड बाग बन सारा॥
तन मन बृच्छ देखि दृग अंडा। चढ़ कर सुरति निरखि नौखंडा॥
जो अंडे बिच बाग बखाना। देखा सुरति समझि असमाना॥
बाग बृच्छ बेली पर अंडा। सतगुरु सुरति बतावै डंडा॥
ये मन खलक खान बिच डारा। पाँच पचीस तीनि तेहि लारा॥
अब या का सुन सब्द लखाऊँ। बृच्छ बेलि अंडा अरथाऊँ॥
उलटाबसी जो कही कबीरा। रमज रेखता में मत धीरा॥

॥ रेख़ता ॥

अली इक बाग बन खंडा। लगे बृछ बेलि पर अंडा॥१॥
अजब इक फूल पचरंगा। भँवर बसै बास के संगा॥२॥
अगर सब लोग फल खावैं। स्वाद बस रैन रहि जावैं॥३॥
फले फल दाख के पेड़ा। रहत जेहि भूमि पर भेड़ा॥४॥
भेड़ा रहै बाग में अली जा। काढ़ि नित खात कालेजा॥५॥
वोही मन बीच में राजै। गरज सब सूरमा भाजै॥६॥
कहूँ कोइ रहन नाहिं पावै। सकल बन जीव चरि जावै॥७॥
कहूँ उनमान बल केरा। बनी बिच जीव सब घेरा॥८॥

सुनौ अब तोल तन केरा । नहीं त्रय लोक में हेरा ॥९॥
अली एक बात अनतोली । सुनो सब संत की बोली ॥१०॥
कहै दस सीस वोहि केरा । पाँउ पचबीस तन हेरा ॥११॥
अली मुख तीनि से खावै । अजब येहि बात में आवै ॥१२॥
तरँग तन बीच में भावै । समझ दस सीस पर लावै ॥१३॥
अरी थिर थोव नहिं जाना । रहे भ्रम भाव रस खाना ॥१४॥
अली जिन अंड को फोड़ा । सुरति निज नैन से जोड़ा ॥१५॥
मुवा मन भाव का भेड़ा । चले सत नाम चढ़ि बेड़ा ॥१६॥
तुलसी तब बूझ में आई । अगम सब समझ दरसाई ॥१७॥
लिये सत संत के चरना । बिधी बरतंत सब बरना ॥१८॥

॥ चैापाई ॥

फूलदास दिल समझ बिचारो । अस अस भेद कबीर पुकारो ॥
मन पचबीस पाँच सँग भूला । गुन तन बृच्छ बसै सहि सूला ॥
बेली सुरति अंड पर लागी । दिल दुरबीन चीन्ह सोइ भागी
मन कर भर्म भूल थिर थावै । थिर कर सुरति निरनि तत तावै
नित नित ऐनक आँखि दिखावै। लिखि कागद पर अच्छर पावै ॥
निःअच्छर निरनै गति न्यारा । निरखि संत सो करै बिचारा ॥
रेवतीदास रमज रस बूझा । जिन जिन को संतन मत सूझा॥
ये मन काल बड़ा बल भूता। पाँच पचीस संग मजबूता ॥
तीनि गुनन तन मन बिच राजै। चल कर स्रुति मन बिषरस साजै
ता से थिर करि सुरति लगावै । कंज कँवल बिधि बिच ठहरावै॥
पल पल सूरति सिखर निहारै। लील गिरी पर समझि सिधारै॥
रबि रज किरनि गगन के पारा। सूरति सतगुरु ऐन निहारा ॥
सिखर निकर नभ द्वारे माईं । सेता सहर अटारी जाई ॥
स्याम कंज स्रुति दूर बहाई । द्वैदल कँवल केल हिये आई ॥
सरवर गिरजा गुरुपद माईं । कंज कँवल तज पदम सुहाई ॥

लघु दीरघ दल चारि बिराजै। सतगुरु सुरति मीन जहँ राजै॥
फूलदास ये लखि लखि बैना। सूरति द्वार पार की सैना॥
या से परे आदि घर न्यारा। या से अंत संत दरबारा॥
जिन सतगुरु की सैन बिचारी। सो गति बूझै अगम अपारी॥
ये मत संत पंथ नहिं भेषा। खोज खोज पचि मुए अनेका॥
सुरतवंत गुरु सैन लखावै। सो चेला सतगुरु से पावै॥
पद्म मध्य सत सतगुरु धामो। सूरति सिमटि सब्द अलगानो॥
जिमि सागर बागर भया सिंधा। सरिता समुंद मिलै जिमि बुंदा॥
अस सूरति सिष सतगुरु पासा। सब्द गुरू मिलि किया निवासा
गुरु सिष सार धार इक जानी। ज्यौं जल मिलि जल धार समानी
अस अस खोज करै कोइ भाई। नित हित संत चरन लै लाई॥
तन मन धन संतन पर वारै नित नित सतसंगति की लारै॥
दास भाव सतसंगति लीना। दीन हीन मन होइ अधीना॥
चित्त भाव दिल मारग चावै। सब साधन की टहल सुहावै॥
ये बिधि भाँति रहै रस लाई। तब सतगुरु सत दया लखाई॥
द्वारा दृग दुरबीन लखावै। कंज स्याम ता समझ सुनावै॥
ता मैं समुँदर सोत अपारा। ता मैं लील पीत सम द्वारा॥
सूरति समझि बूझि जहँ आवै। गज गिरजा तहँ आसन लावै॥
निस दिन रहै सुरति लै लाई। पल पल राखै तिल ठहराई॥
या मैं सुरति नेक नहिं बिसरै। छिन छिन मन से न्यारी पसरै॥
येहि विधि जतन करै कोइ लाई। सूरति रहै द्वार पर छाई॥

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास कहै अंतरजामी। अगम बस्तु दीन्हो सहदानी॥
सुनी न भेष पंथ के माईं। अजर पंथ मो को दरसाई॥
मो को कीन्ह सनाथी स्वामी। आदि अलख की दीन्ह निसानी।

अब तौ रहौँ चरन लौ लाई । जो कबीर सो तुलसि गुसाँई ॥
जो कबीर बिधि भाखि बताई। सो सो सब तुलसी पै पाई ॥
तुलसि कबीर एक कर जाना। दूजा भाव न मन मैं आना ॥

॥ दोहा ॥

तुलसि कबीर ये एक गति, दूजा कहे अचेत ।
दोनौँ स्वामी एक रस, मोर चरन से हेत ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी बिधि पहिचानि कै, दीन्हा पंथ लखाइ ।
सुरति बाँधि असमान पर, निज घर पहुँचे जाइ ॥

॥ छंद ॥

तुलसी बिधि गाई अगम लखाई। फूलदास बिधि राह लई ॥१॥
रेवती अति दासा सुरति निवासा। तिल मैं बासा जुगति सही ॥२
राती और दिवसा छिन छिन बासा। सुरति अकासा निरति रही॥३
मन सूरति लागी नेक न भागी । निस दिन जागी ठहर तहीँ ॥४
रेवती और फूला स्वामी अनुकूला । सूल बंध सब काटि दई ॥५॥
मनहीँ बुधि पाई भूल नसाई । स्वामि सहाई बाँह गही ॥६॥
मन के भ्रम भागे थिर होइ लागे। कछु अभिलाषा नाहिँ रही॥७
मन की बृत चेती छाँड़ि अचेती। सेत द्वार पर लागि रही ॥८
तुलसी कहि कहिया अगम लखैया। चरन पाइ सुति पागि रही।.९

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुनु बात, संत चरन अति अगम गति ।
सत मत गति पद सार, ये अगार गति को लखै ॥१॥
कोइ जानै सुति सार, सब्द लार लै पार रहि ।
सिंध बुंद सुति धार, मिलि अगार अद्‌बुद भई ॥२॥

सम्बाद साथ गुसाँईं प्रियेलाल के

॥ चौपाई ॥

नाम जाति इक अग्गरवाला । कहैं नाम तेहि सुरति गुपाला ॥
जिन के गुरू गुसाँईं आये । प्रियेलाल अस नाम रहाये ॥
उन उनके घर किया निवासा । सुन सोइ बात दरस अभिलासा
जिन पुनि सुनी हमारी बाता । दोऊ चले दरस को साथा ॥
प्रियेलाल और सुरतिगुपाला । आये लिये हाथ में माला ॥
आये कीन्ह डंडवत बैठे । प्रीति उठी तुम दरसन भैंटे ॥
कहै तुलसी किरपा तुम कीन्हा । दास जानि प्रभु दरसन दीन्हा
अपन जानि प्रभु भयउ दयाला । स्वामी बिन किरपा को पाला

॥ प्रियेलाल उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल कहै भये प्रसन्ना । भीतर प्रेम मगन प्रिये मन्ना ॥
स्वामी दुरलभ दरस तुम्हारे । संत दरस बड़ भाग हमारे ॥
नगर नारि सब यों बिधि भाखा । सो बिधि तो हम एक न ताका ॥
सब मिलि कहैं नगर के माईं । उन दरसन नहिं जावो भाई ॥
बेद पुरान एक नहिं जानै । राधा कृष्न राम नहिं मानै ॥
गंगा जमुना कछू न राखै । कछु नहिं आदि अंत को भाखै ॥
सब जग मिलि ये कहत बनाई । सो बिधि सुनि हमहूँ चलि आई ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहि तुलसी उन संत सत कहिया । मैं मति-हीन बुद्धि नहिं रहिया ॥
मैं तौ सब चरनन कौ दासा । मैली बुद्धि नीच मोरी आसा ॥
तुम्हरे चरन मोर निरबारा । पकरि हाथ करिहौ निस्तारा ॥

मैं औगुन की खानि अपारा । सूरति संत चरन की लारा ॥
मोर निबाह तुम्हारे हाथा । अब तौ लगौ चरन के साथा ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी अस अस कस भाखौ। हम जग जीव चरन मँ राखौ ॥
काम अरु क्रोध लोभ के माते। बिप रस भोग फिरै सँग साथे ॥
ये जग जाल काल दिन राती। कर्म भाव भरमै सँग साथी ॥
हम चहले के जीव अनीती । छूटे तुम चरनन की प्रीती ॥
श्रीभगवान जी कहत पुकारा। मैं तौ सदा संत की लारा ॥
गीता मँ अरजुन से भाखा । मो से बड़ा संत को राखा ॥
श्रीमुख ऐसे आप बखान्यो । मो से अधिक संत को जानो ॥
मो को संत भाव रस नीका । जगत भाव रस लागै फीका ॥
श्रीमत मँ अस कहत बखानी। भागवत मँ ऊधो से बानी ॥
स्वामी तुम सा संत सुजानो। हम निस्तार चरन मँ मानो ॥
संतन की गति बेद पुकारा। नेतहि नेत न पावै पारा ॥
महातम सब सब मिलि भाखा। सब से बड़ा संत को राखा ॥
मैं स्वामी इक पूछौं बानी। किरपा करि भाखौ सहदानी ॥
दास भाव पूछौं मैं स्वामी । या मँ भेद भाव नहिं जानी ॥
पहिले जग कै बेद बनावा। यह रचना कौने बिधि आवा ॥
जीव कहाँ से आया कहिये । केहि बिधि कर्म माहिं भौ रहिये ॥
जीव मुक्ति कैसे करि पावै। अपने घर को केहि बिधि जावै ॥
माया मोह जगत अँधियारा। और अज्ञान काम की लारा ॥
ऐसे जीव छुटन नहिं पावै। अपने घर को केहि बिधि जावै ॥
अपना ज्ञान न सतसँग मानै। गुरु बिन राह कौन बिधि जानै ॥
सतगुरु मिलै तो बाट बतावै। जब कोइ जीव मुक्ति को पावै ॥
गुरु सम बड़ा और नहिं कोई। ये भगवान कही मुख सोई ॥

गुरु द्रोही पातक का मारा। कधी न उतरै भौ के पारा॥
गुरु बिन कर्म नास को करई। भर्म माहिं भौजल में परई॥
गुरु से बड़ा और नहिं रहिया। वेद पुरान संत अस कहिया॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै ये सत्त बखाना। अस अस वेद पुरान न जाना॥
ये तुम भाखा सत्त प्रभावा। वेद पुरान येही बिधि गावा॥
पुनि संतन कछु और बखाना। सतगुरु मता भिन्न करि जाना॥
जगत गुरू कंठी गहि बाँधा। ता को गुरू कहौ पुनि साधा॥
ये ब्यौहार गुरू जग सोई। मुक्ति गुरू कोइ औरै होई॥
ये तो गुरू जगत ब्यौहारी। इन से मुक्ति न होइ बिचारी॥
कर्म जाति देही गुरु करई। कर्म भोग इन से नहिं टरई॥
गुरु है आप करम के माँई। चेला को कैसे मुक्ताई॥
गुरु की करनी गुरु सोइ पावै। चेला आप कर्म भुगतावै॥
जगत गुरू जिव पार न पावै। वो गुरु संत और गोहरावै॥
कनफूका गुरु नहीं कहाई। गुरु दयाल की औरै राही॥
वे दयाल गुरु समरथ दाता। जग भौजाल पार के करता॥
गुरु है सब्द सुरति है चेला। चीन्है गुरु चेला सोइ मेला॥
वे गुरु स्वामी अगम अपारा। पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारा॥
ता के रूप रेख नहिं काया। वे गुरु मिलैं तो मुक्ति लखाया॥
ये तो गुरू कर्म की लारी। आप न तरे और कहा तारी॥
ये जानौ ब्यौहारी नाता। लेन देन पैसे के साथा॥
खान पान चेला से माँगै। गर्भ बास कर देने लागै॥
चेला जानि जाहि सौं लेई। पुनि पुनि ताहि भोग करि देई॥
पुत्र बैल घोड़ा होइ ऊंटा। सो बिन दिये कोऊ नहिं छूटा॥
ये गुरु लेन देन ब्यौहारा। गुरु चेला भौ कर्म पसारा॥

कंठी बाँध गुरू सोइ भइया । जग ब्यौहार नात यहि कहिया ॥
जग मैं कन्या क्वारी ब्याही । करे ब्याह तेहि कहै जमाई ॥
ब्याह किये का नाता लागा। येहि बिधि गुरु चेला मत जागा॥
सतगुरु मत पद अगम अपारा। ता को चीन्ह जीव होइ पारा ॥
वो गुरु पंथ संतही जानै । जग गुरुवा नाहीं पहिचानै ॥
चेला बने जीव नहिं हाना । गुरु सोइ बनै कर्म की खाना ॥
ता से संतन भक्ति दृढ़ाई । बिना भक्ति उबरै नहिं भाई ॥
भक्ति बिना जिव जम करै हाना। बिना भक्ति चौरासी खाना ॥
बिना भक्ति कोइ पार न जाई। ता से भक्ति संत ठहराई ॥
गुरु सेवा स्वामी को चीन्हो। ता से सदा काल आधीनो ॥
स्वामी कठिन खोज करि पैहै। सतगुरु भेद संत समझैहै ॥
स्वामी संत बिना नहिं पावै । बिना संत गुरु को दरसावै ॥
जग के गुरू न जानौ भाई। वे सतगुरू कठिन से पाई ॥
दास बनै सतगुरु को पावै । दास बिना गुरु नहिं दरसावै॥

॥ प्रश्न प्रिये लाल ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी कहौ बुझाई । कौन बिधी सतगुरु को पाई॥
कौन बिधी स्वामी दरसावा। कौन भक्ति से सतगुरु पावा ॥
वे गुरु कहाँ कहाँ है बासा । स्वामी का कहौ कौन निवासा॥
कौन बिधी जो नजर मैं आवै। चेला कौन बिधी से पावै ॥
सो बिधि भिन्न भिन्न दरसाई। जा से चित की संसय जाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुम ने गुरु अपने को जाना । आदि गुरू मत मर्म भुलाना ॥
कंठी बाँधि ज्ञान बतलावा । भक्त भये सतगुरु नहिं पावा ॥
उन सतगुरु की राह नियारी । पावै संत चरन को लारी ॥

सतगुरु आप पुरुष हैं स्वामी। गगन कंज मद्ध अस्थानी॥
पिरथम अष्ट कँवल को बूझै। सहसदल कँवल पार होइ सूझै
ता के परे चार दल भाई। ता से भिन्न दोइ दरसाई॥
ता के आगे सतगुरु धामा। चौका मिलै गुरू परमाना॥
पारब्रह्म जो कहिये ऐसा। ता के आगे सतगुरु देसा॥
पारब्रह्म जेहि कहि गोहराई। ता ने सतगुरु भेद न पाई॥
निरगुन सरगुन दोउ से न्यारा। भिन इन से सतगुरु दरबारा॥
यह चेला वो सतगुरु पावै। वो सतगुरु सोइ कर्म नसावै॥
जहँ लगि वो सतगुरु नहिं पावै। तहँ लगि चेला निगुर कहावै॥
वो सतगुरु चौथे पद स्वामी। ता की भक्ति संत सब ठानी॥
सतगुरु फोड़ै गगन अकासा। तब पहुँचै सतगुरु के पासा॥
सो घर मिलि पहुँचै उन पासा। सो चेला सतगुरु का दासा॥
सोई घर से सब जिव आये। निरगुन सरगुन उनहिं बनाये॥
वा के पास जीव चलि जावै। सो जिव जाइ परम पद पावै॥
जहँ लगि वो गुरु नाहीं पावै। जगत गुरूसोइ निगुर कहावै॥
जगत गुरू सब निगुरा भाई। जब लगि गुरु नहिं गगन समाई॥
गुरु ने अपना गुरु नहिं पाया। चेला हाथ कहाँ से आया॥
खाना द्रव्य टका के माहीँ। सो गुरु चेला घर घर जाई॥
ज्यौं ब्योपारी हाट लगावा। ऐसे ये गुरु जग रस भावा॥
पेट काज दूकान लगाई। आप तरन की खबरि न पाई॥
कहै चेला को गुरू तरावै। अपनी तरन बिधी नहिं पावै॥
ये ब्योहार तुम्हारा भाई। सतगुरु की तुम सुधि बिसराई॥
जिन ने तन का ठाट सँवारा। जीव अंस का किया पसारा॥
किया पिंड तन रचा बनाई। सात दीप नौखंड रचाई॥
सो स्वामी है घट के माहीं। ता से जीव सकल चलि आई॥
सो स्वामी घट माहिं समाना। सबहि संत ये कहत बखाना॥

पिंड ब्रह्मंड दोऊ से दूरा । बसै पास रहै सदा हजूरा ॥
वा का भेद संत से पावै । चढ़ै सुरति छिन छिन मैं जावै ॥
दास होइ ढूँढ़ै सतसंगा । चरन संत के बाँधै चंगा ॥
जाति पाँति मोटा मन त्यागै । संत चरन में सत करि लागै ॥
गोसाँईं स्वामी पद डारै । ब्राम्हन जाति पाँति मन मारै ॥
नीचा होइ दीन पद धारै । मान और मनी करै सब छारै ॥
अस अस समझ संत को चीन्हा । संत चरन मैं होइ अधीना ॥
तब उन से मारग कछु पावै । सतगुरु संत सोई दरसावै ॥
वे कृपाल कहुँ राह बतावैं । पलक माहिं अगमन घर पावै ॥
जीवत पावै घर मैं स्वामी । मुए गये की बात न मानी ॥
जीवत मिलै सोई है लेखा । मूए भाखैं अंध अचेता ॥
वा को बेद नेत गोहराई । ब्रह्मा बिष्नु राह नहिं पाई ॥
ऋषी मुनी पुनि कहैं पुराना । सिव जोगी कोइ मरम न जाना ॥
दस औतार जगत जिव माया । निरंकार जोती से आया ॥
निरंकार हैं सोल्हा भाई । पुरुष निरंजन जोति लुगाई ॥
निरगुन निराकार निरबानी । चारो नाम काल अभिमानी ॥
चारो जुगन काल जिव चारा । सोइ जग जाल निरंजन डारा ॥
जोति निरंजन किया बिचारा । ता से उतपन दस औतारा ॥
दस औतार काल के जाना । जा मैं सगरा जगत भुलाना ॥
निरंकार काल है भाई । जा ने तीनि पुत्र उपजाई ॥
ता ने कीन्हा बेद बिधाना । सास्तर कीन्हे बेद पुराना ॥
या मैं ऋषी मुनी सब बूड़ा । जग अज्ञान जीव भया मूढ़ा ॥
देवल देव पषान पुजावै । तीर्थ बर्त सँग जनम गँवावै ॥
ऊँचे मन की राह बतावै । चारो जुग जिव खानि समावै ॥
निरंकार काल अरु जोती । डारै मारि जीव बिन मोती ॥
दस औतार काल ठग केरे । ब्रह्मा बिष्नु पुत्र जम चेरे ॥

ठग ठग मिलि सब जाल पसारा। अस नहिँ होइ जीव निरबारा
निरंकार काल अन्याई। जोती ठगनी सब जग खाई ॥
इन से न्यारा पुरुष दयाला। जहँ नहिँ पहुँचै जोत अरु काला॥
वो स्वामी संतन का प्यारा। वा घर संत करैं दरबारा ॥
निरंकार से पुरुष नियारा। सो साहिब संतन का प्यारा ॥
लोक तीन नहिं चौथे माहीं। जा घर संत करैं पाछाई[1] ॥
निरगुन सरगुन उहाँ न जावै। जोति न ब्रह्मा बिष्नु समावै ॥
दस औतार की कौन चलाई। वा घर संतन सुरति लगाई ॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल सुनु बात, संत गती न्यारी अगम।
गुन निरगुन नहिँ जोति, तिरदेवा औतार नहिँ ॥

॥ चौपाई ॥

जहाँ संत तहँ निरगुन नाईं। निरंकार जहँ जोति न भाई ॥
दस औतार जान नहिँ पावै। ब्रह्मा बिष्नु महेस न जावै ॥
जहँ नहिं बेद जहाँ नहिँ बानी। इन से पारै पुरुष अनामी ॥
जहँ संतन की सुरति समानी। वो घर अगम संत सो जानी ॥
दीन होइ संतन सरनाई। तब कछु राह संत से पाई ॥
फोड़ै गगन अगम को जाई। स्वामी सतगुरु भेँटै भाई ॥
प्रियेलाल अस बूझि विचारा। सब बिधि भाखि सोई निरवारा

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

तुम तो कहा बेद से न्यारा। अरु पुनि भाखा अगम अपारा॥
तुम्हरी कहन कोऊ नहिं ठहरा। भाखा तुम ये अगमपुर डेरा ॥
राधा कृष्न प्रिय इष्ट हमारा। तुम भाखा प्रभु और पसारा ॥
सुन कर भर्म बहुत मोहिँ आवा। तुम ने कछु कछु और सुनावा ॥
येहि बिधि वेद कहत है नाईं। सो प्रभु मुख से भाखि सुनाईं ॥

(१) बादशाहत।

हम करैं संध्या नेम अचारा। पूजा सेवा ठाकुरद्वारा ॥
और सनातन धर्म हमारा। ठाकुर भोग अछूता सारा ॥
मंदिर मैं कोइ जान न पावै। बरतन कपड़ा छुवा न जावै ॥
भोजन ठाकुर करै अछूता। करते बल हाथन के बूता ॥
और अनेक अनेक बिचारा। कहँ लगि कहैाँ सुचा निरवारा॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चैापाई ॥

ये सब बात अनीती भाखी। सुनी कान देखी नहिं आँखी ॥
ये तौ बहुत निष्ट[1] कहि भाई। कहे सुने से मन रिसियाई ॥
ब्रह्म बिभाव कर्म तुम कीन्हा। ये तौ निष्ट अनीती लीन्हा ॥
जनम अनेकन परिहैा खाना। ब्रह्म बिभाव संत नहिं माना ॥
सब मैं आतम ब्रह्म बतावौ। चेतन ब्रह्म बिभाव लगावौ ॥
तुम्हरै वेद पुरान बतावै। गीता भागवत सब मिलि गावै॥
सो तुम अपने मुख से गाई। आतम ब्रह्म एक बतलाई ॥
चर अरु अचर सब माहिं समाना। तुम्हरा सास्तर करै बखाना॥
कोउ कोउ संतन कही बुझाई। एकै ब्रह्म सबन के माईं ॥
कहि कै एक बिभाव बिचारौ। कौन बिधी ये ज्ञान तुम्हारौ॥
पाँच तत्त नर आतम देही। एक तत्त पाहन को सेई ॥
जड़वत देख दोऊ के संगा। चेतन देख दोऊ मैं रंगा ॥
या मैं लघु दीरघ को देखा। मन अपने में करौ बिबेका ॥
इक चेतन की पूजा थापौ। चेतन एक निष्ट करि राखौ ॥
आतम चेतन निष्ट जो भइया। पाहन जड़ सुध केहि बिधि रहिया ॥
पाहन को तुम सुद्ध बतावौ। चेतन को धरि दोष लगावौ ॥
बिन चेतन सुध कैसे भइया। चेतन को तुम दोष लगइया ॥
चेतन देही तुम्हरी कीन्हा। कै पाहन तुम को रचि लीन्हा ॥

---

[1] निकृष्ट।

नादहि बिंद देह को साजा। पूजौ पाहन को केहि काजा॥
पाहन मूरति येही बनाई। गढ़ी सिलावट छाती पाँई॥
ता कै मंदिर ठाकुर थापी। चेतन ठाकुर मंदिर आपी॥
चेतन मंदिर बोलै माहीं। तुम्हरी आँखिन सूझै नाहीं॥
पाहन प्रेम जाइ सिर फोड़ा। मंदिर बोलै आतम तोड़ा॥
ऊपर न्हाइ अचार जो कीन्हा। अंदर मन मैला नहिं चीन्हा॥
न्हाइ जो धोइ रसोई कीन्हा। सुचि भोजन ठाकुर को दीन्हा॥
सुचि ठाकुर को भोग लगाई। माखी ता पर बैठी आई॥
माखी का कछु कीन्ह बिचारा। उठि बैठै भिष्टा की लारा॥
यही अचार करौ तुम भाई। माखी की चौकस नहिं लाई॥
दस औतार भये सब भाई। ता में तीन प्रतच्छ दिखाई॥
मच्छ कच्छ कहि और बराहो। ये प्रतच्छ पूजौ नहिं भाई॥
मुख से दस को भाखि सुनावौ। छाँड़ि प्रतच्छ तुम जड़ को ध्यावौ॥
यह अपने मन बूझौ ज्ञाना। सत अरु असत करौ पहिचाना॥
या में भाव अभाव न जानी। सत असत्त लखि पद पहिचानी॥
या में निंदा भाव न भाखी। सब संतन की देखौ साखी॥
निंदा आहि नरक की खाना। मिथ्या संत न करैं बखाना॥
प्रियेलाल कछु बूझि बिचारी। ये तुम ने कछु समझ सिहारी॥
पाँच तत्त बैराट बनाई। ता में सब ब्रह्मंड समाई॥
पाँचो तत्त सरीर बिधाना। सोइ बेराट कहौ भगवाना॥
पिंड ब्रह्मंड एक करि राखौ। पुनि निंदा करि कस कस भाखौ॥
जो ब्रह्मंड में बिधी बताई। सो सब भाखौ पिंड के माईं॥
रज गुन तम गुन सत गुन भाई। ये सब ब्रह्मा बिष्नु कहाई॥
गो इंद्री गोपिन कर नामा। मन को मोहन सभी बखाना॥
राधे रकार नाम समझाऊँ। पिंड पाँच पंडो बतलाऊँ॥
मन द्वै दृष्टि लीन यहि माईं। सोइ दो दृष्टी भाखि सुनाई॥

अरजुन बिधी बात समझाई । इंद्री अड़ी जो बन मन माईं ॥
भौ में सैन मन करै बुझाऊँ । ता को भीमसेन बतलाऊँ ॥
भौ में असल नकल होइ गइया । ता कर नाम नकुल हम कहिया ॥
सो देह दीसै सनमुख भाई । नाद बिंद बिधि देह बनाई ॥
बिंद से बना बिंद्राबन होई । जग के माहीं रहा समोई ॥
बसै देव इंद्री के माईं । मन बस देवन में रहा जाई ॥
बिषय भोग रस देव किये सारी । मन देवकी ये भौ रस डारी ॥
जो सोधै मन घर को जाई । मनहिं जसोधा नाम कहाई ॥
मन डूबा भय बल के माईं । सो बलभद्र नाम है भाई ॥
उदै कर्म मन दुख सुख माईं । कर्म उदै मन मित्र कहाई ॥
जमुना सुरति करै असनाना । सूरति चढ़ै फोड़ि असमाना ॥
जहँ जमुना जम ना अस्थाना । इंद्री गोरस कालहि जाना ॥
गोरस गोकुल जानौ भाई । येहि बिधि पिंड ब्रह्मंड समाई ॥
ये नर देह मानुष के माईं । देव ऋषी मुनि ताहि समाई ॥
अरसठ तीरथ सकल पसारा । नद्दी गंडा झारि अठारा ॥
सातौ दीप पृथी नौखंडा । तुम कहौ मनुष देह येहि पिंडा ॥
कहँ लगि कहौं अनेक पसारा । यह ब्रह्मंड पिंड माहिं सँवारा ॥
संत सुरति फोड़ै असमाना । पिंड में देखा सकल बिधाना ॥
निरखा अनुभौ मुख से भाखा । पिंड में राम कृष्न की साखा ॥
पिंड में राम कृष्न लखवाया । वा अहीर पर नकल दिखाया ॥
नकल की नकल सिलावट कीन्हा । ऐसी भूल भटक तुम लीन्हा ॥
पाहन को थापौ भगवाना । येहि बिधि बुधि मति ज्ञान हिराना ॥
येहि बिधि पिंड ब्रह्मंड समाना । ता को तुम छुतिया करि जाना ॥
संतन भाखा दृष्टि हिये आँखी । ता की बिधि भिनि भिनि करि भाखी ॥
संतन की तुम साखि मिटाओ । अँधरी आँखि भाखि समझावौ ॥
अपना पिंड न खोजौ भाई । तुम पत्थर में ढूढ़ौ जाई ॥

खोज राह तुम दूर बहाई । सूरति पाहन माहिं लगाई ॥
सूरति पाहन कीन्ही आसा । आसा अंत ताहि में बासा ॥
सब मिलि टेरि टेरि गोहरावै । ढूँढ़ै मिलै पिंड में पावै ॥
बेद पुरान माहिं बतलावै । बेद कहै तुहि तुहि समझावै ॥
भागवत कहि तुहि तुहि बतलावै। सास्तर कहै तुही तुहि गावै ॥
संत कहै तुहि तुही सुनावै। सब कहि तुही तुही करि गावै ॥
ते बुधिहीन सूझ नहिं पावै। ता से पाहन में मन लावै ॥
है परतच्छ ब्रह्म तुहि आगे। जा को छुतिया करि करि भागै ॥
भागवत सब्द ब्रह्म तुहि बोलै। बिना संत को पट्टी खोलै ॥

॥ दोहा ॥

बिन सतसँग पावै नहीं, पढ़ि पढ़ि भर्म भुलान ।
बेद भागवत पढ़न में, नहिं पावै सत सार ॥

॥ सोरठा ॥

संस्कृत बेदन माइँ, खेद खेद खानै चलै ।
संत भेद नहिं पाइ, इन सब से न्यारी कहूँ ॥

॥ छंद ॥

तुलसी बिधि भाखी संतन साखी। देखौ आँखी आप तुही ॥
तुहि बेद बतावै तुहि तुहि गावै । तुहि पुरान तुहि तुहि कही ॥
तुहि तुहि सब गाई तुही सुनाई । तुहि तुहि भौ में भर्मि रही ॥
तुहि आपा कीन्हा संत न चीन्हा। मान मनो सब दूर नहीं ॥
सूरति निृत जानी फोड़ि निसानी। ले ले निसानी अगम लई ॥
ये अगम ठिकानै सतगुरु जानै । चौथे पद गति गवन गई ॥
छूटै जम काला भौ जंजाला । लखि दयाल घर गवन भई ॥
पाहन अरु पानी झूठ बखानी। जानो जिन जिन मान लई ॥
चेतन घट माहीं घट घट वाही। बूझ सुनाई समझ सही ॥
सब झूठ अचारा घट घट प्यारा। देखा न्यारा नेक नहीं ॥
जिन बूझा लेखा अगम अलेखा । सत ब्रत देखा द्वार महीं ॥

कोइ बूझै ज्ञाना संत बखाना । अगम ठिकाना ठौर कही ॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल सुन बात, संत सुमति गति ना लखी ।
रहे बेद के माहिँ, बहे खोज आचार में ॥

॥ चौपाई ॥

सतसंगति तुम करी बनाई । तब तुम्हरी बुधि में लखि आई ॥
बेद बिधी बुधि रही समाई । नित पुरान पढ़ि पार न पाई ॥
अब तुम को सत बिधि समझावा। अभी तुम्हरी सो दृष्टि न आवा ॥
सतसँग करौ दीन मन लाई । इष्ट जो पाहन दूर बहाई ॥
कृष्न राम दोउ जम की जारा। करि करि इष्ट जगत सब मारा ॥
जा को कहौ नंद कौ लाला। सो तो है सबहिन कर काला ॥
छल बल करि कौरौ संघारे। पंडौ भगत हिवारे गारे ॥
ता से कहौ कहा तुम पैहौ। खोजत खोजत जनम गँवैहौ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्न समीपी पंडवा, गरे हिवारे जाइ ।
लोहे को पारस मिलै, तौ काहे काई खाइ ॥ १ ॥
जो कृष्न पारस हुते, लोहा पंडौ मान ।
कृष्न दरस मुक्ती मिलत, गरे हिवार केहि काज ॥ २ ॥
पंडौ चारौ नर्क को, गये युधिष्ठिर धाम ।
मित्र प्रीति भगवान की, आई कौने काम ॥३॥
कृष्न मित्र ऊधो हुते, कही एकादस माहिँ ।
कृष्न दरस मुक्ती हुती, तप कीन्ह क्यौँ ताहि ॥४॥

॥ ग़ज़ल ॥

बिंद्राबन बिंद कीन्ह सोई साँचा ।
गुसाँईं गोपी के साथ बन बन नाचा ॥१॥
गो में मन बिधा सोई गोबिंद भाई ।
मनुवाँ गोपाल मूढ़ इंद्री माहीँ ॥२॥

इंद्री बसुदेव भेव सेवै मन को।
नाद सोई नंद फंद जानै तन को ॥३॥
जिन ने तन सोधि लिया सोई जसोधा।
पंडौ तत पाँच और झूठा सौदा ॥४॥

॥ चौपाई ॥

ऊधो कृष्न मुक्ति जो देता। कीन्हौ तप केहि कारन हेता ॥
कृष्न मुक्ति नहिं दीन्ही भाई। तब ऊधो तप कीन्हा जाई ॥
अपने मित्र जो कष्ट बतावा। तप करि कै मुक्ती धौं पावा ॥
ऊधो मुक्ति मिली धौं नाहीं। तप की बिधी पुरान बताई ॥
तन छूटे पुनि कहाँ समाने। ये पुरान नहिं साखि बखाने ॥
तन छूटे की खबर न पावै। नर्क स्वर्ग धौं कहाँ समावै ॥
तन छूटे की खबर बतावै। तौ मन को परतीनी आवै ॥
मुए गये की खबर न पावा। तप और कष्ट करा सोइ गावा ॥
सत्त सत्त पावा की नाहीं। ऐसी बूझ सूझ नहिं पाई ॥
जीवत करतब सभी बतावै। मुए मिलन कोउ ना दरसावै ॥
मुए मिलन बिधि भाखै भाई। जीवत मिलन कोऊ न बताई ॥
जीवत मिलन बिधि भाखि सुनावै। तब तुलसी के मन में आवै ॥
जीवत इत से जाइ न भाई। मूए उत से आवत नाहीं ॥
ये पुरान कस कस ठहरावा। मुए गये की खबर न पावा ॥
नेक भेद उत का नहिं गावै। इत की करनी बिधि बतलावै ॥
बिन देखे जग अँधरा मानै। पूछै पंडित पढ़ै पुरानै ॥
ये सब पोल पाल कर लेखा। मिथ्या पढ़ै कहै बिन देखा ॥
देखे की हम साखी मानैं। बिन देखी कहै झूठ समानै ॥
नर्क बिधी पंडौ जो गइया। नर्क भोग पुनि कस कस भइया ॥
आगे खबर न उनकी पाई। नर्क भोग पुनि कहाँ सिधाई ॥
नर्क भोग कहौ मुक्ति सिधावा। ये पुनि खबर कौन बतलावा ॥

ऊधो तप पैस्रम[1] बतलावा । तन छूटे की खबर न पावा ॥
तन छूटे जोइ होइ सो होई । या को भेद न पावा कोई ॥
बिना कष्ट[1] मुक्ति नहिं भाई । यहि बिधि कृष्न ऊधो समझाई ॥
कर तप कष्ट इष्ट मैं नाहीं । बिन तप मित्र मुक्ति नहिं पाई ॥
तुम मुक्ती उन से कस पाई । मित्र मुक्ति दीन्ही नहिं भाई ॥
उन को साफ कही गोहराई । ये पुरान में देखौ जाई ॥
ततवर मित्र कृष्न तेहि आगे । ऊधो रोइ जप तप को लागे ॥
पूजा इष्ट तुम्हारा लेखा । कृष्न मिले नहिं सन्मुख देखा ॥
तुम मुक्ती कस कस करि लयऊ। ऊधो सन्मुख तप को गयऊ॥
सन्मुख कृष्न मुक्ति नहिं पाई। तब ऊधो तप को मन लाई ॥
पाहन नकल इष्ट को मानौ । या से मुक्ति कौन बिधि जानौ॥
या की बिधि इक साखि सुनाई । प्रियेलाल चित से सुनु भाई ॥
जेहि बिधि करज साह से लावै। साह मिलै तबही कछु पावै ॥
ता की बिधी बताऊँ गाई । सुनियो नकल इष्ट की भाई ॥
दिवस एक साह चले गाँई[2] । अरज असामी कीन्ह बनाई ॥
तुम तौ चले गाँव को भाई। गरज हमारी कैान चलाई ॥
सेठ नकल अपनी लिख दीन्हा। कागद मूरत अपनो चीन्हा ॥
मूरत नकल से कारज कीजौ । चाहैा सोई नकल से लीजैा ॥
या से माँगि काज सब कीजैा। दाम माँगि या से पुनि लीजैा ॥
यहि कहि साह गाँव को गइया । तब भइ गरज नकल से कहिया॥
नकल साह कछु कारज कीजै । दीजै दाम काम मोरा छीजै ॥
पुनि वो नकल नहीं कछु दीन्हा । बहु बहु भाँति बिनय उन कीन्हा ॥
सेठ नकल मूरत नहिं बोलै । पुनि पुनि माँगै गाँठि न खोलै॥
बहुत बहुत बिनती उन कीन्हा । मूरत गाँठि से कछू न दीन्हा ॥

---

(१) परिश्रम । मुं० दे० प्र० के पाठ में पैस्रम की जगह "आश्रम" और दो कड़ी आगे "कष्ट" की जगह कृष्न अशुद्ध है। (२) गांव को ।

नकल सेठ से हाथ न अइया । माँग माँग उन जनम गँवैया ॥
असल सेठ बिन दाम न पाया । नकल सेठ से हाथ न आया ॥
येहि बिधि असल कृष्न नहिं भाई । तुम ने ता की नकल बनाई ॥
नकल कृष्न से कछु नहिं पाई । काहे बिरथा जनम गँवाई ॥
येहि बिधि बूझि बूझि मन लीजे । समझ बिचार से कारज कीजै ॥
नकल भाव तेहिं हाथ न आवा । ये बिधि बूझौ नकल प्रभावा ॥
सादृष्ट कृष्न ऊधो सँग रहिया । मुक्ति न पाई तप को गइया ॥
असल कृष्न की ये बिधि कहिये । मुक्ति नकल से कस कस पइये ॥
एकादस में कहो बखाना । देखौ अपना जाइ पुराना ॥
असल कृष्न की बिधी बताई । नकल कृष्न की कौन चलाई ॥
जिन्ह गोपिन सँग कीन्ह विलासा । समझ भाव मन बूझौ आसा[1] ॥
बिषय उपाव हाथ से कीन्हा । दौड़ दौड़ पाँवन से लीन्हा ॥
छूटि देहि जगन्नाथ कहाये । कर्म भोग पाँव हाथ कटाये ॥
अपना भोग आपने पाया । तुम ने ब्रह्म कौन बिधि गाया ॥
असल कृष्न बिधि ऐसो जोई । नकल कृष्न को कैसी होई ॥
असल कृष्न जो मुक्ति न पाई । कर्म भोगि के पैर कटाई ॥
कहै पुरान कृष्न गये धामा । जगन्नाथ भये कहौ प्रमाना ॥
कभि कभि गये धाम बतलावौ । भागवत कृष्न धाम समझावौ ॥
वोही कृष्न जगन्नाथ बतावौ । वोहि जगन्नाथ कृष्न करि गावौ ॥
धाम गये की संध न पाई । यहाँ रहे को झूठ जनाई ॥
कौन प्रमान दोऊ में कीजै । सत्त असत्त कौन को लीजै ॥
या में सत्त कौन को बूझा । कहि समझावौ तुलसि अबूझा ॥
नानक संत साखि बतलाई । कृष्न काल निन भाखि सुनाई ॥

(१) आशय = मतलब ।

॥ सवइया ॥

काले खाइ गयौ भगवान, सो जाग्रत या जुग जा की कला है १
काले खाइ गयौ ब्रह्मा सिव, सो काले खाइ गयौ जुगिया है २
इंद्र मुनिन्द्र सुरासुर गंधर्ब, जच्छ भुजंग दिसा बेदिसा है ३
ये तौ भये सबही बस काल के, नानक संत अकाल सदा है ४

॥ चौपाई ॥

अब कबीर की साखि बताऊँ। कहि कबीर बिधि भाखि सुनाऊँ॥
दस औतार कबीरा गावा। ता की सब्द बिधी समझावा॥
वोहू कही काल बस गइया। दस औतार काल के कहिया॥

॥ शब्द ॥

आवै जाइ सो माया साधो, आवै जाइ सो माया।
है प्रतिपाल काल नहिं वा को, ना कहुँ गया न आया॥१॥
क्या मकसूद मच्छ कछ होना, संखासुर न सँघारा।
है दयाल द्रोह नहिं वा के, कहो कैान को मारा॥२॥
वे करता न बराह कहाये, धरती धरा न भारा।
ये सब काम साहिब के नाहीं, झूठ कहै संसारा॥३॥
वे करता नहिं भये कलंकी, नहीं कलिंजै मारा।
है दयाल सबहिन को साहिब, कहो कैान को मारा॥४॥
खंभ फाड़ि कै बाहर होई, तेहि पतीजै सब कोई।
हरनाकुस नख उदर बिदारा, सो करता नहिं होई॥५॥
परसराम छत्री नहिं मारे, ये छल माया कीन्हा।
सतगुरु भक्ति भेद नहिं पाये, जीव अमिथ्या दीन्हा॥६॥
सिरजनहार न ब्याही सीता, जल पषान नहिं बंधा।
वै रघुनाथ एक करि सुमरै, सो नर कहिये अंधा॥७॥
गोपी ग्वाल न गोकुल आया, मामा कंस न मारा।
वो दयाल सबहिन को साहिब, ना जीता ना हारा॥८॥

वै करता नहिं बोध कहाये, नहिं असुरन को मारा।
ज्ञान हीन करता नहिं होई, माया जग भरमाया ॥९॥
दस औतार ईसुरी माया, करता करि जिन्ह पूजा।
कहै कबीर सुनो हो साधो, उपजै खपै सो दूजा ॥१०॥

॥ चैापाई ॥

सूर सब्द या विधि कहि भाखी। उनहुँ कही कर्मन में साखी॥

॥ शब्द ॥

कर्म गति टारैउ नाहि टरै।
कहँ वै राहु कहाँ वै रवि ससि आनि सँजोग परै ॥टेक॥
गुरु बसिष्ठ पंडित मुनि ज्ञानी, रुचि रुचि लगन धरे।
तात मरन सिया हरन राम बन, विपति में विपति परे ॥१॥
पंडो के प्रभु बड़े सारथी, सोऊ बन निकरे।
दुरबासा से स्राप दिवायो, जदु कुल नास करे ॥२॥
रावन अस तैंतीस कोटि सब, एकछत राज करे।
मिरतक बाँधि कूप में डारे, भाभी सोच मरे ॥३॥
हरीचंद ऐसे भये राजा, डोम घर पानि भरे।
भारथ में भरुही के अंडा, घंटा टूटि परे ॥४॥
तीनि लोक करमन के बस में, जो जो जनम धरे।
दस औतार भाभी के बस में, सूर सुरति उबरे ॥५॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल विख्यात, औतारी कर्मन कहे।
बहे भोग भै माहिं, सब सब संत पुकारिया ॥

॥ चैापाई ॥

राम कृष्न औतारी आहीं। भोगे कर्म जाइ तन माहीं॥
दस औतार निरंजन धरिया। सोऊ काल बस भौ में परिया॥
सोई निरंजन सोई निरंकारा। सोई काल धरे औतारा॥
कर्म भाव तिन देही पाई। करै भोग भै में भरमाई॥

सारा जग बेदन भरमैया । औतारी साँचे गोहरैया ॥
दीनदयाल पुरुष है न्यारा । निरंकार काल के पारा ॥
निरंकार तक काल न जावै । वहँ की गम जोती नहिं पावै ॥
वो स्वामी है अगम अगाही । जहँ संतन ने सुरति समाई ॥
सुरति समाइ पुरुष को देखा । मिला पुरुष गम अगम अलेखा ॥
उनका लेखा बेद न पावै । नेति नेति चारो गोहरावै ॥
पंचम बेद सुषम नहिं जाना । पष्ठम प्रसंग बेद कहै नाना ॥
चारि बेद पुनि गुप्त रहाई । ता में कागद लगै न स्याही ॥
तुम पुनि पुरुष भेद नहि जाना । दसो बेद कहै नहिं पहिचाना ॥
दसो बेद से भेद नियारा । पुरुष भेद नहिं पावै पारा ॥
निरंकार जोती नहिं जाना । जहँ पहुंचे कोइ संत सुजाना ॥
तुलसी सैल सुरति से कीन्हा । पाया अगम गम्म का चीन्हा ॥
पत्थर पानी दूर बहावा । तब घर अगम राह को पावा ॥
बेद कितेब पुरान उठाये । तब लखि सुरति अगम को धाये
नेम अचार चार नहि माना । बोलै सब घट माहिं दिखाना ॥
बोल अबोल दोऊ के पारा । तहँवाँ तुलसी सुरति सँवारा ॥
छर अच्छर निःअच्छर पारा । देखा तुलसी निरखि निहारा ॥
अगम अगाध पुरुष दरबारा । तुलसी मिलै सुरति की लारा ॥
तन में देखि ब्रह्मंड पसारा । सो हिये हेर सुरति की लारा ॥
हिये में हेर फोड़ ब्रह्मंडा । हिये की लार सार नौखंडा ॥
अंतर हेर हिये के माहीं । अंड फोड़ ब्रह्मंड दिखाई ॥
अंतर खोज कीन्ह हिये माहीं । अंतर हिये माहिं दरसाई ॥
तन में तोड़ फोड़ हिये कीन्हा । अंतर सार हिये में चीन्हा ॥
अब या का बरतंत बताऊँ । बारहमासा बरनि सुनाऊँ ॥
द्वादस सन संबत का चीन्हा । मास मास सुनि गहौ यकीना ॥
हिये बिच सुरति समझि घर आई । बारहमासा बरनि सुनाई ॥

॥ दोहा ॥

हिये हेरा सुन सैल से, बारह मास बयान ।
जानि सूर कोइ संत जन, सुनै सो सज्जन कान ॥१॥
गुइयाँ गोह गुमान गुन, गिरि बानी बिच बास ।
फाँस कटी कटि सुरति की, कीन्हा अगम निवास ॥२॥

॥ सोरठा ॥

बारह मास मिलाप, सुरति आप अपनी कही ।
लही जो तुलसीदास, बारह मास समझाय के ॥

॥ बारहमासा ॥

(सवैया)

गुइयाँ री गुन गोह गिरा बिच मैं न रहौंगी ॥ टेक ॥
आली असाढ़ के मास बिलास, सो बाम पिया बिन मोहिं न भावै ॥
गरजि अकास की भास रची, छबि बादर की कही बात न जावै ॥
बिजली चमकै घन घोर घटा, घर घाट पिया कोउ नेक न पावै ।
गोह गुना गिरि बीच बसी, सो फँसी तुलसी चित चैन न आवै ॥

(कड़ी)

अगमन आयौ असाढ़हि मास। गरजत गगन रची तजि भास ॥
भान घटा नभ नैन निहार। सूरति समझि चली नभ पार ॥
पिया पद साज गहौंगी ॥१॥

(सवैया)

सावन सोर करै बन मोर, सो दादुर प्यास पपीहा पुकारी ॥
ताल मही हरी भूमि भई, सो नहीं कोइ पंछिन चोंच चुकारी ॥
मैं मन में सुनि कै बिगसी, जस ताल रची बिच कंज सुखारी ॥
जो तुलसी गुन माहिं रही, सो भई जम साथ के संग दुखारी ॥

(कड़ी)

सावन सरवर नीर अपार। बरसत गगन अखंडित धार ॥
गैल गली सब हरियल भूमि। नील सिखर चढ़ि सूरति घूमि ॥
चमक बिजली की सहौंगी ॥२॥

(सवैया)

भादौं का भेद कहौं जो निखेद, सो खेद करम्म को काढ़ि निकारी ॥
सूरति सूर भई मति पूर, सो नागिनि नारि डसी जस कारी ॥
चेत चली जो अकास अली, सो गली गुन गोह से होत नियारी ॥
जो तुलसी सुख नारि भई, सो गई ले लार लगन्न के पारी ॥

(कड़ी)

भादौं भर्म भेद सब छूटि । काया कर्म कलस गये फूटि ॥
नागिनि बिरह मूल डसि खाई। येहि बिधि सूरति गगन समाई ॥
लगन सँग लार लरौंगी ॥३॥

(सवैया)

कूर कुवार कुमति को जार, सो बारि बनी सब खाक मिलाई ॥
कूकर काम भये जो निकाम, सो ठामहिं ठाम जो भूमि भुलाई ॥
सुन सूरति भाल सो ताल मई, गइ मान सरोवर पैठि अन्हाई ॥
तुलसी सोइ संत के संग अड़ी, सो खड़ी सुन सब्द में जाइ समाई

(कड़ी)

कुमति कुवार जारि जस फूस । कूकर काम रहे सब भूँसि ॥
मानसरोवर सरस अन्हाई । सूरति समझ चली रस पाई ॥
सब्द सुनि सार भरौंगी ॥४॥

(सवैया)

कातिक किरनि भई ससि सूर, सो दूर भये दल बादल सारे ॥
भूमि में थीर भये जल नीर, सो नार नदी स्रुत सिंध सम्हारे
सिंधहिं बुंद मिले चढ़ चाल, सो काल कला जम दूर निकारे ॥
तुलसी जिन चाँप धनू पै धरी, सो करी सम सूरति संत पुकारे ॥

(कड़ी)

कातिक किरनि भास भये सूर । सलितहिं समुंद मिलै जस मूर॥
बुंद सिंध बिन फिरत बेहाल। मिलि गया सब्द कटे जम जाल॥
सुरति घर चाप चढ़ौंगी ॥५॥

(सवैया)

अगहन मास अनंद अली, सो चली पिया पास पलंग बिछाई ॥
पायौ पलक्क के पार पती, सो सती सत सूरति सार लखाई ॥
सेज मिलाप भये पति आप, सो जीवन जनम सुफल्ल कहाई ॥
तुलसी मन में सुख चैन भई, सो गई बर आदि सो साध समाई ॥

(कड़ी)

अगहन अली पिया पलँग बिछाव। जीवन जनम मिलै अस दाँव॥
पिया की सेज सुख सज स्रुति सार। नित प्रति केल करौं पति लार॥
अली बर आदि बरौंगी ॥६॥

(सवैया)

पूस पुरुष की होस भई, सो गई सतलोक में सोक सिहारी ॥
प्यारी सखी गुरु गैल गई, सो कही पद प्यारे की चैाज निहारी
छाइ रही सुन मंदिर में, घर घाट पिया लखि बाट बिचारी ॥
पिय रस रीत की जीत भई, सो कही तुलसी जिन नैन निहारी ॥

(कड़ी)

पूस परम पद पुरुष निवास । स्रुति सत लोक करै नित बास
सिष गुरु गवन मिलि मत पाइ । प्यारी पुरुष रही घर छाइ ॥
सखी सुख जानि कहौंगी ॥७॥

(सवैया)

माह[१] मनोहर महल चढ़ी, सो खड़ी खिरकी तक तोल बखानी॥
जानि कही सोइ साध सुजान, सो मानी जिन्ही सोइ पास समानी
पानी दूध की छान करी, सो भरी लखि सूरति सब्द ठिकानी ॥
जीवतही मरि जात सही, सो कही तुलसी जिन जानि निसानी

(कड़ी)

माह महल झँझरी चढ़ि ताक । पिया की सेज सुख सत मत भाख ॥
कोइ कोइ सज्जन साध बिलास । पहुँचे अगम पिया घर बास॥
कही जिन जिवत मरौंगी ॥८॥

(१) माघ।

(सवैया)

फागुन फहम करौरी सखी, लख जात बह्यौ संसार असारा ॥
सूरति सार के पार लखै, सो थकै मन मारग मौज अपारा ॥
संत सिरोमनि सैल कह्यो, सो गई गुरु मारग साँझ सबारा ॥
प्यारे पिया की पकड़ गही, सो जकड़ हिये जंजीर सी डारा ॥

(कड़ी)

फागुन फरक भयौ संसार। जिन जिन सुरति करी तन जार ॥
सतगुरु मूल मना मुख बैन। जब लखि लखो संत की सैन ॥
समझ सोइ पकड़ धरौंगी ॥९॥

(सवैया)

चैत चली सो सुनौ री अली, गई गैल गली सुन रीति निहारी॥
सेत सरासर भेद लखी, सो पकी बिधि बेनी के घाट बिचारी॥
सारी सरोवरि ताल तकी, पकि प्यारी अन्हाइ के काज सँवारी ॥
जो तुलसी चढ़ि के जो चली, सो अली खिरकी बिधि आनि पुकारी ॥

(कड़ी)

चैत चली जिन चरन निहार। सो उतरी भौसागर पार ॥
आद अरु अंत पंथ घर बाट। सो पद परसि त्रिबेनी घाट ॥
चीन्ह खिरकी को चहौंगी ॥१०॥

(सवैया)

बैन बिधी बैसाख बिलास, सो पास पिया नित सैल सँवारे ॥
पार के सार बिहार करै, सो बिचार बिधो सुन तार निहारे ॥
प्रीतम मेल भया रस केल, सो केल किवार के पार पुकारे ॥
तुलसी तन मैं जिन जान लखे, सो भखे पिया पास के भास निकारे

(कड़ी)

करि बस बास बैसाख बिलास। छूटि गई तन मन की आस ॥
प्रीतम प्यारो मिले मन खोल। रँग रस रीति सुने सब बोल॥
पिया सँग केल करौंगी ॥११॥

(सवैया)

जेठ की रीत करी मन जीत, सो प्रीत की बात की सैन सुनाई ॥
चेत चली तजि काल बली, सोइ जाल जली दुख दूरि नसाई ॥
जिमि धाइ जो धीर गँभीर नदी, स्रुत सार सँवारि जो सब्द समाई॥
ये मुख बैन कहै तुलसी, सो लगी सत द्वार जो सब्द को पाई ॥

(कड़ी)

जेठ जबर तन मन स्रुत रीत। सुरख सबज चली अगमन जीत॥
सेत जरद रँग स्याम भुलान। पाँचोइ तत्त करी नहिँ कानि ॥
सखी सुनि पार फिरौंगी ॥१२॥
केवल ज्ञान निरबान निवास। ता से परे कहै तुलसीदास ॥
संत चरन धरि धारौ धूरि। अगम बरन बरनैा पद मूर ॥
निडर घर सुरति भरौंगी ॥१३॥

॥ सोरठा ॥

बारह मास बयान, हिये हरि कोइ पद लखै।
चखै चरन रस रीति, प्रीति पार पुर्षहिँ मिलै ॥

॥ चैापाई ॥

जिन जिन हेर हिये बिच पावा। बारह मास समझि चित लावा ॥
समझि समझि कोइ बूझै साधू। सुरति सहर घर बरन अगाधू ॥
चित दे गुनै लखै सुनि काना। सत सतसंग करै परमाना ॥
बिन सतसंग साँच नहिँ आवै। घर घर धोखे जन्म गँवावै ॥
जिन सतसंग रंग रस पाई। हिरदे निमर कपाट खुलाई ॥
मन तन सुरति फोड़ असमाना मद्ध हिये तन तिमर नसाना॥
मोड़ी सुरति पोढ़[1] पद लारी। तेज भास लखि सुरति निहारी॥
हिये दृग नैन निरखि जस देखा। संत सैन कोइ करै बिबेका ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मे "फोड़" अशुद्ध है।

जिन जिन सुख दुख दूरि बहाये। कर्म काल कृत धोय नसाये ॥
तन बिच तोड़ा सुरति निसाना। सुन्न सब्द स्रुति गगन समाना ॥

॥ दोहा ॥

सुन्न सब्द तन तोड़ि कै, मोड़ि गगन की गैल।
मूल बिलावल में कहूँ, बूझै सज्जन सैल ॥

॥ बिलावल ॥

तुलसी तन तोड़ फोड़ मोड़ पोढ़ पाई ॥ टेक ॥
देखो नृत नैन सैन बूझो सतगुरु के बैन।
छाँड़ौ दुख सुक्ख सैन संतन मत चाही ॥
अंदर में आदि खोज उतरै भौजाल बोझ।
मारौ जम काल फौज चौज चार माहीं ॥
देखौ हिये हेर खोज अंत कहूँ नाहीं ॥
सूरति नृत सैल खेल तोड़ौ असमान पेल।
सब्दा रस सुरति मेल मार दे चढ़ाई ॥
येहि बिधि चित चेत हेत मारौ मन सूर खेत।
छाँड़ौ सगरी अचेत हेत सेत माई ॥
ता से मन चेत बूझि देखि दृष्टि जाई ॥ २ ॥
बाहर सब झूठ लूट ऐसा मन टूट फूट।
तन में मन आतम मोट भूला भल साईं ॥
ये तो सब काल जाल राम कृष्न निरख हाल।
या के सँग चलौ न चाल छाँड़ि भेद भाई ॥
यासे सतसंग सार खोजु मौज माहीं ॥ ३ ॥
साँची कहै पूर अदूर बूझै कोइ संत सूर।
जानै अगमन अपूर मन तन रत राही ॥
का से कहौं बात चौज सूरति मन मार मौज।
छूटै दिल दरज दौज खोज आप माहीं ॥
रोज पार सार देख अंतर बिच पाही ॥ ४ ॥

बूझौ मन सीख लीक चाखौ रस अगम चीख।
छूटै भौ भर्म भीख पी के पार साईं ॥
देखौ अज अमर हेर कीजे ब्रह्मंड सैर।
लीजै पिउ पार हेर फेरि मेहर पाईं ॥
जा की गम घोर सोर कँवलन के माईं ॥ ५ ॥
सुन्न धुन्न सुन्न माहिं सूरति से निरख जाइ।
हिये माहिं हरष पाइ लै से लै पाईं ॥
बूझै कोइ सब्द बुंद पहुँचै पार अगम सिंध।
सूरति से लखौ संध फंद फाड़ जाईं ॥
सब्दा रस सुरति चीन्ह लीन पार पाईं ॥ ६ ॥
पाया सतगुरु दयाल मारा मन डंड काल।
पाया पद पद्म हाल साल जाल नाहीं ॥
कीन्हा बहु प्यार यार लेखा अगमन अपार।
हर दम हिये लौ की लार कर्म को छुड़ाहीं।
ये तौ तत मत्त सार तेरे तिल राहीं ॥ ७ ॥
तुलसी दास पास आस सूरति नित चढ़ि अकास।
सोहत अगमन बिलास बुंद सिंध आईं ॥
ऐसी दिन दिवस रैन पौढ़ो पलँगा पै सैन।
चीन्हा घर आदि ऐन प्यारा गुरु पाईं ॥
न्यारा नित नित निहार प्यारे के माईं ॥ ८ ॥
याही बिधि कहत सूर सतगुरु को बचन धूर।
जाना सगरा जहूर जल जल ज्यों जाईं ॥
मो को प्रिये प्रिये लाग छिन छिन उठि निरख भाग।
मन से जग सुरति त्याग खग ज्यों उड़ जाईं ॥
छिन छिन नित करै सैल घृत ज्यों दधि माईं ॥ ९ ॥

तुलसी तन निरख सार सूरति पेखा बिहार।
देखा पद चटक चार दीदा दरसाई ॥
सुखमनि मन मन्न लार आगे सूरति सँवारि।
पाये पिया प्राग पार पूरा मद माईं ॥
तुलसी तुलसी निहार बोलै घट माईं ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल लखि बात, ये अनंत न्यारी कही।
सूझि बूझि हिये सोय, जब अरूप गति को लखै ॥

॥ चौपाई ॥

ये घर अगम भेद है भाई। सतसँग करै लखै तब जाई ॥
ये अगाध की बात अनूपा। बूझै संत मिलै कोइ भूपा ॥
अगम पंथ सतगुरु से पावै। सतगुरु मिलै तो राह बतावै ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी से बूझौं इक बाता। ता की बिधी कहौ बिख्याता ॥
जग निस्तार बेद से होई। कै कोइ और राह मति सोई ॥
सब मिलि कहै बेद निस्तारा। बेद बिना नहिं उतरै पारा ॥
आदि बेद चारो जुग माहीं। जिव भौ पार उतरि के जाईं ॥
ऐसे सबी सबी मिलि गावें। सतगुरु मिलैं भेद बतलावैं ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सतगुरु मिलैं कहँ दरसाई। बिना संत नहिं बूझ बुझाई ॥
बेद भेद बिधि नाहीं जानै। ब्राम्हन पंडित एक न मानै ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी दया भाव करि दीजै। दास जानि प्रभु किरपा कीजै ॥
हे दयाल या की बिधि भाखो। मो पर दया दृष्टि सोइ राखो ॥

मोहिं प्रभु दास भाव करि जानौ। किरपा करि सोइ करौ बखानौ ॥
मैं चेरा तुम चरन बिचारा। भाखौ आदि अंत निरवारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

अब भाखूँ सुन आदि अपारी। बेद अंत भाखूँ सब झारी ॥
सत्त पुरुष इक रहै अकाया। अंस तासु सोइ निरगुन आया॥
गुन तीनौं से सरगुन भइया। सोइ भगवान बैराटौ कहिया ॥
सोइ बैराट से ब्रह्मा भइया। तुम कहौ ता ने बेद बनइया ॥
पुनि उन निरगुन बेद बुझाई। सोइ निरगुन ने नेति सुनाई ॥
सत्त पुरुष निरगुन से न्यारा। निरगुन काल न पावै पारा ॥
पुरुष अंस से सब जिव आये। निरगुन ने सरगुन में नाये ॥
पाँच तत्त गुन तीनि समाई। भये बैराट कर्म बिधि जाई ॥
जा को जगत कहै भगवाना। कर्म भाव चर अचर समाना ॥
रजोगुन ब्रह्मा ता से भइया। पहिले नाद बेद पुनि कहिया ॥
पाँच तत्त बिन नाद न सोई। सो बिन नाद बेद कस होई ॥
पुरुष नाम निरगुन से न्यारा। सोई अंस जिव जुग जुग सारा॥
आदि पुरुष को जीव भुलाना। निरगुन काल माहिं उरझाना॥
निरगुन नेति सरगुन बतलावै। यह बैराट बेद बिधि गावै ॥
सत्त पुरुष का मरम न पावै। निरगुन सरगुन को गोहरावै ॥
आदि पुरुष को संत बखाना। वो घर पहुँचै सुरनि निसाना ॥
अब या का दृष्टांत बताऊँ। प्रियेलाल सुनियौ सन भाऊ ॥
प्रथमहिं जीव पुरुष से आया। निरमल ज्ञान संग सम लाया ॥
परथम जुग जिव निरमल होई। तारन उजला होत न सोई ॥
जिव उजला जुग उजला भाई। जबहि बेद तारन कस गाई ॥
कहै बेद तारन की बाता। तरन कहा कर कीन्ह बिधाता॥
उजला जुग उजला जिव आवा। ताजा पुरुष पास अस गावा॥

तब तारन कस बेद बतावा। मैला जिव होइ तरन लखावा ॥
मैला तौ जब हता न भाई। जब यह कस निस्तार बताई ॥
उजला कपड़ा धोवन कहिया। सो धोबी के कस कस दैया ॥
मैले को धोबी समझावै। उजले को कस धोइ बतावै ॥
या की बिधी बतावौ भाई। कस उजला धोवन बिधि गाई ॥
उजला जीव बेद सँग साथा। मैला होत न पकरै हाथा ॥
मैला करन बेद समझावा। जब जोइ उजला ज्ञान हिरावा ॥
उजला कर निस्तारै बेदा। जीव जो आदि खानि बस खेदा॥
कर्म काल सँग कीन्ह समाधा। अस अस बेदन करी उपाधा ॥
बेद तो लिखा आदि से भाई। निरमल कोमल कर्म लखाई ॥
जैसे बनिया करै दुकानै। बेचि खरीदि न टोटा जानै ॥
लेन न देन दुकान न जागा। टोटा करज ताहि कस लागा ॥
बेद नाद दोउ संगहि आवा। तुम्हरे सास्तर अस अस गावा ॥
बेदहि निरमल मैला कीन्हा। निरमल जब कछु लेन न देना ॥
पुरुष पास जिव निरमल आवा। जुग निरमल जिव निरमल गावा
धोवन बेद भाख कस भाई। जब उजला उजले की राही ॥
झूठा सौदा बेद लखावा। उजला मैला करन को चावा ॥
मैला रहै जगत भौ भावै। उजला रहै तो घर को जावै ॥
मैला रहै खानि में आवै। येहि कारन किया बेद उपावै ॥
तीरथ ब्रत और चारो धामा। जप तप इष्ट नेम बहु कामा ॥
ये सब पाप पुन्य बतलावा। येहि बिधि मैला बेद करावा ॥
कर्म धर्म सब जीव फँदाई। उजले घर की राह भुलाई ॥
घर की राह का धोका दीना। करे कर्म फिरि भयो मलीना ॥
आदि अंत घर सुधि नहिं पावै। कर्म कर्म बिधि बेद बतावै ॥
या की साखि बतावो भाई। जग जिव झारि खानि में जाई ॥
बेद निस्तार करन को आवा। उजला था तब नहिं समझावा ॥

उजले में नहिं समझा भाई। मैले को कस पार लगाई ॥
जस सहुकार चोर घर लीन्हा। घेरा नाहि कैद में कीन्हा ॥
चोर ज्ञान सँग छूटै नाहीं। साह ज्ञान सँग घर को जाई ॥
साह संग सुध जब ही पाता। तौ अपने घर को चलि जाता ॥
योँ अपना घर भूल न चीन्हा। ता से बेदन फाँसी दीन्हा ॥
साह संत से उतरै पारा। चोरइ बेद कैद में डारा ॥
चोर संग ने फाँसी डारा। फाँसि डारि कर कहै उबारा ॥
जुगन जुगन संगहि चलि आवा। देखौ सब जग खानि समावा ॥
कोइ उबरन की खबर न लावा। मरि मरि गये खबर नहिं पावा ॥
मूए मुक्ति सभी मिलि गावा। जीवत मुक्ति न कोउ बतलावा ॥
येहि बिधि बेद रीति है भाई। मुए मुक्ति की बेद बताई ॥
जीवत मुक्ति देखिये आँखी। ता का मता कहनि सब भाखी ॥
जीवत जीव मुक्ति को पावै। तहु नहिं आदि अंत घर जावै ॥
घर की राह मुक्ति से न्यारी। सो कोइ जानै संत बिचारी ॥

॥ प्रियेलाल उबाच ॥

॥ चैापाई ॥

प्रियेलाल कहै बूझा स्वामी। बेद बिधी सब झूठी जानी ॥
संध्या तरपन नेम अचारा। ये भी जाना झूठ पसारा ॥
इनसे मुक्ति बिधी है न्यारी। ऐसो मन में समझ सिहारी ॥
मुक्ति बिधी से पुरुष नियारा। सो पावै संतन की लारा ॥
ऐसी खूब खूब मन आई। तब पुनि गिरे चरन पर धाई ॥
स्वामी करौ मोर निरबारा। मैं अब लागेउ चरन तुम्हारा ॥
जो कछु कही सत्त मन भाई। जेहि बिधि तारा कूँची लाई ॥
ऐसी पोढ़ पोढ़ मन मानी। जो जो भाखा मनहिं समानी ॥
अब अस दया करौ हो स्वामी। मन रहै चरन माहिं लपटानी ॥
मोरे मन बिधि ऐसी आई। तुम बिन राह कहूँ नहिं पाई ॥

अस कहि माल डारि जिन दीन्हा। रात रहन मन में अस कीन्हा ॥
सुरतगुपाल सुनौ तुम भाई। तुम अपने घर जाउ बनाई ॥
हम तौ रहैं चरन के तीरा। जब मन आवै मौज सरीरा ॥
सुरतगुपाल गये घर अपने। ये तौ चरचा सुनी न सुपने ॥
येहि बिधि कहि अपने घर आये। प्रीयेलाल रहन मन भाये ॥
ज्ञान उठा बैराग समाना। देखा जग झूठा संधाना ॥
तिरिया पुत्र और धन धामा। तन छूटे कोइ आवै न कामा॥
तन पानी जस ओस समाना। फूटै बिनसै नित नित जाना ॥
येहि बिधि समझि परा मन लेखा। ये जग ज्योँ सुपने सम देखा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल मन बिरह समानी। झरि झरि परै नैन से पानी ॥
उठा ज्ञान जस सिंध समाना। उठी तरँग पुनि लहर प्रमाना ॥
मुख से ख्वाल बात नहिँ आवै। बिरह लहर जस भुवँग सतावै ॥
भुवँग डसे जस मन लहराई। मन मैँ जहर लहर सी आई ॥
जग देखा तन कछू न भावै। जला जंत जग बूड़ समावै ॥

॥ प्रियेलाल उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

अब स्वामी मोहिँ सरनै लीजै। दया भाव मोहिँ पर कीजै ॥
कपड़ा नीके फैँकि निकारा। तोड़ जनेऊ कंठी डारा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि तेहि ज्ञान भेद समझावा। ता के मन कछु धीर न आवा॥
पुनि तेहि बोध ज्ञान गति गाई। डारि जनेऊ गले मेलाई ॥
कपरा कंठी गहि पहिरावा। बूझा ज्ञान बोध मन आवा ॥
कपरा मेँ बिधि सिद्ध न होई। संत की राह और बिधि सोई ॥

प्रियेलाल सुन चित दे काना। संत रीति रस करौं बखाना ॥
त्यागन संग्रह संत न जाना। ये मन कर्म भर्म भरमाना ॥
त्यागन करै सोई पुनि पावै। फिरि फिरि भोग भाव जग आवै ॥
संग्रह बंधन जगत बँधाना। ये दोउ भर्म भेद जग माना ॥
संत मता दोऊ से न्यारा। संग्रह त्यागन झूठ पसरा ॥
संतन सुरति निरति ठहराई। मन थिर करि करि गगन चढ़ाई ॥
सूरति सूर बीर भइ द्वारे। नभ भीतर चढ़ि गगन निहारे ॥
सुरति सुहागिन सूर सिधारी। नित नित गगन गिरा से न्यारी ॥
ता का मैं अब सब्द सुनाऊँ। संत मते की राह लखाऊँ ॥

॥ होली १ ॥

सुरति सुहागिन सूर भई री। गगन गिरा नभ गवन गई री ॥टेक॥
अधर हिये चढ़ि चमम चलो री। पिय को परस घर आई अली री।
अरध उरध बिच सुरति समानी। निरखा सब्द निरन अलगानी १
महलन जब जब पिय को निहारी। प्रीत पुरातम प्रेम पियारी।
अगम अधर घर निरखि निसानी। पिय को परसि पद रही लपटानी ॥२॥
सुख सागर मिलि सिंध समावा। बुंदा समुँद साध घर आवा।
ज्यों पपिहा पिउ प्यास पुकारी। स्वाँति बुंद पिउ पास मिलारी ३
तुलसी तन मन सुरति लगाई। लै की लगन पिय पलँग बिछाई।
सेज सम्हारत हिये हुलसानो। ज्यों जल मिलि जल धार समानो

॥ होली २ ॥

अजब अली एक गगन गली री। सुरति चमक चढ़ि चटक चलीरी ॥टेक॥
बिधि बिधि पुहुप बाग बन देखा। कहा कहौं अली अगम अलेखा।
ता बिच कंज कँवल मधु राजै। बिटप बरत तरु बिहंग बिराजै १
सोभा भूमि अधिक छबि छाई। सुन री सखी लख सुरति समाई।
तहँ सत सरवर ताल अनूपा। हंस भवन तन आतम भूपा ॥२॥
हिये के नैन दुरबीन लगाई। सिंध बुंद परमातम पाई।

खिरकी अजर अली चढ़ि देखा। जहँ इक साहिब रूप न रेखा ॥३
तुलसी सतगुरु अगम लखाई। लै को लगन लखि लोक सिधाई।
दुख सुख दोष सोक सब छूटा। कलसा कुंभ करम का फूटा ॥४॥

॥ दोहा ॥

प्रियेलाल मत मूर, सूर सुरति अस बिधि भई।
गई गगन के पार, सार समझि संतन कही ॥

॥ चौपाई ॥

अस अस सुरति लोक लखि देखा। संत रीति रस अगम अलेखा ॥
बिधि बैराग त्याग तन केरी। ये सब खानि जगत भौ बेरी ॥
जोगी जोग करत भरमाने। स्वाँसा पवन चढ़ावन जाने ॥
इड़ा पिंगला सुखमनि माईं। पवन भवन मैं जाइ समाई ॥
गगन बिनसि सुनि स्वाँस नसाई। मनमत जोगी जुगति न पाई ॥
ज्ञानी गुनि मन आतम जानी। वा मन को पुनि ब्रह्म बखानी ॥
आदि अंत का भेद न जानै। संत मता कैसे पहिचानै ॥
संत मता कछु रीति नियारी। बूझै साधू समझ बिचारी ॥
अस सुनि इष्ट भाव औतारा। ये सब जानौ काल पसारा ॥
गढ़ि मूरति मंदिर मैं धारा। ये सब जानौ झूठ पसारा ॥
पानी पाहन मैं मन लावै। अगिनि तत्त जल तत्त समावै ॥
नकल कृष्न कहौ किन को तारा। अस असुरन जिव आतम मारा ॥
नकल कृष्न पाहन की आसा। पाहन मुक्ति काल की फाँसा ॥
या से जिव उबरै नहिं खाना। जुग जुग बंधन माहिं बँधाना ॥
कृष्न राम जो संत बताया। ये औतारी कोउ नहिं गाया ॥
गो इंद्री गोबिंद कहाई। मनहिं कृष्न गोपिन के माईं ॥
गुन ही तीनों ग्वाल कहावै। बिंद बीच बिंद्राबन आवै ॥
गो गोपी बिच कान्ह कहाई। ये मन बस रस इंद्री माईं ॥
अब या की सुन साखि बताऊँ। संध सब्द बिच भाखि सुनाऊँ ॥

॥ धमार ॥

अहो बस कान्हा गो माहीं हो ॥ टेक ॥

गो की गोप करम कहि ऊधौ, गुन सँग गैल गुवाल ।
नित नित चालि चलै मधुबन को, इंद्री रस खानि बसाई ॥१॥
अच्छर रमत राह भइ राधे, नंद नाद सुत कान्ह ।
खेलन खेल मेल फरफंदी, बूँदी तन रुचिर सुहाई ॥ २॥
सब बृज बनिता बिंद्राबन कीन्हा, जसुमति सोमति जान ।
जो जस बुन्द सिंध से आये, ता को कर खोज लगाई ॥३।
अरी अरजुन भौ खानि भोम बस, नकुल भये जग आई ।
साधै देह देख आपन को, दो दृष्ट दो दृष्ट लखाई ॥ ४॥
सुरत सुधार पार तुहि कान्हा, सुनि बिधि बात बिचार ।
छूटै मान खान चारासी, सूरति सत द्वार लगाई ॥५॥
तुलसी तोल बोल मन भूला, मूल मरम नहिं जान ।
मन गुन ग्वाल गोप गोपी सम, नित नित बिधि भवन समाई६

होली

अहो आलो होरी लख बौरी हो ॥टेक॥

सूरति रंग रँगौ मन केसरि, ले पच पाँच निकारि ।
सखियाँ पचीस पकरि पिचुकारी, मारौ मन के मुख मोरी॥१॥
भरम अबीर गुलाल गुनन को, करि सतसंग उड़ाई ।
ज्ञान को छान छरी भरि सूरति, सनमुख नैना नित जोरी ॥२॥
चोया चित्त अरगजा आसा, कुमकुम कुमति बिसार ।
घर घर घूर कूर सब काढ़ौ, करमन कर कोचर धोरी ॥३॥
नर तन नगर बिंद ब्रिंद्राबन, तन मन चीन्ह बिहार ।
होरी अंग भंग कर जानौ, तुलसी सज साज मिलौ री ॥४॥

सोरठा।

ये मन तनहिं बिचारि, गो गोपिन में रमि रहा ।
गही न सतगुरु बाँहि, थाह मिलत लखि ब्रह्म सम ॥

॥ चौपाई ॥

ये मन ज्ञान ध्यान बिधि ठानी। ता से अपनी आदि न जानी ॥
सतगुरु से कछु बूझ न पाई। बिष रस राह फिरै भौ माईं ॥
मन थिर होइ सुरति घर पावै। तन बिच गगन गैल चढ़ि आवै ॥
गुन गफलत को दूर बहावै। आँख खोल अपना घर पावै ॥
सब मेँ ब्यापक ब्रह्म समाना। दरसै गगन फोड़ि असमाना ॥
संत कृपा सुत सैल लखावै। मन चढ़ि गगन ब्रह्म को पावै ॥
सुन्न सहर बिच ब्रह्म समाना। चढ़ि चढ़ि देखैं संत सुजाना ॥
ज्ञानी ब्रह्म ज्ञान से भाखै। ये सब झूठे ब्राह्मन ताकै ॥
ब्रह्म ज्ञान मन देखि न पावै। मन सँग गुन गिरि गाँठि बँधावै ॥
सतसँग करै ब्रह्म जब जानै। बिन सतगुरु सुति नहिं पहिचानै ॥
हिये दृग दरपन को नित माँजै। सुरमा सुरति नैन प्रति आँजै ॥
निरख परै दरसन की रेखा। नित निज नैन ब्रह्म को देखा ॥
गुन गफलत जिन दूर निकारा। आँख खोल कर ब्रह्म निहारा ॥
बिधि बसंत बिच गाइ सुनाऊँ। प्रियेलाल लख लखन लखाऊँ ॥

॥ बसंत ॥

मत भरमै रे घर मेँ दीदार। टुक आँख खोल गफलत बिसार ॥टेक
ब्यापक सब मेँ अखंड ब्रह्म। छाँड़ भटक दुनिया को भर्म।
जुग जुग भरमत करि बिचार। सुरति नैन नित सत सुधार ॥१॥
बन भुलान घर बिसरी बाट। ठग सँग कीन्हौ घर न घाट।
दिना चारि तन की चिन्हार। छूटत तन भुगतत होनहार ॥२॥
बूझ समझ घर खोज रोज। अंदर मेँ मन मार मौज।
सँग सतगुरु करि ले निरधार। भटक भूल सब दे निकार ॥३॥
जिन जिन सरन सतगुरु लीन्ह। तिन तिन पायौ अगम चीन्ह ॥
अगम गली इक बिधि बिचार। तुहि तुहि तुलसी वार पार ॥४॥

॥ दोहा ॥

वार पार तुलसी लखौ, पकौ चरन के ठाँहिं ।
चखौ अगम रस ब्रह्म को, थकौ थीर मन माँहिं ॥

॥ चौपाई ॥

ये तन पाइ बीत नहिं चीन्हा । कल्प कल्प रहे काल अधीना ॥
जब से सुरति आइ जग माईं । बंधन काल भई भौ आई ॥
आई सुलछ लेन अस जानी । लाभ न भयौ बिच विषम बिकानी ॥
इंद्री बस गुन गैरत माईं । फँसी फाँस कछु कही न जाई ॥
सब मिलि घेर घार बस कीन्हा । घर चीन्हे बिन भई अधीना ॥
अब सुनु गाइ बसंत सुनाऊँ । ता मैं सुन साखी समझाऊँ ।

॥ बसंत ॥

आई आई सखी सुति सुलछ लेन । भौ सागर भई अति बेचैन ॥टेक
पाँच पचीस मिलि ठाटो है ठाट । रोक रहो सब घाट घाट ।
पाँच तत्त गुन तीन सैन । तन भीतर रहे दिवस रैन ॥१॥
आदि अंत गइ बिसरि बाद । सतसंग बिसरी संत साध ।
ज्ञान गलो बिधि भूली बैन । दुख सुख लागे करम देन ॥२॥
है कोइ सतगुरु बूझै सार । भौ सागर कोइ करत पार ।
पिय की पीर तन तलफै नैन । लखि पाऊँ पद सुख से चैन ॥३॥
आये बहुत भये दिवस काल । फँसि गइ रहो माया मोह जाल
रबि दुख पावत परत गहन । तुलसी रहनि बिन झूठी कहनि ॥४॥

॥ दोहा ॥

बहुत काल भये पिउ तजे, माया मोह भुलान ।
नर तन पाइ न पिउ लखा, कस घर परै पिछान ॥

॥ चौपाई ॥

ता से अब ये नर तन पाई । अब तुम समझि चलौ घर माईं ॥
काया बन ब्रह्मंड समाना । बन बन फूल भास उरझाना ॥
ये औसर सूरति समझावा । मन मलीन तजि सुरति समावा ॥
ये दुरलभ तन देइ पुकारा । सो तन पाइ करो निरबारा ॥

॥ दोहा ॥

ये दुरलभ तन पाइ कै, किया न पिउ परसंग।
मगन मिलन मन भीख भौ, ज्यों मुठि मरकट रंग॥

॥ सोरठा ॥

सुनि बसंत में सीख, सब सब संतन भाखिया।
लखौ आदि बिख्यात, मन सूरति सम थिर करौ॥

॥ बसंत ॥

आई आई कंथ बसंत लाग। काया बन फूले भँवर बाग॥टेक
तन भीतर नैना निहार। सुरति निरति ले कर गुंजार।
नौ पल्लव बेली भँवर जाग। ले सुगंध तन बिषय त्याग॥१॥
अमर लोक इक अजर दूब। हद अनहद के पार खूब।
चढ़ि कर देखौ सुरति साग। जो कोइ निरखै बड़े भाग॥२॥
कोइ खेलै संत बसंत बूझ। जिन आदि अंत की राह सूझ।
ये अदेख अंदर में फाग। जहँ बिबिधि तरँग रँग उठत राग ३
सत्त पुरुष पद पुहुप पास। जहँ भूमि भँवर मन कर निवास
तुलसीदास भौ भरम आग। कोइ जरत न जागै बड़ अभाग[१]॥४

॥ चौपाई ॥

सत्त पुरुष पद पार सुनाऊँ। पदम पार घर आदि लखाऊँ॥
मन जेहि बूझ समझ स्रुत संगा। ये तन बिनस जात छिन भंगा॥
निरति सुरति सँग कहत बुझाई। भौ सागर बिच रही फँसाई॥
मनमत मोट खोट सँग लागी। बन रस फूल भयौ अनुरागी॥
देखि देखि तन अजर तमासा। सूरति मन मिल करै बिलासा॥
आदि अंत घर सुरति बिसारी। मन सँग फिरि फिरि फहम बिचारी

॥ दोहा ॥

सुरति आदि घर छाँड़ि कै, फिरै मन गुन की लार।
जगत जाल बिच फँसि रही, क्यौंकर उतरै पार॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में 'कोइ नर तन जोग बड़े भाग" है जो ठीक नहीं मालूम होता।

॥ बसंत ॥

देखौ देखौ सखी इक अजर खेल। चहुँ दिस फूली अमर बेल ॥टेक॥
बन बन फूले बिबिधि भाँति । कहँ लग बरनौं पुहुप जाति।
भिनि भिनि भौंरा करत केल । बिधि अपने घर छाँड़ि मेल ॥१॥
आदि अंत सूरति बिसार । चार लाख चौरासी धार ।
कहँ लगि बरनौं ब्रह्मंड सैल । पिंड ब्रह्मंड रच्यौ भूमि मेल ॥२॥
बेद पुकारत नेति नेति । बेदांत बरनि ताहि ब्रह्म कहेन ।
संत ताहि कहै काल गैल । वे दयाल गति भिनि अपेल ॥३॥
पिंड ब्रह्मंड रचना के पार । वे साहिब दोऊ से न्यार।
रूम रूम ब्रह्मंड खेल । इन सब से वे भिनि अकेल ॥४॥
संत सदा वहँ आवैं जाइँ । वे जानैं सब भेद पाइ ।
तन तिल्ली तुलसी जो तेल । मथि काढ़े तब भया फुलेल ॥५॥

॥ सोरठा ॥

जस तिल्ली तन तेल, भा फुलेल फूलै मिलै ।
तन भीतर अस खेल, खिलै कँवल मिलि पुरुष मैं ॥

॥ चौपाई ॥

ज्यों तिल्ली बिच तेल निकारा। मिलि गया फूल फुलेल पुकारा ॥
ऐसे संग पुरुष तन माईं । सतगुरु जानि भेद बतलाईं ॥
प्रियेलाल अस बूझ बिचारा। संग्रह त्यागन झूठ पसारा ॥
सतगुरु सूरति संध लखावै । तजि सब बंध जीव घर आवै ॥
अस सुनि ज्ञान समझ बिच बैठा। दिल बिच प्रियेलाल के पैठा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, प्रियेलाल लखि बूझि बिधि ।
सूरति सिंध समाइ, जब लखि पावै भेद यह ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल यह बूझ बिचारी । राति रहे तुलसी के लारी ॥
प्रात होत अस्थाने जाऊँ । अब तौ तुलसी सरन समाऊँ ॥

रहे राति पुनि सतसँग कीन्हा । भाव भेद ता को हम दीन्हा ॥
कालिंद्री मग सुरति लखाई । जमुना धार को धमक चढ़ाई ॥
नौलख कँवल द्वार में लाई । गोकुल फाड़ि गगन को जाई ॥
स्याम सेत खिरकी बतलाई । छिन छिन सुरति सिखर लगाई ॥
तिल के आगे पहाड़ छिपाना । मुकर बीच खिरकी में जाना ॥
भोरै होत डंडवत कीन्हा । चरनन सीस प्रीति से दीन्हा ॥
पुनि अस्थान जान हम कहिया । सीस टेकि मारग को गहिया ॥
पहुँचे कासी नगर मँझारा । सुरत गुपाल चले तेहि द्वारा ॥

बरनन अभ्यास फूलदास रेवतीदास और गुनुवाँ

॥ चौपाई ॥

फूलदास रेवती पुनि आये । अरज भाव बिनती सोइ लाये ॥
हिरदे गुनुवाँ चरन को लीन्हा । दास भाव बिनती जो कीन्हा ॥

॥ फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास अस अरज बिचारी । स्वामी दृष्टि दास पर डारी ॥
दयासिंध इक अरज बखाना । सो साहिब सुनियै दै काना ॥
सुरति से नरियर को मोड़ा । कदली पत्र भाव लख फोड़ा ॥
चौका पार चँदरवा ताना । सुरति से फोड़ा असमाना ॥
अष्ट कँवल बिच पवन सुपारी । पहुँचे जाइ सुरति की लारी ॥
उदित मुदित दोउ दीप मँझारा । चढ़े जाइ खिरकी के पारा ॥
चौथा हाथ पान पर जाई । पान परवाना अगम चढ़ाई ॥
अठमेवा पुरुष को देखा । भाखौं कस कस अगम अलेखा
ता के रूप रेख नहि काया । अगम अगाध अनाम अमाया ॥
देखा कँवल नैन नभ न्यारा । धरती गगन और सकल पसारा

चर और अचर दीप नौखंडा। बिधि बिधि से देखा ब्रह्मंडा ॥
सुरति सैल नित करै अकासा। फूलदास बिधि अगम तमासा ॥
फूलदास पार को जाई। पुरुष सुरति से भेंटि समाई ॥
फूलदास गति सब बिधि गाई। सो तुलसी को आनि सुनाई ॥
तुलसि ग्रंथ बिधि सकल बखाना। संत सुजन जन सुनिहैं काना ॥

॥ रेवतीदास ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि रेवतीदास चलि आये। सीस टेक चरनन पर धाये ॥
तिन पुनि भेद सकल दरसावा। बिधि बिधि भाखा दरस प्रभावा
स्वामी तुलसी अरज हमारी। कहूँ बिधी चित दीजै सारी ॥
स्वामी चौका दीन्ह बताई। सो बिधि चौका कीन्ह बनाई ॥
पुरइनि पात नभ समुँदर माईं। सुरति सैल ठहरी तेहि ठाईं ॥
बैठी जाइ कँवल के माईं। ज्यौं दुरबीन मुकर नभ राही ॥
कदली पत्र फोड़ि चलि आई। सेत चँदरवा फोड़ेउ जाई ॥
नरियर तोड़ चली असमाना। सेत दीप पुरइनि नियराना ॥
पँखड़ी अष्ट कँवल के माईं। चार कँवल अंदर दरसाई ॥
ता में देखा सकल पसारा। बिधि ब्रह्मंड जो जगत सँवारा ॥
ता से परे सुरति भइ न्यारी। द्वै दल कँवल पैठि भई सारी ॥
जहँवाँ पुरुष रहै इक न्यारा। तहँवाँ सूरति सजी अपारा ॥
सुरति निरति निस दिन वहँ खेला। नित नित करै अगम की सैला ॥
मन और सुरति निरति नित धावै। मन थिर होइ सुरति पर आवै ॥
येहि बिधि देखा सकल पसारा। स्वामी सो बिधि आन सँवारा ॥
फूलदास और रेवती दासा। भाखा दोउ मिलि अगम तमासा ॥
निरख निरख दोउ लख लख जोई। तुलसी जस जस रस तस होई ॥
येहि बिधि दोऊ करै बिलासा। और सकल छूटी जग आसा ॥
चेला गुरू जगत बिधि नाना। छूटा बिधि रस एकै साथा ॥

चेला गुरू बिधी नहिँ मानै। दोनौं मिलि रस एकै जानै ॥
छूटा पान सुपारी चौका। छूटा गगन सुन्न भया सूखा ॥
छूटा पिंड छूट ब्रह्मंडा। तीनि लोक छूटा सब अंडा ॥
सात दीप पृथ्वी नौखंडा। चौथा पद जहँ पुरुष अखंडा ॥
ता के परे सैल हम कीन्हा। ता को जानै संत यक़ीना ॥
यह चौका बिधि संतन केरी। तुलसी दृष्टि सुरति से फेरी ॥
और चौका सब झूठ पसारा। तुलसी चौका सत्त सँवारा ॥
नित तुलसी तुलसी गोहरावा। दीन बिधी बिधि सुरति लगावा ॥
फूलदास रेवती रत दासा। बस्तु पाइ नित अगम निवासा ॥

॥ गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

गुनुवाँ सुत हिरदे का आवा। सीस टेक चरनन लौ लावा ॥
अंतर भाव अरु चाव बखानी। सब बिधि अपनी कही कहानी ॥
जस जस स्वामी बिधी बताई। तस तस सूरति गगन लगाई ॥
चक्र फोड़ि सूरति भई पारा। चाँद सुरज तजि गई अगारा ॥
सुखमनि छेकी सरवर आई। मानसरोवर पैठि अन्हाई ॥
अगम द्वार खिरकी पहिचानी। गंगा जमुना सरसुती जानी ॥
सूरति चली अगम रस माती। जहाँ प्रयाग कंज रस राती ॥
जहँ सतगुरु बैठे सत बासा। अगम पुरुष घर कीन्ह निवासा ॥
सूरति ठहरि द्वार के माईं। रस रस धीर धीर चढ़ि जाई ॥
चढ़ै उतरै पुनि पुनि चढ़ि जावै। मकरी धागा तार लगावै ॥
येहि बिधि रहै दिवस और राती। सूरति लगन और नहिँ भाती ॥
येहि बिधि लोक नाम किया बासा। चौथा पद सतनाम निवासा ॥
जहँ से आई तहाँ समानी। यहि बिधि आदि अंत हम जानी ॥
जनम मरन दुख सुख सब छूटा। कर्म बंध बिधि सगरी टूटा ॥
स्वामी तुम चरनन बलिहारी। अगम बस्तु तुम दया बिचारी ॥

हिरदे प्रीति दृष्टि दरसाई। नैन चरन बिधि भाव बताई॥
मैं कहा जानूँ जीव अबूझा। हिरदे नत मत से सब सूझा॥
लखन ऊ मन अब नेक न भावै। अब तौ तुलसी तुलसी चावै॥
हिरदे की जाऊँ बलिहारी। इन बिधि सगरी मोर सँवारी॥
पिता दरस बिधि ऐसी कहिया। चरन लाइ बिधि अगम लखइया॥
हिरदे प्रीति हम तुम को पावा। हिरदे रीति अगम दरसावा॥
तब स्वामी के चरन सँवारे। स्वामी कृपा से उतरे पारे॥
सीस टेकि पुनि अज्ञा लीन्हा। सीस डारि चरनन पर दीन्हा॥
स्वामी मो को अज्ञा दीजै। अस कहि नीर नैन से छीजै॥
अज्ञा स्वामी दीन्ह बनाई। तब गुनुवाँ मारग को जाई॥
हिरदे हरष हिये में लावा। गुनुवाँ काज भयौ बिधि भावा॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

(बैरागी)

तुलसी हिरदे कहै बखानी। ये सत रीति संत कोउ जानी॥
भेष भेप बिधि देखि निहारी। ये गति मति बिधि सब से न्यारी॥
बैरागी बिधि इष्ट भुलाने। काल जाल में जाइ समाने॥

(जोगी)

जोगी जोग ध्यान रस भूला। स्वाँसा संध कीन्ह अनुकूला॥
मुद्रा पाँच तुरी मत झूला। ये पुनि ज्ञान जोग मत फूला॥
इंद्री बस रस कीन्हैा थूला। वोऊ न पायैा सार रस मूला॥

(परमहंस)

परमहंस पुनि ब्रह्म बखाने। ब्रह्म बिधो बिधि वोहू जाने॥
जड़ तन मन में गाँठि बँधाना। ता को ब्रह्म कहै हैवाना॥
कहै सब में सब हमीं समाना। आदि अंत नहिं चीन्ह ठिकाना॥

बेद बिधो बेदांत बतावै। वा के आगे भेद न पावै॥
मुख से कहै नाद को गावै। भूला बेद ताहि ठहरावै॥
बेदउ नेत नेत कर गावै। पुनि ता की वह साखि बतावै॥
संत मता उनहूँ नहिं पाया। ब्रह्म ब्रह्म बन जनम नसाया॥

(सन्यासी)

सन्यासी कहै हम भगवाना। आदि अंत उनहूँ नहिं जाना॥
कहै भगवान आप को जानै। आतम कहि कहि सुद्ध बखानै॥
चेतन जड़ संग गाँठि न जानी। सास्तर राह बिधी रस ठानी॥
बेदउ सास्तर नेत पुकारा। इतनी बूझ न पाय गँवारा॥
सास्तर बेद नाद से भइया। नाद अगम घर कहँ से अइया॥
नाद की आदि सुन्न से न्यारी। सुन्नी सुन्न सुन्न के पारी॥
वोही घर से नाद पुनि आया। ता पीछे ब्रह्मंड बनाया॥
पाँच तत्त मन माया भाई। ता से रचि बैराट बनाई॥
जड़ चेतन की गाँठि बँधानी। ता को नाम आतमा जानी॥
गाँठि बँधे पर भूल समानी। आतम बुध मन बेद बखानी॥
आतम बँधा गाँठि के माईं। पुनि ता ने यह बेद बनाई॥
सोई बेद आतम बिधि गाई। बेद की आदि सुनो तुम भाई॥
आतम कर्म भाव गठियाना। बंधन आतम बेद बखाना॥
ता की साखि बतावौ भाई। बेदउ नेति नेति करि गाई॥
जब नहिं बेद बेद का करता। जब नहिं रूप रेख कछु धरता॥
तत्त पाँच नहिं थे बैराटा। नहिं जो जब ब्रह्मंड न ठाटा॥
निरंकार जोती नहिं भाई। परमातम आतम जब नाहीं॥
सोहँग नहिं जब ओअंकारा। तब की कहूँ बिधी बिधि सारा॥
नहिं काया नहिं बोलनहारा। तब की कहूँ बिधि भाखि सँवारा
बेद नाद दोउ पीछे भइया। को पहिले जो बरनि सुनइया॥
पहिले नाद कहाँ से आया। सुन्न न गगन हती नहिं माया॥

वा घर की कोउ आदि बतावै। जब जोइ संत मते को पावै॥
हिरदे की बिधि कोइ नहिँ जाना। संत मिलैँ तौ करैँ बखाना॥
सन्यासी भूले अस भाई। पंडित बाम्हन कहा बताई॥

(पंडित)

पंडित कहै हमौँ पुनि स्याना। सास्तर पढ़ि पढ़ि बेद पुराना॥
पढ़ि पढ़ि पढ़ने माहिँ भुलाने। जा को पढ़े सोई नहिँ जाने॥
जा की ये सब साखि बतावै। वोऊ नेत नेत गोहरावै॥
निरंकार को नेत बखाना। निरंकार के परे न जाना॥
तीरथ बरत नेम के माहीँ। करम धरम पुनि जज्ञ बताई॥
धरि धरि देहीँ भोग करावा। भूले आप अरु जगहि भुलावा॥
बाम्हन को बिद्या मन माना। ऐसे संत मता नहिँ जाना॥

(ब्रह्मचारी)

ब्रह्मचारी ब्रह्मचार बखानै। ब्रह्म पार का भेद न जानै॥
वार पार का भेद बिधाना। यह बिधि वोहू राह भुलाना॥

(डंडी)

डंडी डंड कमंडल लीन्हा। लकरी बाँधि जनेऊ कीन्हा॥
बाम्हन हाथ प्रसादी पावै। और जाति का छुवा न खावै॥
द्वैत बुद्धि बसी हिये माहीं। मुख से आतम एक बताई॥
ऐसी बुद्धि द्वैत मन राती। पूजैँ बाम्हन की पुनि जाती॥
अंध अंध दोउ संग मिलाना। संत मते की राह न जाना॥

(वैष्नव)

वैष्नव बिष्नु धर्म को पालै। पूजा इष्ट भाव बिधि चालै॥
बिष्नू तीन गुनन के माहीँ। रजगुन तमगुन सतगुन भाई॥
रज ब्रह्मा तम संकर भाई। सतगुन बिष्नू तिन के माहीँ॥
तन बैराट से उपजे भाई। सो पुनि ब्रह्मा बिष्नु कहाई॥

सतोगुन बिष्नू तिन के माईं। तेहि को छाँड़ि पाहन मन लाई॥
चार धाम तीरथ को धावै। बिष्नू पास खोज नहिं पावै॥
पूजै जग खैराती खावै। करम भोगि फिर भव मैं आवै॥
संत मते की राह न जानै। बिष्नू पूजि जगत सब मानै॥

(मुसलमान)

मुसलमान खुद खुदा बतावै। सब में खुदा खुदा करि गावै॥
खुदा एक कहै सब में भाई। बकरी मुरगी मारै खाई॥
येहि बिधि भूल है उनके माईं। खुद खुदाइ की राह न पाई॥
मुसलमान है हक्क इमाना। जिन कोइ भिस्त राह पहिचाना॥

(स्नावग)

स्नावग आदि धर्म बतलावा। आदि राह का मरम न पावा॥
ऋषब देव चौबीसौ भइया। ता को कहै मुक्ति को गइया॥
मुक्ति मुक्ति सब भाखि सुनावै। वोहू मुए मुक्ति गोहरावै॥
जीवत देखी कहै न बाता। चौथा काल कहै बिख्याता॥

(कबीर पंथी)

पंथ कबीर का भाखि सुनाई। पंथ राह उनहूँ नहिं पाई॥
सत कबीर मुख भाखेउ बैना। उन सब कहा अगम की सैना॥
पंथी सैन लखी नहिं भाई। पंथ राह की जाति चलाई॥

(नानक पंथी)

नानक संत जो भये अगाधू। चौथा पद पाये उन आदू॥
उन भाखा कढ़िया परसादी। इन कढ़ाव हलुवे की बाँधी॥
पंथ कहा सो मरम न जाना। पंथ राह उन अगम बखाना॥
ता की बूझ समझ नहिं आई। पंथी जाति जाति भइ भाई॥

(दादू पंथी)

दादू संत जो भये अनामी। वे कहि गये अगम की बानी॥
उन भाखा कोइ पंथ नियारा। अगम निगम का कुंजी तारा॥

ऐसे संत जो भये अनामी । उन की बिधि पंथी नहिँ जानी ॥
पंथ चलाइ बढ़ाई साखा । सास्तर बेद मते मेँ राखा ॥
पंथी मत उनका नहिं जानी । राम रमा सब कहत बखानी ॥
ऐसी कहाँ कहाँ की कहिया । सब बिधि पंथ धरम मेँ रहिया ॥
कोइ पंथी कोइ धर्म चलावा । संत मते को कोइ नहिँ पावा ॥
सुन हिरदे यह ऐसी रीती । धर्म पंथ ने करी अनीती ॥
संतन पंथ सुरति का गाया । पंथ सुरति की राह बताया ॥
सूरति मिलै सब्द में जाई । ये सब संतन पंथ बताई ॥
सुरति पंथ नहिँ खोजा भाई । जाति पंथ का बोझ उठाई ॥
जो कोइ सुरति पंथ बतलावै । उन के मन में एक न आवै ॥
जो कोइ कहै सत्त की बाता । ता से करैँ बहुत उतपाता ॥
निंदक ता को करि ठहरावैँ । नास्तिक मता ताहि बतलावैँ ॥
संत मते की रीति न जानैँ । कहै जा की पुनि एक न मानैँ ॥
कैसे होय जीव निरवारा । या में बढ़ि गया जाल पसारा ॥
पंथा पंथी टेक बँधानी । अपने अपने मति की ठानी ॥
संत पंथ जो राह बखानी । सो पंथी कोइ खबर न जानी ॥
सुन हिरदे यह ऐसी रीती । सत भाखै तेहि कहैँ अनीती ॥
तब संतन ने बस्तु छिपाई । कहौ जिव राह कहाँ से पाई ॥
साखी सब्दी ग्रंथ बनाई । गुप्त बस्तु नकल में गाई ॥
नकल बस्तु ग्रंथन में जानौ । साखी सब्द नकल करि मानौ ॥
या में खोजि खोज नहिँ पावै । सतगुरु मिलै तो भेद बतावै ॥
नकल माहिँ से असल दिखावै । सो चेला सतगुरु से पावै ॥
जा की खुली अगम की आँखी । साँचे सतगुरु ता को भाखी ॥
सुन हिरदे सतगुरु सहदानी । सतगुरु सत्त पुरुष को जानी ॥
चौथे पद में करैँ निवासा । मिलै जाइ सतगुरु का दासा ॥

सतगुरु भेद अगम दरसावैं। तब चढ़ि जाइ अगमपुर पावै॥
हिरदे या को कोइ न जानै। जा से कहूँ सोई नहिं मानै॥

॥ हाल प्रियेलाल के अभ्यास का ॥

॥ चौपाई ॥

इतने में प्रियेलाल जो आये। करि परनाम छुए तिन पाँये॥
प्रियेलाल अस बचन उचारा। स्वामी से कहिहौं कछु सारा॥
जो कछु कृपा सिंध अनुकूला। सो बिधि निरखि बताऊँ मूला॥
प्रियेलाल भाखे रस माते। कालिंद्री नित सुरति समाते॥
कालिंद्री पर नित नित जाई। पुनि तेहि पार पार होइ राही॥
नौलख कँवल निरखि पुनि भागे। सहस कँवल के चलि गये आगे॥
सागर खिरकी समुँदर माईं। द्वार पैठि के सुरति चलाई॥
देखा जाइ वहँ अजब तमासा। सुरति लीन कोइ पहुँचै दासा॥
अरध उरध मध माहीं बाटा। अंड फोड़ तहँ चढ़ि गये घाटा॥
सूरति नित नित बढ़ै बढ़ाई। ठहरै नहीं बहुत ठहराई॥
छिन छिन पद में पदम निहारी। कंज बास छूटै नहिं तारी॥
येहि बिधि दिवस रात लौं लागा। निरखा सुरति उठै अनुरागा॥
स्याम सेत भिनि न्यारी सैला। निकसा दूर अजर अस खेला॥
हम को स्वामी कीन्ह सनाथा। काल जाल से छूटेउ हाथा॥
मुख से कस कस बरनि सुनावा। तुम्हरी कृपा अगम दरसावा॥
मैं मति मंद बस्तु कहँ पाऊँ। मन मोटा जग गुरू कहाऊँ॥
मान मई बाम्हन की जाती। ऊँचा चारि बरन में पाँती॥
अंध घोर जग का जंजाला। नित नित मीच करै जम काला
तुम दयाल बिधि ऐसी कीन्हा। काल जाल तजि सारहि लीन्हा
तुम नहिं कृपा करत येहि भाँता। तौ करमन भौ माहिं समाता॥
यह बंधन बिधि भाव छुटावा। जहँ का जीव तहाँ पहुँचावा॥
यह जग भूल अंध जिव खाना। मन अपने का ज्ञान बखाना॥

दीन होइ संतन की लारा । तब पावै सत मत का द्वारा ॥
भेद बेद मेँ नाहीँ स्वामी । समझि परी यह अकथ कहानी ॥
ये नहिँ बूझ दृष्टि मेँ आवै । पूरा सतगुरु मिलै लखावै ॥
बिन सतगुरु जिव भरमै खाना । मूए पढ़ि पढ़ि ग्रंथ पुराना ॥
पढ़े सुने कोइ भेद न पावै । सतगुरु मिलै तो भेद बतावै ॥
बेद पुरान की झूठी राही । या में जीव काल उरझाही ॥
प्रीयेलाल हाथ दै मारा । झूठो बिधी अचार बिचारा ॥
स्वामी समझ माहिँ अब आई । नित नित घोर कँवल के माईँ ॥
देखा तब मोर मन पतियाई । बिन देखे परतीत न लाई ॥
निसा पूर मन साँची भाई । सुन्नी सुरति माहिँ रही छाई ॥
बिजुली कड़क कड़क उँजियारा । बरसै पानी नैन निहारा ॥
सुरति निरति के मंझ मँझारा । धसि भीतर लखि अगम पसारा ॥
धरती गगन चंद और सूरा । देखा सब में सब बसि पूरा ॥
सूरति रहै अगम रस पागी । नित नित रहै रंग अनुरागी ॥
अस स्वामी कोइ दृष्टि न आवै । अब कछु और और बिधि भावै ॥
जग पुरान बंधन के माहीँ । सास्तर जाल काल सब राही ॥
संत राह कोइ चीन्हि न पावै । भरमै भर्म जीव भरमावै ॥
अस स्वामी ये कहूँ बिचारा । देखि न परै जीव निरवारा ॥
तुम चरनन बिन कछू न कोई । तुम्हरी कृपा होइ सो होई ॥
तुम ने प्रभू दया अस कीन्हा । औघट बहे घाट लखि दीन्हा ॥
अब स्वामी किरपा अस कीजै । अज्ञा भाव दरस मोहिँ दीजै ॥
चरन छुए पुनि अरज बिचारी । अब चलने की बिधी निहारी ॥
उठे चरन गहि अज्ञा लीन्हा । कासी राह गवन तब कीन्हा ॥
सुरतगुपाल द्वार तब आये । भीतर आसन बैठे पाये ॥

॥ सोरठा ॥

कहै तुलसी सुन बात, हिर्दे हरष सत मत कहूँ।
प्रियेलाल मुसक्यात, राह अगम गति पाइ कै॥

॥ वचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कासी नगर भरा सब झारी। तेरह उतरे भौजल पारी॥
तेरह गये अगमपुर धामा। तिन को काल न करिहै हाना॥
काल जाल जम पास न आवै। जनम मरन बिधि एक न पावै॥
अमर अजर घर जाइ समाना। जहाँ रहै सतनाम अनामा॥
ये तेरह पर काल न आई। नित नित रहैं अजर घर छाई॥
तेरह नाम बिधी बतलाऊं। भाखि बिधी भिनि भिनि दरसाऊँ
करिया नाम रहै इक नारी। सैनी दूजी नाम बिचारी॥
कर्मा धर्मा स्नावग जैनी। ये उतरे भौजल की सैनी॥
अगम द्वार चलि गये अगाधा। सूरति गई अगमपुर साधा॥
सेख तकी तकि भये नियारे। खुद खुदाइ रब लाह के द्वारे॥
चूँ बेचूँ बेउन्नावो साईं। ता घर रूह राह तिन पाईं॥
पंडित तीनौं नाम बखानौं। दो तो नैनू स्यामा जानौं॥
तीजा माना पंडित होई। अगम राह घर पावै सोई॥
गुनुवाँ हिरदे दोउ निज जाना। ये तौ गये अगमपुर धामा॥
फूलदास और रेवतीदासा। इनका भया अगमपुर बासा॥
प्रियेलाल इक जाति गुसाईं। सूरति सैल अगम घर जाई॥
ये तेरह उतरे भौ पारा। काल जाल से होइ नियारा॥
काल रहै उन से सिर नाई। मिलि गई सुरति अगमपुर धाई

॥ सोरठा ॥

तेरह तोल अपार, लखा सार सतगुरु मिले।
तुलसी कहै निहार, उतरि पार पद को मिले॥

॥ छंद ॥

तेरह भये पारा अगम निहारा। सत मत सारा लार लये ॥१॥
पहुँचे वोहि धामा अगम अनामा। पार सार रस जाइ पिये ॥२॥
सतगुरु मत भावा अगम लखावा। पावा पदम निवास किये॥३॥
चौथे पद माईँ सतगुरु पाई। कंज माहिँ रत भास भये ॥४॥
बेनी परियागा घट अनुरागा। पाइ न्हाइ अज अमर भये ॥५
सूरति सत सानी अगम समानी। जाइ निरानी राह लये ॥६॥
छूटा जंजाला जम और काला। साला हाला दूर बहे ॥७॥
अपना घर पाई सत्त समाई। सत्त लोक गइ सब्द मई ॥८॥
नहिँ आना जाना कर्म नसाना। तुलसी सतगुरु राह दई ॥९॥
यह बिधि अस पाई सो सब गाई। अगम सुनाई गाइ कही ॥१०
सतगुरु रस माते नित नित जाते। सो वे सतगुरु सुरति लई ॥११
सत सत मत भाखी देखा आँखी। राखन भाखी सत्त गही ॥१२॥
तुलसी तस गाई जस जस पाई। सुरति समाई राह लई ॥१३॥

॥ राग बिलावल

तुलसी अंदर अलेख, देख लेख जाई ॥टेक॥
तुलसी सतसंग जाइ, कासी प्रति होइ हाइ।
बासी रस वार पाइ, बूझै सत साईँ ॥
पारी पद अगम बास, हिरदे हित चरन खास।
निरखा सगरा अकास, चेता तन माईँ ॥
फूलदास आस पास, देखा हित लाई ॥१॥
पंडित बाम्हन तरुन्न, नैनू स्यामा अमन्न।
कीन्हा सतसंग आनि, दीन्हा ब्रत वाही ॥
कर्मा और धर्मा आइ, सैनी और करिया जाइ।
पाया रस अगम खाइ, हरख हिये माहीँ ॥
देखा रस अगम पाइ, दीदा रस राही ॥२॥

गुनुवाँ और रेवतीदास, सतगुरु रस पूर प्यास।
सूरति अगमन निवास, फोड़ पार जाई॥
मियाँ एक तकी सेख, मन का बड़ पोढ़ देख।
सूरति सत सूर लेख, पेखा अपनाई॥
पाया पद मूर सार, खुदा की खुदाई॥३॥
आया इक प्रियेलाल, देखा मत बर्त चाल।
कीन्हा सतसंग हाल, जाति के गुसाईं॥
देखा सब बेद असार, संतन मत बूझ सार।
सूझा मन हिये हार, तरके तक चाही॥
दरदी दरदीन ताहि, सूरति लखवाई॥४॥
तुलसी तेरह की लार, सब्दा रस पिया सार।
सूरति निरखा निहार, चौथा पद पाई॥
सतगुरु पूरा दयाल, छूटा जम डंड काल।
तुलसी कीन्हा निहाल, आपदा मिटाई॥
सिंध बुंद मिला मेल, जल में जल जाई॥५॥
कासी में भया सोर, तेरह को लिया चोर।
तुलसी अस ज्ञान जोर, घोर नगर माहीं॥
तुलसी इक साध रहत, तेरह कीन्हा अचेत।
वा से कोउ करो न हेत, देत जादू जाई॥
कासी नर नारि हेत, पासी नहिं आई॥६॥
संतन पर धरै दोस, पाप पुन्न खाइ खोस।
याही बिधि कुटुम पोस, कर्म रेख माहीं॥
संतन को नीच जानि, अपनी बिधि ऊँच ठानि।
भूला अभिमान माहिं, चारि खानि जाई॥
देखौ नर अंध अचेत, संत भाव नाहीं॥७॥

॥ राग जैजैवंती ॥

एरी सुधि आदि तौ निरत दरसाई, तुलसी समभाइ कै ॥ टेक ॥
फूलदास सुनियौ बानी । बिधि ग्रंथन भाखि बखानी ।
कहि हिरदे नाम अहीरा । ता की बिधि गाइ कै ॥१॥
तीन पंडित नाम बताये । ता की बिधि भिनि भिनि गाये ।
नैनू स्यामा माना नामा । कहिये सत भाव के ॥२॥
कर्मा धर्मा करिया नारी । सुखतकी और सैर्ना बिचारी ।
गुनुवाँ फूलदास बतलाऊँ । पाये सँग लाइ कै ॥३॥
रेवतीदास कबीरा पंथी । तिन बूझा सत मत संती ।
तुलसी तत सत लखवाई । सूरति नित पाइ कै ॥४॥
ये भये बारह रस माने । ये अगम पंथ नित जाते ।
इनकी सुधि बुधि पिउ पारा । रचे बारह धाइ कै ॥५॥
तुलसी बसी कासी सारी । निकरे बारह नर नारी ।
तिन की गति सत मत पाई । भये न्यारे जाइ कै ॥६॥
कहूँ कासी जग में धामा । तेहि मद हम नाहिं पहिचाना ।
स्याना सुख सम्पत माहीं । तुलसी आबूझ कै ॥७॥
प्रियेलाल जाति गुसाईं । यह बिधि तेरह भये भाई ।
बिंद्राबन के रहे बासी । कासी सँग पाइ कै ॥८॥
तुलसी बिधि भाखि सुनाई । संतन रस राह बताई ।
पाई सतसँग से राहो । सूरति सत पाइ कै ॥९॥
तुलसी पद राह लखाई । करिहै नर नारी जाई ।
सूरति सँग राह बखाना । तुलसी गोहराइ कै ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, नर नारी सबही सुनौ ।
सूरति संग सँवार, यह बिचार तुलसी कहा ॥१॥
सतसँग अगम अपार, जेहि दृग से सब लखि परै ।
सरै जीव कै काज, साजि सुरति सब लखि रही ॥२॥

बूझै सतसँग सार, बिना सार पारै नहीं।
कृपानिधि संत अपार, लखि अगार आगे कही ॥३॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सतसंगति बलिहारी। बरनौं सत सत बारम्बारी ॥
सतसँग सरन चरन गति पावै। अगम निगम गम निरखि लखावै ॥
बिन सतसंग चीन्हि नहिं पावै। सतसँग सन्त सुरति दरसावै ॥
सतसँग सतसँग अंतर भाई। कही सतसंग अनेकन राही ॥
सतसँग सतसँग सब गोहराया। सतसँग का कोइ अंत न पाया॥
सतसँग कहि कहि सभी बताया। सतसँग आदि खोज नहिँ पाया॥
सतसँग महिमा अस अस गावा। करै घड़ी इक मुक्ति को पावा ॥
घड़ि इक मैं मुक्ती होइ जावै। सतसँग महिमा अस अस गावै ॥
बेद पुरान भागवत गीता। साखी सब्द जनम गयो बीता ॥
रात दिवस तेहि पढ़ि पढ़ि हारे। सुनत सुनत नहिं मुक्ति निहारे ॥
कथा पुरान अनेकन कीन्हा। सुपने मैं मुक्ती नहिं चीन्हा ॥
किरत्रिम मंदिर नित नित जावै। सतसँग महिमा तान सुनावै ॥
नृत करि करि कै तान अलापै। करम धरम मन चितवै पापै ॥
कोइ पुरान मान मद माते। कोइ कोइ ज्ञान ध्यान रस राते ॥
कोइ कोइ पढ़ि बिद्या मद माहीं। कोइ कोइ सुनै गुनै रित राही ॥
कोइ कोइ ब्रह्म ज्ञान बतलावै। कोइ कोइ तुच्छ जीव कहि गावै ॥
कोइ कोइ ब्रह्म आप को मानै। कोइ कोइ कर्मी जीव बखानै ॥
अंधा धुंध जगत ब्यौहारा। कोऊ न मुक्ति की राह बिचारा ॥
महिमा पलक माहिं गति गावै। खोजत मुक्ती जनम गँवावै ॥
पलक माहिं मुक्ती को पावै। सतसँग मुख महिमा अस गावै ॥
करते करते जनम सिराना। सतसँग सुपने मुक्ति न जाना ॥
तीरथ बरत नेम जग लागा। काहू मन धोखा नहिं भागा ॥
नीमखार बद्री परधाना। तीरथ सब प्रयाग असनाना ॥

चारौ धाम काम करि आवा । भरमि भरमि कहुँ मुक्ति न पावा ॥
जुग जुग रहै चहै सोइ कासी । बिन चीन्हे भये जमपुर बासी ॥
ये सब कर्म भाव भौखानी । ये सब काल राह रित मानी ॥
सतसँग काल जाल का कीन्हा । भौ बस भाव बहै जस मीना ॥
सतसँग महिमा सत्त बनावै । पानी पाहन में मन लावै ॥
पूजा पाती करै अचारा । मैली बुधि सुध नाहिं बिचारा ॥
पूजा मन मल नाहिं छुड़ावा । फूल तोड़ जल पाहन नावा ॥
मैला मन पाहन की आसा । तीजे कर्म भाव कृत बासा ॥
किरत्रिम नाम बास को पूजै । अबिनासी कौने बिधि सूझै ॥
नास भाव में सुरति लगाई । ये सतसंग जग महिमा गाई ॥
ये धोखा सबहिन हित लावा । ता से सतसंग खोज न पावा ॥

॥ दोहा ॥

धोखे सब जग पचि मुआ, पूजा नेम अचार ।
तीरथ ब्रत बिधि भर्म से, भुगतत खानि मँझार ॥१॥
बीत जनम सतसँग करत, और सरै न एकौ काज ।
पलक माहिं सतसँग मिलै, सरै जीव कौ काज ॥२॥
पल महिमा सुनि कहत हैं, मुख से बारम्बार ।
पल सतसंगति मुक्ति जो, खोजत नाहिं गँवार ॥३॥
सात स्वर्ग अपबर्ग की, महिमा तुलै न ताहि ।
अस सतसंग बखानिया, पल में मुक्ति सहाइ ॥४॥
करत करत जनमै गयौ, नित नित सतसंग साथ ।
वो सतसंगति कौन है, मुक्ति जो आवै हाथ ॥५॥
वो सतसंगति और है, तुलसी अगम निहार ।
संत सुरति सतलोक में, मुक्ति तहाँ पनिहार ॥६॥
वो सतसंगति संत पै, जगत भेष नहिँ भेद ।
ये अभेद सतसंग को, मुक्ति चरन पद लेत ॥७॥

मुक्ति मुक्ति ढूँढ़त फिरैं, भेष जगत सब झार ।
संभासन चित संत कर, संत चरन की लार ॥८॥
संत मुक्ति नहिं आदरैं, और फिरै संत की लार ।
संत अगम रस लेत हैं, जहँ पहुँचै न मुक्ति बिचार ॥९॥
ज्योँ जौहरि हीरा गहै, पाहन गहै गँवार ।
हरि हीरा संतन लखा, पाहन मुक्ति असार ॥१०॥
ज्योँ दधि भीतर घिर्त को, मथि काढ़ै कोइ संत ।
छाछ मठा जग को दयो, पावै न घृत मत अंत ॥११॥
मुक्ति मुक्ति माँगत फिरै, जगत भिखारी भेष ।
जिन माखन मथि काढ़िया, मठा रंक को देत ॥१२॥
संत मुक्ति मानैं नहीं, माँगै जगत अजान ।
संत दरस मुक्ती तरै, फिरै संत की लार ॥१३॥
गहै सतसंगति संत कर, मुक्ति लखावैं हाल ।
नजर दृष्ट जीवत लखै, छूटै भौ भ्रम जाल ॥१४॥
बेद मता भौ जाल है, सास्तर सिम्रित पुरान ।
ये अंध फंद है काल को, संत चरन चित आन ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

सतसँग जाने संत, आदि अंत सुर्ति से लखै ।
महल सातवाँ पंथ, वोहि मारग सतसँग कह्यौ ॥१॥
महल सात सुर्ति राह, चढ़ि अकास सतसँग लखै ।
सत मत पंथ निहार, सो अगार अद्बुद चखै ॥२॥

॥ दोहा ॥

तुलसी सतसँग जग नहीं, नहिं ब्रत नेम अचार ।
नहिं पुरान नहिं बेद मैं, संत चरन की लार ॥१॥
जग अँधरा पंडित मिले, अँधरा भेष भुलान ।
ये तीनौं अँधरा मिले, कौन बतावै राह॥२॥

पंडित लोभी भेष सब, ठग ठग जगत लबार ।
पाप पुन्य बतलाइ कै, मुए मिलन गोहरान ॥३॥
मुए मिलन आवै नहीं, चिट्ठी पत्री नाहिं ।
बिन बिधि देखी जो कहै, परै नर्क के माहिं ॥४॥
कहै देखी निज आपनी, जीवत मिलन बिचार ।
ये गति मति सत संत को, निरखि परै सुत सार ॥५॥
सतसंगति सत द्वार मैं, जानत संत सुजान ।
मुकर मनौ दुरबीन मैं, निरखि चढ़ै असमान ॥६॥
मुकर सत्त द्वारे बिना, सतसँग करौ हजार ।
बेद हाल भ्रम जाल से, कधी न उतरै पार ॥७॥
और सतसंगति झूठ सब, पचि पचि मरै लबार ।
संत मुकर सुति राह बिन, भरमत फिरै गँवार ॥८॥

॥ चौपाई ॥

सतसँग भेद और है भाई । सतसँग बिधी संत से पाई ॥
सतसँग बिधी जगत में नाहीं । वो सतसंगति संतन माहीं ॥
बेद पुरान न जानै बाटा । पंथी भेष न पावै घाटा ॥
पंडित बुद्धिहीन नहिं जानै । भूला जगत भूल पहिचानै ॥
वो सतसँग सतगुरु से पावै । भूल तोड़ सत द्वार लखावै ॥
जो कोइ द्वार कृपा से पावै । ता को सतसँग संत बतावै ॥
वो सतसंग जीव निज पावै । सत सत ता कै नाम कहावै ॥
वो सतसंग मिलै पल माहीं । पल मैं मिलै जीव को राही ॥
या की साखि ग्रंथ गोहरावै । सुरति संग सतसंगति पावै ॥
भौजल नौका सतसँग भाई । सूरति चढ़ भौ पारै जाई ॥
मन मल्लाह नाव नहिं बूड़ै । सूरति बल्ली मन बल तोड़ै ॥
मन को पकरि नाव पर डारै । सूरति बल्ली पार उतारै ॥
उतरै पार परम घर चीन्हा । पहुँचे जाइ अगम लखि लीन्हा ॥

सतगुरु पद परसै उर नैना । लख लख परै संत की सैना ॥
सतसँग या को नाम कहाई । पल मैं चढ़ै अगम घर जाई ॥
तुलसी जे जे संत कहाई । अगमै पंथ राह जिन पाई ॥
ऐसी अगम रीत गति राही । जगत अंध जड़ राह न पाई ॥
माया मद मन मस्त सरीरा । खान पान सुख तरुनी तीरा ॥
भाई बंद कुटुम बिधि नाना । सुख सम्पति सुपने बिधि माना ॥
तेल फुलेल चमक चटकाई । टेढ़ी पाग छोर उरमाई ॥
मन मैं मस्त कछू नहिं सूझै । काल कराल नेक नहिं बूझै ॥
ऐसा गाफिल फिरै अयाना । छूटै तन पल माहिं पयाना ॥
ये तन पानी ओरा[१] सुपना । तन घुलि जाइ छूटि नहिं अपना
तन सराइ दिन दोइ बसेरा । तन छूटा पुनि बाहर डेरा ॥
ये सराइ दिन चारि मुकामा । रहना नहिं मंजल को जाना ॥
सुत प्रिये तन धन सुपन सनेही। तन छूटे सुपने की देंही ॥
मिथ्या तन से प्रीति लगावै । जीव भूलि धोखे मैं आवै ॥
त्रेता रामचंद्र भये राजा । भूले वोहू देंह सुख काजा ॥
तिरिया काज कीन्ह संग्रामा । बन बन फिरे लछन अरु रामा ॥
कुल आतम रावन को मारा । आतम हति लीन्हा सिर भारा ॥
आतम पाप अनीती कीन्ही । बालिहिं मारि काल गति लीन्ही
ये अधर्म कीन्हा अन्याई । आतम मारि दया नहिं आई ॥
दयाहीन जोइ दुष्ट कहावै । आतम हतै दया नहिं आवै ॥
जग मैं कोइ जिव मारै भाई । ता को सब जग दोष लगाई ॥
तुलसी अनीति कीन्ह अधमाई । ता को जग भगवान बताई ॥
ता को करता कहै भगवाना । रावन नारि लीन्ह नहिं जाना ॥
करता राम भया मतिहीना । कपट मिरग उनहूँ नहिं चीन्हा ॥
तिरिया काज कीन्ह सब कामा । लीन्हा भोग कीन्ह सोइ रामा ॥

(१) ओरा = ओला । मुं० दे० प्र० के पाठ में "औरै" अशुद्ध है ।

कर्म भाव भौ में भरमाये। कीन्हा कर्म भोग सोइ पाये ॥
जिन्हजिन की पुनि नास कराई। तिन तिन हाथ नास पुनि पाई ॥
नास बैर भोगै पुनि खाना। बैर दिये पुनि गर्भ समाना ॥
देँह भाव दुख भरमै खाना। तुलसी भाखी सत्त प्रमाना ॥
बिन हंकार हतै नहिँ भाई। अहंकार सस्तर बँधवाई ॥
अहंकार आतम किया नासा। पुनि अहंकार खानि मैँ बासा ॥
जो कछु किया राम हंकारा। रावन कुल आतम सब मारा ॥
जस जस किया राम कृत काला। बाँधे जम डारै भौ जाला ॥
जग अंधा तेहि साखि बतावै। वो पुनि कर्म आपने पावै ॥
राम कर्म बस भरमै खाना। ता से मुक्ति कौन बिधि जाना ॥
तुलसी राम मुक्ति नहि पाई। अंधा जग तेहि जपै बनाई ॥
येहि बिधि कृष्न दसै औतारा। बाँधे काल कर्म की लारा ॥
ये जग अंध मंद मति माईँ। कीन्हे कर्म कृष्न भुगताई ॥
जगन्नाथ सब जगत पुकारा। हाथ और पाँव कटे केहि कारा ॥
गोपी कर्म कीन्ह सँग माईँ। ता से कटे हाथ और पाँईं ॥
ये देखौ सादृष्ट बिचारा। वो हू परे कर्म की धारा ॥
अस अज्ञान बूझ नहिं लावै। लीन्हा सरन सोइ दुख पावै ॥
सरनि लीन्ह सोई बेहाला। उन को गहि बाँधेउ जमकाला ॥
अपने मन में करौ बिचारा। बड़े बड़े बूड़े भौ धारा ॥
बड़े बड़े हाथी बहि जाई। कहौ मसा केहि लेखे माईँ ॥
राम कृष्न जग हाथी जाना। सोऊ बहे कर्म लपटाना ॥
तुम पसु जीव मसा जम जाला। तुम तुम्हरा कहौ कौन हवाला ॥
ये जग झूठ छूट तन नासा। तिरिया पुत्र भर्म भौ फाँसा ॥
जन्मै बार बार भव माईँ। तिरिया पुत्र अनेकन ठाँईं ॥
तन छूटा झूठा भया नाता। जहँ से मुए टूट तेहि साथा ॥
अनेक दाव तन छूटि सिराना। सुख सम्पति सुपने सम जाना ॥

जिन ने तन का घाट सँवारा। ताहि न बूझि अबूझ गँवारा॥
स्वाद करै इंद्री सुख नाना। सुपने का सुख देखि भुलाना॥
जिमि सुख बाम गरल सोइ माना। जग का सुख है ताहि समाना॥
जग रस भोग बिषय रस माया। भोगै भोग छूट तन काया॥
नर तन भौ बारिद कर बेरा। सत सत संगति कीन्ह निबेरा॥
नर तन दुरलभ सब गोहरावै। बार बार यह तन नहिं पावै॥
या मैं भूला अंध अचेता। कीन्हा तन ता से नहिं हेता॥
नखसिख साज कीन्ह सब काया। ता का मन मैं सोच न आया॥
ये घर बार छूटिहै धामा। तन बिनसै वाही से कामा॥
बूझै लेखा लेत हिसाबा। मुसकिल परै न होत जवाबा॥
वा साहिब की राह बिसारी। छूटै सुत बित गृह नर नारी॥
दस दरवाजे पवन समाई। छिन छिन स्वाँस जाइ रे भाई
कीन्हा ठाट अनेकन साजा। छिन छिन बजै कूच कर बाजा
ज्यौं सेमर सूवा साखि भुलाना। टौंट देत पुनि घुवा उड़ाना॥
अस जग बंधन लेखा जानौ। टौंट मारि सुवना पछतानौ॥
सेमर सेवत जनम गँवावा। जनम बीति रस एक न पावा॥
ज्यौं बिल्ली सूवा सँग धाई। येहि बिधि काल रह्यो मँड़राई॥
तू अचेत निद्रा नित सोवा। चोटी काल धरी जब रोवा॥
गाढ़े बंधन भया समाना। बाँधा काल कष्ठ जब जाना॥
जम राजा बिधि बड़ा कसाई। देत मार पुनि कौन छुड़ाई॥
ता ते बूझौ अंध अचेता। ये तन जात भजन बिन बीता॥
आज काज है काल अकाजा। छिन छिन लेखा ले जम राजा॥
तुलसी जिन सतसंगत कीन्हा। सत मत राह संत को चीन्हा॥
ता को जम पूछै नहिं काला। कीन्ही किरपा संत दयाला॥
सतगुरु मारग तुरत लखावा। सतगुरु कृपा अगम घर पावा॥
सतगुरु सोई सत्त दरसावै। भूला आदि अंत घर पावै॥

जो सतसँग सतगुरु ने दीन्हा । संत कृपा से मारग चीन्हा ॥
सतगुरु पदम माहिँ पद माईँ । सतसँग सुरति गगन पर धाई॥
सतगुरु सत्त सत्त सतनामा । सूरति मिली भया निज कामा
ये सतगुरु सत सत्त बतावा । सतगुरु पदम ग्रंथ मैँ गावा ॥
तीनि लोक में भिन्न निवासा । चौथा पद कहै तुलसीदासा ॥
चौथे पद में सतगुरु बासा । तीनि लोक में काल निवासा
पंथी गुरू भेद नहिँ जानै । कान फूँकि फिर भौ में आनै॥
जगत गुरू सतगुरु नहिँ चीन्हा । तन छूटे पुनि काल अधीना ॥
वे सतगुरु गति गाइ सुनाऊँ । पदम पार पर अगम लखाऊँ ॥
सतगुरु सुरति सैल दरसावै । सो सतगुरु सत दया लखावै ॥
सूरति संध सिंध की पावै । ज्यौँ सलिता जल धार समावै ॥
सूरति सार सब्द भई चेली । येहि बिधि आदि अगम खुलि खेली ॥

॥ धमार १ ॥

अहो सत सुरति सहेली, खुलि खेली हो ॥ टेक ॥
गरजि घुमरि घन घोर सोरसखि, घट पट चटक चढ़ाई ।
पल पल पलक पार दल अन्दर, चितवत नैना पट पेली ॥१॥
घर घर से सब गवन सुहागिन, भैँट भवन सब आईँ ।
जिन मोहिँ गैल सैल समुँदर की, कीन्ही दृढ़ भान समेली ॥२॥
गगन गिरा गुरु गाँठि छुड़ाई, भिनि भिनि बाट बताई ।
सूरति सब्द समझ सुन माहीँ, भइ गुरु मारग चेली ॥३॥
मैँ मति मंद फंद फँसि खाना, जाना न भेद भुलाई ।
बिष रस बिषम बिषय मन माहीँ, धोई तुलसी बुधि मैली ॥४॥

॥ धमार २ ॥

अहो रँग राती रँगीली, रस माती हो ॥ टेक ॥
सजत सिँगार सार सुख सागर, दुख सुख दूर बहाई ।
चढ़ि कर महल टहल सतगुरु की, निरखा भिनि भिनि पिय भाँती ॥१

पिय पद परसि पलँग पिउ प्यारी, सब बिधि सेज सँवारि।
रस कस समझ सुरति पिय पद को, मो से कछु कहत न जाती ॥२॥
रैन चैन रस रीत जीत कर, नित नित सैल सुनाई ।
जोइ जोइ सखियाँ समझ घर आईँ, कीन्हा पिय के सुख साथी ॥३॥
तुलसी पोढ़ जोड़ सम सूरति, सोइ सोइ भेद लखाई ।
जे वे सुखी दुखी दुनियाँ मेँ, जुग जुग जम मारत लाती॥४॥

॥ धमार ३

अहो नभ निरखि निहारी, पिउ प्यारी हो॥ टेक ॥
सेत बरन सम सुरति समानी, कारे कँवल निकार ।
पारे पवन भवन सुत लागी, भागी भिनि सब्द बिचारी ॥१॥
दल पर नल निज नैन नगर मेँ, चली चढ़ि सुन्न मँझार ।
लौ की लगन जाइ जिन साजी, भाजी लखि लोक नियारी ॥२॥
नल की नाल चाल चीँटी सम, भँवर गुफा सम धाम ।
ता के पार पदम पद देखा, लेखा निज जनम सुखारी ॥३॥
मिलन मिलाप साफ सुन घर मेँ, सर सम सब्द सुधार ।
सार समझ सुन मारग आई, तुलसी चढ़ सुरति हमारी ॥४॥

॥ धमार ४

अहो अज आदि अतूला, पद भूला हो ॥ टेक ॥
भवन चतुरदस से पद न्यारा, निरगुन जोति न जाइ ।
सुन्न न गगन धरन नहिँ तारा, न्यारा कँवला कहूँ फूला ॥१॥
रवि नहिँ चंद फटिक उँजियारी, खुलि गया अजर किवारा।
महल महा सुन धुनि धधकारी, या से न्यारी चढ़ि झूला ॥२॥
सब्द न सार लार नहिँ सूरति, मूरति मन नहिँ जाई ।
जहँ रहैँ संत अंत कछु नाहीँ, औघट घट खिरकी खोला ॥३॥
अगम अपार पार कहा गाऊँ, जाऊँ नित नित धाइ ।
कंथ को पंथ बेअंत बिचारो, जिमि फाटक पर गज हूला ॥४॥

तुलसी तोल बोल नहिं आवै, जावै जोइ देत जनाई ।
गूढ़ गुप्त परघट नहिं खोलो, गावत सब्दन संग भूला ॥५॥

॥ धमार ५ ॥

अहो सतसंग अमोला, जिन तोला हो ॥ टेक ॥
करि करि संग रंग नहिं जाना, कित बदरी कित काला ।
हाल के हेत हरष सब भूले, या से परिहै भक झकोला ॥१॥
कह कह अंत संत सब हारे, बूझै न सब्द सुधार ।
पार की खबरि सुनत उठि भागे, लागे जिमि माँगत मोला ॥२॥
नहिं कछु दाम धाम धन माँगै, करि परहेत सुनावै ।
लेत न देत हेत साँई के, परमारथ की गँठ खोला ॥३॥
सुनत सुनाइ गाइ बहु भाँती, साधी न समझ बिचार ।
कस कस जार लार भव छूटै, लूटै जम जानत पोला ॥४॥
तुलसी समझ कूर कूकर सम, छाड़ै न सूकर चाल ।
ता से बेहाल काल नित मारै, पारै पद चीन्ह न चोला ॥५॥

धमार ६

अहो सतसंग समाना, जिन जाना हो ॥ टेक ॥
सतगुरु मर्म भर्म गढ़ तोड़ै, मोड़ भये मन दीन ।
लीन्हे चरन सरन सतगुरु के, भीने रस रीति सिराना ॥१॥
जिन के इस्क इष्ट संतन कौ, प्रति प्रति दरसन लार ।
पार का सार धार दरसावै, दुख छूटत भौ भ्रम खाना ॥२॥
दरस परस मन मंजन पाना, सूरति रुचिर निकार ।
देत निहार ताल कर कूँची, ऊगै निरखत घट भाना ॥३॥
उमगी लहर सहर सूरति की, लखि लखि अंड अकार ।
चढ़ि चढ़ि चटक फटिक उँजियारी, तुलसी निज निरखि ठिकाना ॥४॥

॥ धमार ७ ॥

अहो मन भर्म भुलाना, बिष खाना हो ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तीस तैंतीसा, तीन की तरँग तुलाई ।
जाइ जो जवन भवन चौरासी, बासी बस बास निदाना ॥१॥
ज्ञान न ध्यान जान नहिं मानै, मन मत की दिस जाई ।
ता से कर्म ईस सिर ऊपर, बाँधत जम जग फिर ताना ॥२
तपत सिला जिव तपन जरावै, तड़प तड़प दुख पाई ।
वा बिधि वक्त सखत कर गाऊँ, जानै जोइ भोग समाना ॥३॥
तुलसी आज काज नर देँही, फिरि नहिं नर तन हाथ ।
सोवत खात सैन सुख माहीँ, बिनसै घट बीति सिराना ॥४॥

॥ सोरठा ॥

ये मन बिषम बिकार, सार सब्द चीन्है नहीँ ।
कर्म भर्म भौ लार, हाथ हरख आवै नहीँ ॥

॥ चौपाई ॥

जब सत संगत को मन चावै । तब कहूँ पकरि हाथ मैँ आवै ॥
संत समीप चरन चित वारो । तब कछु सूझै पद के पारो ॥
सूरति निरति निकर कर बूझै । लख सत नाद सुरति जब जूझै ॥
अगम निगम नित निरखि निहारा । भाखा आदि अंत पद सारा ॥
अब दृष्टान्त कहूँ इक गाई । रहे सेठ सुन पच्छिम माहीँ ॥
ता का बिधि बरतंत बताऊँ । सब्द साखि बिच भाखि सुनाऊँ ॥
जो बिधि भई बिधी बरतंता । सब्दन मैँ गाई सब संता ॥

॥ रेखता ॥

अली इक बात सुन आई । कहूँ बरतंत समझाई ।
अजब इक बात ताजुब की । सखी सुन कान दे अबकी ॥१॥
समझ लख भेद की बाती । कहत मैँ फटत है छाती ।
चले सजि सेठ पच्छिम सेँ । किया दिल देस दक्खिन को ॥२॥

संग सामान बतलाई । चढ़न घोड़ी और नाहीं ।
सिपाही तीन तुरकानी । करन परदेस दूकानी ॥३॥
बाट बिच सहर एक आया । लखा रुजगार चित चाया ।
सखी सुन सहर का नामा । सहतपुर नग्र नौ ठामा ॥४॥
पैठ सुन स्याम नित लावै । मठी बिच माल सब आवै ।
लोभ मन माल से लागा । समझ कर कीन्ह बहु जागा ॥५॥
खरीदी माल की लीन्हा । बहुत भरती भरत कीन्हा ।
लौंग काली मिरच राई । भरत भरि माल लदवाई ॥६॥
चली रस राह को गाड़ी । रही नौ कोस पर ठाढ़ी ।
जहाँ भट भील मवासी । रहत बन बीच का बासी ॥७॥
सुना लद माल मग ठाड़ा । परा सखि रात को धाड़ा ।
बंद बिच सेठ गये आली । पकरि जंजीर में डाली ॥८॥
सखी सँग तीन उन के री । भये सब नाहि के बैरी ।
करे बस पाँच ने जेरा । रहै पचबीस का पहरा ॥९॥
बिपति कहुँ क्या सुनौ उस की । भये दुख रोग और खुसकी ।
निकरि कहुँ गैल ना पावै । कहौ घर कौन बिधि जावै ॥१०॥
बिसरि घर आदि और अंता । खबर कहै को बिना संता ।
करम बस राह रस खाना । बिना सतसंग भरमाना ॥११॥
मिलै सतसंग मन टूटै । अरी तब बंद से छूटै ।
अली भौ भील ने पकरा । जबर जंजीर में जकरा ॥१२॥
अली बिधि बंद से बाँधा । करम की साधना साधा ।
तिरथ और बर्त आचारा । करत नित नेम बिधि सारा ॥१३॥
लिये फल भोग करमन के । फिरे भौ भाव भरमन के ।
भया भौ काल का चारा । निकर नहिं होत निरवारा ॥१४॥
याद गइ भूलि सब घर की । मिली नर देह सुन अबकी ।
करो मन दीनता लावो । संत से राह तब पावो ॥१५॥

मिटै कर्म काल चौरासी । होइ तब लोक का बासी ।
अली यहि बात से आवै । और बिधि राह नहिं पावै ॥१६॥
तुलसी जब बूझ में आवै । अधर घर आदि अपनावै ।
फटै जब करम कागद के । लखै दुरबीन मन मँज के ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

सुनौ सेठ संवाद, साध समझ कोइ बूझिहै ।
सूझै समझ बिचार, ये अपार मन अगम है ॥

॥ चौपाई ॥

मन की अगम चौज गति गाऊँ । गुन गोबिन्द बरनि येहि नाऊँ॥
बिन सतगुरु येहि धीर न आवै। बिना संत को पीर बुझावै ॥
गुन की गैल गवन नित भागै । सोवत नित सतगुरु सँग जागै ॥
सतगुरु पदम पार बलिहारी । सुरति लखाइ दीन दिल न्यारी॥
नित नित सैल सुरति चढ़ि चीन्हा । तब मन सूरति भया यकीना ॥
लख लख परा पदम पद न्यारा । तब भाखी भिनि सूरति पारा ॥
जग बैराट बना बिधि सारा । अंस सिंध से आनि सँवारा ॥
उठे बैराट बैराट बिधाना । मन तन साथ बँधा सोइ जाना॥
पच्छिम दिसा धाम मन केरी। सो नहिं सुपनेहू मन हेरी ॥
जगत देख दूषन में आया । मन बनियाँ सुन सेठ कहाया ॥
कर्म बंध बिच कीन्ह दुकाना । भर सुभ असुभ माल सोइ जाना॥
बंधन बेद जाल जग माहीं । भै भ्रम भील जँजीर चढ़ाई ॥
नित नित परै काल का डाका। जग जग घेरि कर्म के नाका ॥
चौकी पाँच पचीस बसाई । तीन गुनन बिच नाम गुसाईं ॥
जो कछु माल कर्म का लादा । डाका परा सेठ पर जादा ॥
भये कैद बस सेठ बिचारे । बिना संत कहौ कौन उबारे ॥
भूले सेठ सार घर अपने । बिन सतगुरु छूटैं नहिं सुपने ॥
संत कृपा कोउ राह बतावै । बूझै बाट समझि घर आवै ॥

बिन बूझे नहिँ लगै ठिकाना। जुग जुग भरम खानि भरमाना ॥
जब सतगुरु ने सब्द सुनाया। पच्छिम से दक्खिन को आया ॥
कर दुकान दुनियाँ ने लूटा। माल लुटे पर फिर नहिँ छूटा ॥
चर और अचर खानि जुग चारा। मन सोइ सेठ बंद बिच डारा ॥
सज्जन साध करै निरवारा। उतरै भौसागर के पारा ॥
सूरति चढ़ै सब्द निरवारा। नहिँ तो रहै काल की जारा ॥
कर्म काल ने माल डरावा। जग जम जाल खरीदन आवा ॥
जा की रमज रेखता गाई। बूझै साध समझ जिन पाई ॥
बेहोसी जग फाँस फँसाना। निज घर अपना आदि न जाना ॥
संत दयाल सब्द दरसावै। ये मन बिच सुपने नहिँ पावै ॥
निस दिन फिरै अचेत अयाना। जुग जुग भरमै चारो खाना ॥
अब चित बिच कछु चेत कराई। दुरलभ तन नर देही पाई ॥
दृग से देख चेत चित माहीँ। ये जग जाल बहा भौ माहीँ ॥
मन घरबार बाट बिच रोका। ब्यापै नित नित संसय सोका ॥
अब या का इक सब्द सुनाऊँ। संत साध की साखि बताऊँ ॥

॥ शब्द १ ॥

दृग देखौ रे चित चेतौ रे, ये जग जात बह्यौ ॥ टेक ॥
ये घटवार घाट घट रोकै, धोखे धार बहावै।
नौका नाव धाइ धसि पैठै, बैठै मन थिर लावै ॥
बाट बटाऊ लेतो रे ॥१॥
सुर नर मुनि गंधर्ब अरु देवा, ब्रह्मा बिष्नु करत मन सेवा।
बिन घट भेद न जानै भेवा, नारद ब्यास न पावै छेवा ॥
बेद पुकारत नेतो रे ॥२॥
ये तन तोर तलैया सूखै, काँच महल कूकर कृत भूसै।
आसा आस पास पद चूकै, बार बार बिष घर घर टूकै ॥
भटक भटक भ्रम लेखो रे ॥३॥

तुलसी मगर मीन मुख माईं, चर और अचर चराचर खाई ।
साईं सब्द सुरति के माईं, ये बिधि लार लार लौ लाई ॥
मन ब्रत तत सत सेतो रे ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

अरी पिया परखौ री हिया हरखौ री, एरी आली आदि अटा ॥टेक
अलख अकेली चली अलबेली, पेली परख निहारी ।
सैली सुरति निरखि नभ न्यारी, सो धन पिया को लागै प्यारी ॥
चलौ सखि पिय सँग घर को री ॥१॥
चतुर सहेली सुन पर खेली, मेली मूर वहाई ।
धाइ धार पार भट मेली, घट चढ़ चटक चढ़ाई ॥
घुमरि घुमरि घन करको री ॥२॥
बदरी स्याम सुँदर खुन न्यारी, ये मत मूर न जानै अनारी ।
संत अधर रस अंत बिचारी, जग बिष रस भौ खानि भिखारी ॥
संध सुरति सत सरकौ री ॥३॥
ये लै लार पार पट माहीं, लाई तत्त नियारी ।
तुलसी मरम सरम सतगुरु को, पूर परम गुरु आई ॥
कोइ सतगुरु सिष तरको री ॥४॥

॥ दोहा

जिन सतगुरु सरना तका, पका सुरति के माहिं ।
जाइ पदमपुर कँवल मँ, हरख जो हिये समाइ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि सखि प्यार पुरुष का गाऊँ । ता मैं आदि अंत दरसाऊँ ॥
जो जस भया भाव बिधि लेखा । तस तस भाखौं अगम अलेखा ॥
बहु बिधि भाव बिपति से पाये । दुख सुख बिरह भाव दरसाये ॥
खोजत खोजत खोज लगावा । गुरु ने समझ बूझ समझावा ॥
भेष पंथ सब झारि निहारी । कोई न भाखा भेद बिचारी ॥
ढूँढ़त ढूँढ़त भई बेहाला । सब जग जीव परे जम काला ॥

कोऊ न कहै बात सत के री । सब जग पचे भेष पर हेरी ॥
ब्याकुल तन मन बिरह समानी । कोई न कहै पिया पद जानी ॥
सत मत पत की पीर समानी । बिकल बिपत चित कहा बखानी ॥
ये जग भीतर काल कराला । बाँधा सब जग जम बिच जाला
तन हबूब बुल्ला जस फूटा । स्वाँस स्वाँस छिन छिन दम छूटा ॥
पवन भवन बिच स्वाँस समानी। जीव निकरि जस हवा उड़ानी
ज्यों सुपना जग जग जस माना। सोवत जुग जुग पिया न जाना
दुर्लभ देह दाव अब आया । धृग जीवन जिन पिया न पाया॥
सुन या को बिधि सब्द लखाऊँ । बिधि बिहाग बिच बरन सुनाऊँ ॥

॥ बिहाग १ ॥

बिपति कासे गाऊँ री माई । जगत जाल दुखदाई ॥ टेक ॥
रात दिवस मोहि नींद न आवै । जम दारुन जग खाई ॥ १ ॥
पिय के ऐन बिन चैन न आवै । हर दम बिरह सताई ॥ २ ॥
जा दिन से पिय सुधि बिसराई । भटक भटक दुख पाई ॥ ३ ॥
तुलसीदास स्वाँस सुख नाहीं । पिय बिन पीर सताई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग २ ॥

आली री हिये हरष न आवै । कारे की लहर ज्यों सतावै ॥टेक॥
तन मन सुधि बुधि सब बिसराई । अन्न पानी नहिं भावै ॥१॥
कहा करौं कित जावँ सखी री । पिय बिन नींद न आवै ॥२॥
है कोइ सतगुरु पिय को लखावै । पत पिय पीर बुझावै ॥३॥
तुलसी तलफ तलफ तन सूखै । मन बिच थिर नहिं लावै ॥४॥

॥ बिहाग ३ ॥

अरी कहँ खोजौं री माई । गुरु बिन भेद न पाई ॥ टेक ॥
खोजत खोजत जनम सिराना । काहू न खोज लखाई ॥ १ ॥
भेष पंथ सब खोजि निहारी । जोग बैराग गुसाईं ॥ २ ॥
अब मन मोर, गुहार पुकारा । त्राह त्राह तन माईं ॥ ३ ॥
तुलसी तलब सुलभ जब पाई । सतगुरु अलख लखाई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ४ ॥

आली री गुरु गैल लखाई । अलख पलक पर पाई ॥ टेक ॥
दृग दुरबीन चीन्ह जब पावा । हर दम सुरति लगाई ॥ १ ॥
लीला सिषर निकर नभ न्यारी । छिन छिन सुरति समाई ॥२॥
पच्छिम द्वार पार पट खोले । अगम निगम गम पाई ॥ ३ ॥
तुलसी तत्त तरक तन माहीं । अस आतम दरसाई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ५ ॥

आली री आगे खोज लगाई । चढ़ि सुति गगन समाई ॥ टेक ॥
मकर तार मारग लखि पावा । ता बिच धधक चढ़ाई ॥ १ ॥
मानसरोवर निरखि निहारी । बेनी मैं पैठि अन्हाई ॥ २ ॥
भीतर भिन्न चिन्ह भइ न्यारी । कोटि भान छबि छाई ॥ ३ ॥
ता मध बीच द्वार इक दरसा । साहिब सिंध कहाई ॥ ४ ॥
तुलसी सुरति सब्द सुन माहीं । गुरु पद सुरति मिलाई ॥ ५ ॥

॥ बिहाग ६ ॥

आली री इक अचरज बानी । गुरुमुख आप बखानी ॥ टेक ॥
चौथे चार पार इक स्वामी । लखि भिनि नाम अनामी ॥ १ ॥
सूरति सैल महल पिय पाया । रूप न रेख निसानी ॥ २ ॥
मैं मिलि जाइ पाइ पिय अपना । जल जल धार समानी ॥ ३ ॥
प्यारी प्रीति जीति पिय पाये । तुलसी तलब बुझानी ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ७ ॥

आली री आज अनंद बधाई । पिय पद परसि पठाई ॥ टेक ॥
ये सुख चैन सैन कहा गाऊँ । कहि कहि संत सुनाई ॥ १ ॥
आदि अनादि अमर पद पावा । दुख सुख बिपति नसाई ॥ २ ॥
अब सब मरन जिवन भ्रम भागा । पिय प्यारी पद पाई ॥ ३ ॥
तुलसीदास बास घर अपने । अली सुख कहत न जाई ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

ये सुख का का कहौं बिचारा । जानै जोई कीन्ह निरवारा ॥
सतगुरु से लेखा जिन पावा । बिन गुरु हाथ न काहू आवा ॥

गुरु गुरु अंतर जानौ भाई। गुरु चिकटा गुरु चोख जनाई॥
अस अस गुरुमत बूझि बिचारा। सत सतगुरु मत इन से न्यारा॥
सतगुरु सत मत अगम लखावै। जा से जीव परम पद पावै॥
जग के गुरू भेद नहिं जानैं। ज्यौं बनियाँ कर हाट दुकानै॥
आप आदि अपनी नहिं जानी। सिष कहो कस पावै सहदानी॥
जो संतन खुत राह पुकारी। सो सब खोजि खोजि पचि हारी
जगत जीव संसार बिचारा। ये कहा जाने सार असारा॥
जस जस कीन दीन समझाई। तस तस बाँधी गाँठि लगाई॥
इन सब आस बास फँस मारा। केहि बिधि उतरै भौजल पारा
जगत गुरू बिस्वास न माना। उनहूँ सतगुरु राह न जाना॥
तुलसी सतगुरु सत्त लखावा। पुनि चढ़ि गये आदि घर पावा
मैं संतन कर दास निकामा। किरपा कीन्ह दीन्ह वोहि धामा॥
मैं पुनि कलप कलप कर भूला। नीच जानि मेटेउ दुख सूला॥
बुधि मतिहीन जानि किये छोहा। संत कृपाल काटि मद मोहा॥
सतसँग सतगुरु पंथ लखावा। सतगुरु संत पंथ सत पावा॥
चौथे पद सतगुरु जिन जाना। ता का आवागवन नसाना॥
जग गुरुवा से काज न होई। सत्त कही राखो नहिं गोई॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सतसँग सार, जग असार जानै नहीं।
सूरति सत मत द्वार, लखि अगार संतन कही॥१॥
जग अबूझ अज्ञान, सना करम बस कस लखै।
पूजै जल पाषान, योँ भुलान भौ मैं परा॥२॥

छंद

सतसंगति गाई जिन जिन पाई। करम नसाई पार भई॥१॥
जिन कही बखानी देखि निसानी। जिन जिन घर की राह लई॥२
बूझै मत दूरा कोइ कोइ सूरा। अगम अपूरा सार सही॥३॥

उन की गति न्यारी संत बिचारी । भेद अपारी पार भई ॥४॥
उन उन गोहराई ग्रंथन गाई । भेद सुनाई बूझि दई ॥५॥
मन मैं मद माते बिष रस खाते । सहैं जम लातैं मार सही ॥६॥
कोइ कहै बुझाई मन नहिं लाई । महा मद माहीं ज्ञान गई ॥७॥
मति अपनी ऊँची और की नीची । बुधि बिष सींची मान मई ॥८॥
संतन गति पावै भूल छुड़ावै । संत लखावैं भेद कही ॥९॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तत्त बिचार, जो अगार आगे कही ।
सही संत बिधि बात, संत साथ पावै सही ॥

॥ बिलावल ॥

तुलसी जग हाल साल, काल जाल माहीं ॥टेक॥
पंडित और भर्म भेष, देखा सब अंध अचेत ।
भुला ब्रत इष्ट टेक, पाहन लै लाई ॥
तीरथ असनान ध्यान, खोजत नर चारि धाम ।
ढूँढ़त पोथी पुरान, मूरत मन माहीं ॥
देखा सब जगत भेष, नेक खोज नाहीं ॥१॥
कोइ कोइ जपै इष्ट जाप, आपा चीन्है न आप ।
बाँधे सिर मोट पाप, साफ नरक जाई ॥
बूझै सतसंग सार, पावै संतन की लार ।
मन का मद मूर मार, सार पार पाई ॥
जाना मन भूल तोड़, पोढ़ सुरति साईं ॥२॥
छिन छिन तन छीन जात, बूझै नहिं एक बात ।
तेरे कोउ कोउ न साथ, जाति पाँति नाहीं ॥
सम्पत सुख लार छार, निरखौ सुत नाहिं नार ।
कुटुम बंध लोक चार, भूला भल भाई ॥
ये कोउ तेरे न लार, जग असार जाई ॥३॥

तुलसी तन होत छार, या से अगमन बिचार।
कीजै भव उतर पार, नौका नसि जाई॥
बूझै कोइ संत साध, सूझै कछु अंत आदि।
जूझै चढ़ि सुरति नाद, लखि अनादि पाई॥
पावै पद पुरुष दाद, साध सुरति माईं॥४॥
मानौ सज्ञान सीख, मँगिहौ भौखानि भीख।
भाखौ अज अमर लोक, देख द्वार माईं॥
जनमन और मरन छूट, करमन की फाँसि टूट।
सूझा मत साँच झूठ, लूटा जग जाई॥
तुलसी मुख कहै बैन, नैन नजर आई॥५॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी जगत भुलान, ज्ञान स्यान मद आप मँ।
बूझै सत मत नाहिँ, आप अपनपौ ना लखै॥

॥ चौपाई ॥

भूला सब जग आपा माहीं। आप अपनपै खोजत नाहीं॥
मनमत मान बूझ नहिँ आवै। अपना ज्ञान ऊँच ठहरावै॥
अपनी बुध सुध मनमत माहीं। ता से ज्ञान स्यान गति गाई॥
अपनी मनमत रत गत सानी। मान बड़ाई ज्ञान अज्ञानी॥
तुलसी जग अपने मन माईं। ज्ञान स्यान और मान बड़ाई॥
जा से कहूँ ज्ञान बिधि गाई। सो पुनि आन मोहिँ समझाई॥
मैँ कहुँ एक ज्ञान बिधि भाई। वो पुनि चार मोहिँ समझाई॥

॥ संबाद साथ पलकराम नानक पंथी के ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम इक नानक पंथी। रहै कासी में बड़ी महंती॥
कहते वाह गुरू मुख आये। मन अति लीन दीन गति गाये॥
पैर परन हमहूँ पुनि कीन्हा। उठ कर पकर चरन को लीन्हा॥

चाल बिधी जस साधन राही । जस जस देखी उनके माहीं ॥
अंतर दया भाव दिल दीन्हा । महिमा संत अंत नहिं चीन्हा ॥
संत प्रीत मन पूरा भावै । सुनै कोइ संत आप उठि धावै ॥
तन मन रहत संत सरनाई । मन उमगै मुख संत बड़ाई ॥
सील सुभाव नीच मन माहीं । मिलै संत चरनन लपटाई ॥
निरमल बुद्धि ज्ञान रस राता । मन सब चरन प्रीत हित बाता ॥
हमैं देखि हिये हरप समानी । चरन परे ढुरै नैनन पानी ॥
जस कछु रीत साध मत माहीं । तस तस तुलसी उन मैं पाई ॥
करता पुरुष नाम सत मानै । निरंकार जोती सोइ जानै ॥
पौड़ी सोदर पढ़ै अनेका । जपजी का परमारथ देखा ॥
आदि पुरान पचग्रंथी जानै । सुषमनि आसावार बखानै ॥
गुरु गोबिंद मुख भाखै बानी । बादसाह दस मैं सहदानी ॥
ग्रंथ बिहंगम कछु कछु जाना । पढ़े और कुल झारि बिधाना ॥
संत चरन मन मैं रत जानै । हम से पूछ दीन मत आनै ॥
बावे निरंकार कहि गावा । और निरंजन जोति बतावा ॥
इनके परे और नहिं कोई । अस बावे मुख भाखा सोई ॥
वाह गुरू वाह गुरू बतावा । बावे मुख ग्रंथन मैं गावा ॥
लछमीचंद पुत्र बतलावा । दूसर सिरीचंद कर गावा ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

साहिब नानक संत निदाना । जो कछु कहनि कही परमाना ॥
खुद साहिब नानक मुख बानी । कही अगम कोइ बिरला जानी ॥
वै पहुँचे चढ़ि सुरति निसाने । सब्द फोड़ गये अगम ठिकाने ॥
वै स्वामी गति अगम अपारा । तुलसी बन्दै बारम्बारा ॥
बार बार बन्दौं सरनाई । तुलसी चरन धूर मैं पाई ॥
साहिब नानक बड़े दयाला । गये अधर मारे जम काला ॥

और कबीर संत रस पाये । काल जीति सत सब्द समाये ।
औरन की गति कहँ लग गाई । जो जो गये अगमपुर ठाईं ।
तुलसी निज निज दास तुम्हारा । सरनि जानि मोहिँ कृपा निहारा ।
नानक नैन नजर भर हेरा । तुलसी नीच चरन का चेरा ॥
सतसंगति गति अगम अपारा। तुलसी बन्दै बारम्बारा ॥
तुलसी हरष न हिये समाई । जब से परसे तुम्हरे पाँई ॥
संत रीति गति सब बिधि देखा। जस जस कही रीति रस लेखा ॥
जस नानक मत कहा अपारा । तस तस मुख भाखा सब सारा ॥
एक समय बावे गति लेखा। गोरख गुष्टी भई अनेका ॥
नवौ नाथ चौरासी सिद्धी । बावे कीन्ह गुष्टि की ऋद्धी ॥
ऐसे ग्रन्थ साखि बतलावा । बावे ग्रन्थ आप मुख गावा॥
जपजी के परमारथ माहीं । बावे गुष्टि भिन्न करि गाई ॥
सब सिद्धन से चरचा कीन्ही । पुनि बावे गति काहु न चीन्ही ॥
या की बिधी ग्रन्थ के माहीं । मैं सुच्छम बिधि भाखि सुनाई ॥
जस जस भई गुष्टि बिधि भाई। भाखी जप परमारथ माहीं ॥
चौरासी सिध और नौ नाथा। दीन होइ जोड़े सब हाथा ॥
हारि चरन बावे के लीन्हा । बावे साथ जो भये अधीना ॥
तुलसी दीन भाव कर बोले । पलकराम से पूछन खोले ॥
स्वामी अरज एक चित आई । कृपा दृष्टि कर भाखि सुनाई ॥
बावे बरस बिधी कस भइया । सम्बत बरस की बिधी सुनइया॥
बावे को कितने दिन भयऊ । गोरख कौन समय मैं रहेऊ ॥
गोरख सम्बत एकसै ग्यारा । हुए गोरख सोइ सम्बतसारा ॥
एकसै ग्यारा सम्बत माहीं । गोरख कुँडली मैं बिधि गाई ॥
नवौ नाथ चौरासी सिद्धा । उपजे सुकदेव तब की बिद्धा ॥
माया खैंचि पलकभर राते । उपजे सुकदेव तब की बातैं ॥

पाँच हजार बरस तेहि भइया। सिध चौरासी समय तेहि रहिया॥
बावे कितने बरस प्रमाने। सम्बत कौन कौन से जाने॥

॥ पलकराम ॥

तुलसी स्वामी कहूँ बुझाई। पंद्रहसै अस्सी के माहीं॥

॥ तुलसी साहिब ॥

अब सोलह सै सोलह जाना। बावे बिधी कहूँ परमाना॥
जेते दिन बावे को बीता। सो बिधि बरनि कहूँ सत रीता॥
पंद्रहसै अस्सी के माहीं। अब सोलह सै सोलह भाई॥
छत्तिस बरस बावे बिधि जाना। पंद्रहसै पाँच गोरख परमाना॥
पंद्रहसै बरस गोरख भये आगे। बावे बिधी गुष्टि नहिं लागे॥
छतिस बरस बावे बिधि साँचा। गोरख भये पंद्रह सै पाँचा॥
ये तो बिधी मिली नहिं स्वामी। ग्रन्थ माहिं कस गुष्टि बखानी॥
गोरख पंद्रह सै भये आगे। छतिस बरस बावे को लागे॥
इन की गुष्टि कौन बिधि भइया। तुलसी के मन संसय रहिया॥
भर्म एक मोहिं और समाना। पलकराम कहूँ भाखि बखाना॥
चौरासी सिध और नौ नाथा। ये तो भये सुकदेव के साथा॥
पाँच हजार बरस तेहि भइया। बावे कुल छत्तीस कहइया॥
इन उन गुष्टि कौन बिधि कीन्हा। ये बिधि मिलि नहिं आवै यकीना
कस कस पलकराम पहिचानै। ये साँची कहौ कैसे मानै॥
पलकराम साधू सकुचाना। भर्म बहुत मन अपने आना॥
पूछा ज्वाब भेद नहिं पाई। पलकराम मन बूझ समाई॥
पलकराम साधू बड़े भोले। कहै तुलसी अस कहि कर बोले॥
कहै तुलसी मैं दास तुम्हारा। तुम्हरे चरन माहिं निरवारा॥

॥ पलकराम ॥

तुलसी स्वामी करो बखाना। या का मन मैं भर्म समाना॥

॥ तुलसी साहिब ॥

पलकराम सुनियौ बिधि बानी। बावे की बिधि कहौं बखानी ॥
वे गोरख बिधि नहीं बताई। ये गोरख है तन के माहीं ॥
पिंड माहिं ब्रह्मंड समाना। गोरख तन मैं संत बखाना ॥
मन बस गोइंद्री के माहीं। गोरख गोरख नाम कहाई ॥
मन गोरख को गुष्ट सुनाई। ये बावे अपने मुख गाई ॥
नौ मैं नाथ द्वार मन जाई। नौनथ मन नौनाथ कहाई ॥
चौरासी चौरासी खाना। करि करि गुष्ट फेरि मन आना ॥
गोरख मन गोइंद्री साथा। नथ नौद्वार सोई नौ नाथा ॥
नित नित परै चौरासी खाना। मन चौरासी सिद्ध बखाना ॥
कही बावे नानक मुख बानी। तन भीतर अंदर पहिचानी ॥
जो संतन मुख भाखि सुनाई। सो सब तन अंदर मैं गाई ॥
दसवाँ महल गगन के माहीं। सूरति चढ़ी द्वार दस जाई ॥
ता को दसवाँ महल बताई। सूरति चढ़ि कीन्हो पतसाही[1] ॥
सूरति इत उत चढ़ि दस द्वारा। तेहि दसवाँ पतसाह बिचारा ॥
गुरु गोबिंद जी बावे कहिया। पातसाह दसवाँ बतलइया ॥
नौ को तजि दसवैं घर गइया। दसवाँ पातसाह येहि कहिया ॥
नानक सूरति चढ़ी अकासा। नौ को तजि दसवैं मैं बासा ॥
दसवाँ महल दस द्वार कहाई। सूरति साथ नाम पतसाही ॥
पातसाह दस महल बताई। नानक येहि बिधि मुख से गाई ॥
पलकराम मन मैं हुलसाना। तुलसी सब घट माहिं बखाना ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी पूछौं बानी। बूझ मता की करौ बखानी ॥
मन सुति कहौ कहाँ से आई। कस कस दसवैं महल समाई ॥

---

(१) बादशाही।

आदि अंत बिधि बिधि समझावौ। तब को हता सोई बतलावौ ॥
मूल भेद मोहिँ कहिये स्वामी। तब को हता सही पहिचानी ॥
मूल को भेद भिन्न कहौ गाई। है बाहर कै तन के माहीँ ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम मैँ तुम्हरी दासा। सुन बिधि कहौँ बचन परकासा॥
पलकराम भाखूँ बिधि बानी। जब नहिँ आदि अंत नीसानी॥
नहिँ तब बेद बिधी का चीन्हा। नहिँ तब हता बेद जिन कीन्हा
नहिँ तब आदि निरंजन देवा। ब्रह्मा बिष्नु महेस न सेवा ॥
नहिँ तब आदि सक्ति निरमाया। नाम बिदेह धरी नहिँ काया ॥
नहिँ तब पाँच तत्त ब्रह्मंडा। नहिँ चर अचर खानि भया अंडा
नहिँ बिस्तार सरीर बनाया। सूर चंद आकास न माया ॥
नहिँ तब नादि आदि कछु अंता। जगत न रहै भेष और पंथा ॥
नहिँ तब रूप रेख नहिँ काया। मन बुधि सुरति एक नहिँ आया॥
जब निरगुन हुआ हता न भाई। सरगुन की कहौ कौन चलाई ॥
जोति निरंजन नहिँ निरकारा। सास्त्र पुरान न बेद बिचारा ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

पलक राम पूछै अस बाता। कस कस हता कहौ बिख्याता ॥
कहौ बिधि भाखि अगम की बानी। तब को हता कहौ सहदानी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम सुनियौ दै कानी। आदि अंत भाखौँ सहदानी ॥
चौथे पद सत मत सत नामा। पातसाह दस याहि बखाना ॥
नानक सुरति महल पर कीन्हा। पक्के पातसाह सोइ चीन्हा ॥
नानक सूरति चढ़ी अटारी। वाह गुरू पद निरखि निहारी ॥

वाह गुरू चौथे पद बासा । गये नानक सतनाम निवासा ॥
नानक बिधि सब अपनी भाखी । जो जो लखा अगम की आँखी॥
वा की नकल ग्रंथ मैं गाई । जगत अबूझ बूझ समझाई ॥
नि:अच्छर अच्छर मैं नाईं । तेहि की नकल ग्रंथ बिधि गाई॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी करौ बखाना । नि:अच्छर का कौन ठिकाना ॥
नि:अच्छर बासा केहि ठाईं । ता की बिधि मोहिं बरनि सुनाई
को है सब का सिरजनहारा । कस कस किया आदि बिस्तारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सत्त नाम सुत निरगुन राई । तास अंस जोती उपजाई ॥
जोती निरगुन हते न तेही । रह सतनाम पुरुष बैदेही ॥
जब ओंकार आदि नहिं भाई । पूरन ब्रह्म हते नहिं जाई ॥
ररंकार अच्छर नहिं काला । तब नहिं मन मन कीन्हो जाला
ओअँग सोहंग हते न भाई । आदि अंत मद्ध कछु नाहीं ॥
सत कर आदि सुरति घट माहीं । नि:अच्छर मैं आनि समाई ॥
सूरति नि:अच्छर से आई । सूरति सोहँग को उपजाई ॥
ता को बास अगमपुर ठामा । सोहँग कीन्हा सकल बिधाना ॥
आगे भेद कोऊ नहिं पावै । स्वाँसा सोहँग कहि गोहरावै ॥
सोहँग का कोइ भेद न पाई । सोहँग स्वाँसा है नहिं भाई ॥
तत्त पाँच गुन तीनि की स्वाँसा । सोहँग सुरति कीन्ह परकासा ॥
सोहँग है ब्रह्मंड के पारा । सोहँग सब मैं कीन्ह पसारा ॥
नाम भेद वाहू से न्यारा । जानक सत्त नाम पद सारा ॥
चौथा पद सतनाम अकाया । ता के परे अनाम अमाया ॥
नाम सुरति बिधि सब के माहीं। अगम भेद कोऊ नहिं पाई ॥

चहूँ लोक मैँ व्यापक नामा। न्यारा चहूँ लोक मैँ जाना॥
वा की संध सुरति नहिँ पाई। सूरति संध राह नहिँ जाई॥
मूल नाम जानै नहिँ कोई। ता तैँ सूरति रही बिगोई॥
निरगुन सरगुन सब ठहरावै। ता के आगे भेद न पावै॥
पलकराम सुनियौ दै काना। निरगुन अच्छर ब्रह्म बखाना॥
निरगुन ररंकार है सोई। निरंकाल काल है जोई॥
निरगुन नाम निरंजन होई। संत काल भाखै तेहि सोई॥
सत्त नाम इनहूँ से न्यारा। ये बावे मुख कही बिचारा॥
निरगुन कहियत है ओंकारा। सत्त नाम बिधि अगम अपारा॥
घट म सुरति आदि से आई। नाम निअच्छर अच्छर नाहीं॥
निःअच्छर अच्छर बिस्तारा। नाम भेद वाहू से न्यारा॥
नाम डोरि है सब के माहीं। नाम भेद कोउ चीन्है नाहीं॥
निरगुन सरगुन नाम बतावै। सत्त नाम का मरम न पावै॥
बिन सतसंग समझ नहिँ आवै। सतगुरु बिना राह नहिँ पावै॥
चौथा पद सत नाम बसेरा। वाह गुरू का वाँही डेरा॥
वाह गुरू सतनाम कहाये। ये बावे मुख अपने गाये॥
सूरति चढ़ै गगन को धावै। वाह गुरू पद जाइ समावै॥
वाह गुरू पद पदम मँझारा। ये बावे मुख भाखा सारा॥
वाह गुरू मुख भाखि बखानै। वाह गुरू का मरम न जानै॥
वाह गुरू चौथे पद पारा। सूरति चढ़ि देखै सत सारा॥
ये बावे मुख भाखि बखानी। वाह गुरू चौथे पद जानी॥
बावे वाह गुरू बतलावा। तुम ने याहि गुरू मन लावा॥
याही गुरू जगत के कीन्हा। वाह गुरू का मरम न चीन्हा॥
याहि गुरू जग सभी भुलावा। चेला पंथ दुकान लगावा॥
वाह गुरू पद इन से न्यारा। निरगुन सरगुन दोउ के पारा॥
ये नानक बिधि भाखि बखाना। पलकराम सुनियौ दै काना॥

परे साध कढ़ियाव बतावा । तुम दुकान बनिये बिधि लावा ॥
कढ़ियावै सुति परे को साधा । योँ बावे भाखी बिख्यादा[१] ॥
सुरति काढ़ि पर साधे कोई । तुम कढ़ाव हलुवे बिधि जोई ॥
हलुवा कढ़ाव न बावे गाई । सुरति काढ़ जिव घर को जाई ॥
पंथी पंथ दुकान लगाई । लालच हलुवे लाभ बड़ाई ॥
बावे कहा और बिधि लेखा । घर दुकान नहिँ किया बिबेका ॥
बावे अगम निगम बिधि गाई । सुरति काढ़ जिव घर को जाई ॥
भौजल छूटि जीव मुक्तावै । सूरति मिलै सब्द जब पावै ॥
सूरति सब्द पंथ बतलावा । तुम हलुवे का पंथ चलावा ॥
सूरति चढ़ै पंथ के जाई । तुम पंथी इक जाति बनाई ॥
पंथी राह भेद नहिँ पावा । येहि बिधि बावे पंथ न गावा ॥
ये कढ़ाव मन परघट जाना । गुप्त संत मत और बखाना ॥
संत मता सब दूर चनावे । बावे संत दूरि गति गावै ॥
ये तौ कढ़ाव दरब संग होई । गुप्त संत औरै गति जोई ॥
दरब कढ़ाव हलुवे में होता । जगत खरीद मुक्ति करि लेता ॥
जा से समझि परा सब लेखा । संत गुप्त कछु औरै देखा ॥

॥ पलकराम उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी सत्त सँवारा । संत मता सब गुप्त पुकारा ॥
स्वामी तुलसी जो तुम भाखी । बावे कही मिली सब साखी ॥
सूरति शब्द पंथ बिधि गाई । येहि बिधि बावे ग्रंथ सुनाई ॥
बावे बचन और तुलसी बानी । गुप्त कही सो भई निसानी ॥
निरंकार बेद बतलावै । आदि जोति बिधि भेद लखावै ॥
इन का भेद जगत सब कहिया । संत का मता बेद नहिं पइया ॥
संत का मता बेद नहिं जानै । निरंकार और जोति बखानै ॥

(१) विख्यात ।

निरंकार बेद ने भाखी । जानै न संत मते की साखी ॥
संत मते को दूर पुकारा । निरंकार से होइहै न्यारा ॥
निरंकार तौ बेद बतावा । संत मते का अंत न पावा ॥
गुप्त संत मत न्यारा होई । जहँ निरंकार जोति नहिं दोई ॥
निरंकार को बेद बखाना । संत गुप्त मत और ठिकाना ॥
सत्त पुरुष सतनाम कहाई । निरंकार जहँ जोति न जाई ॥
तीनि लोक निरंकार समाना । बेद नेति बिधि करत बखाना ॥
सत्त नाम चौथे के माहीं । निरंकार नहिं बेदन पाई ॥
इन के परे संत मत जाना । यौं मत बावे गुप्त बखाना ॥
तुलसी स्वामी ये मत सूझा । तुम्हरी कृपा गुप्त अस बूझा ॥
संत मता कछु इन मैं नाहीं । संत मता बिधि औरै राही ॥
ये कढ़ाव बिधि कर्म पसारा । वाह गुरू इन बिधि से न्यारा ॥
ये तौ याह गुरू जग नाता । वाह गुरू बिधि औरहि ब्राता ॥
याहि गुरू ने कढ़ाव बखाना । वाह गुरू मत संतन जाना ॥
याहि गुरू चेला बिधि राही । पौड़ी चेला दीन्ह सुनाई ॥
पौड़ी पढ़ पढ़ जन्म गँवाया । पौड़ी का कछु भेद न पाया ॥
पौड़ी का कछु अरथ बिचारै । पौड़ी चढ़ि तब अगम निहारै ॥
पौड़ी नाम सीढ़ी सहदानी । सूरत चढ़ी अगम घर जानी ॥
पौड़ी चढ़ै तब गुरुवा पावै । वा गुरु सुरति कंज मैं लावै ॥
पौड़ी पढ़ि पढ़ि जनम गँवावा । बावे पौड़ी सुरति चढ़ावा ॥
येहि बिधि स्वामी बूझ मैं आई । तुम ने कही सो सत्त समाई ॥
बावे गूढ़ गुप्त मत भाखी । तुम ने कही सूझि तब आँखी ॥
हम पौड़ी पढ़ने बिधि जाना । तुम ने पौड़ी चढ़न बखाना ॥
तुम्हरा बचन सत्त कर माना । पलकराम के हृदे समाना ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम पुनि हौ तुम साधा। बूझी बावे बचन समाधा ॥
अस कोइ साध बिबेकी होई। संत मते को बूझै सोई ॥
संतन की जो बानी बिबेका। सोई साध को मिटि है धोका ॥
संत मते की राह नियारी। पलकराम तुम खूब बिचारी ॥
जो कोइ संत सरन में आवै। दीन होइ संतन सिर नावै ॥
आपा पंथ भेष नहिं राखै। दृढ़ कर सत्त सत्त मत भाखै ॥
संत बिना और टेक न मानै। पंथ टेक सब झूठी जानै ॥
पंथा पंथी भेष भुलाना। ता से संत मता नहिं जाना ॥
संत सरन पापी तरि जाई। जो निंदक आवै सरनाई ॥
बिना संत नहिं लगै ठिकाना। यह बिधि बावे कही बखाना ॥
निंदक संत पातकी भारा। बावे कही न उतरै पारा ॥
जो कोइ सत्त संत को जाना। ता की सूरति मिलै ठिकाना ॥
बिना संत सूरति कहँ जाई। बिना संत संध कौन लखाई ॥

॥ पलकराम उवाच ॥

॥ दोहा ॥

पलकराम तुलसी कही, समझि लखी बिधि खूब।
रोम रोम में रमि रहा, नानक साह महबूब ॥१॥
सब में नानक रमि रहा, कही बावे मुख आप।
चर और अचर बताइया, दूजा लखै सो पाप ॥२॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

नानक कही पुकार, पलकराम बिधि ग्रंथ में।
मैं बसूँ सब के माहिं, नानक यह मुख से कही ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम सुनियौ बिधि रीती। पंथ भेष सब करैं अनीती ॥
कहि नानक मैं सब के माहीं। ये चेला करै कौने राही ॥

नानक बिना कोई जिव नाहीं । ये चेला कस करै बनाई ॥
जहँ नानक खुद आप बिराजा । सेवक कहै कौन बिधि साजा ॥
सब मैं नानक आप समाना । तौ पुनि सभी गुरू सम जाना ॥
ये बिधि या को बूझि बिचारा । जब होइ है जग से निरवारा ॥
नानक सब मैं आप बखाना । तुम ने जेहि सेवक करि ठाना ॥
ये तौ बड़ी अनीती जानौ । नानक को सेवक कर मानौ ॥
पंथ भेष याही मैं भूला । ये तौ कर्म भेद बिधि मूला ॥
सब मैं स्वामी संत बतावा । तुम स्वामी के स्वामि कहावा ॥
तुम निस्तार राह नहिं पाई । स्वामी को सेवक ठहराई ॥
सेवक होइ नन्हाँ रहै[1] भाई । स्वामी पद को दूर बहाई ॥
मोटे भये बहे जग माहीं । नन्हैं नौका पार लगाई ॥
चीनी[1] बारू माहिं गिराई । हाथी मोटे हाथ न आई ॥
नन्हीं चींटी चुनि चुनि खाई । नन्हाँ रहै हाथ कछु आई ॥
अब बावे मुख साखि बताऊँ । एक साखि मुख भाखि सुनाऊँ ॥

॥ साखी ॥

नानक नन्हाँ होइ रहै, जैसे नन्हीं दूब ।
बड़ी घास जरि जायगी, दूब खूब की खूब ॥

॥ चौपाई ॥

गुरू बने नहिं होइ गुजारा । चेला बनै मिलै कछु सारा ॥
अब दादू की साखि बताऊँ । दादू कही सोई बिधि गाऊँ ॥

॥ साखी ॥

दादू मैं सब गुरु किया, पसु पंछी बनराय ।
सुछम थूल[2] खाली नहीं, सबही माहिं खुदाय ॥१॥
तुलसी तू मैं जो तजै, भजै दीन गति जोइ ।
गुरू नवै जो सिष्य को, साध कहावै सोइ ॥२॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "नन्हाँ रहै" की जगह "निहारै" और "चीनी" की जगह "चींटी" अशुद्ध जान पड़ता है। (२) सूक्ष्म और स्थूल।

॥ चौपाई ॥

तुलसी तत मत सब के माहीं। गुरु बने कछु हाथ न आई ॥
येहि बिधि सब सब संत पुकारा। चेला बनै होइ निरवारा ॥
तुलसी मैं अति नीच निकामा। मैं गुरु बिन कछु नाहिं बखाना
मैं किंकर संतन कर दासा। सतसंगति मैं सुना बिलासा ॥
अस अस संत सबन मिलि गाई। दास बने जिन जिन कछु पाई
तुलसी ता से पंथ न कीन्हा। भेष जगत भया पंथ अधीना ॥
जो कछु संत पंथ बिधि गावा। सो बिधि पंथ कोऊ नहिं पावा ॥
तुलसी मैं कछु जानौं नाहीं। पलकराम तुम्हरी सरनाई ॥
मैं हौं संत चरन की लारा। बन्दौं चरनन बारम्बारा ॥
संत बिना कोउ देखि न आना। सत सत सुरति संत को माना ॥
मोरे इष्ट भाव नहिं दूजा। संत समान और नहिं पूजा ॥
तुलसी और इष्ट नहिं सूझै। सुरति संत चरन पर जूझै ॥
जो कोइ कहै कह्यौ कस गाई। मैं तो संत चरन सरनाई ॥
नानक कही येही बिधि बानी। संत चरन बिन और न मानी ॥
सुखमनि संत चरन बिधि गाई। देखौ नानक ग्रंथ मँझाई ॥
और और जो संत अनेका। जिन सब राखि संत पद टेका ॥
जे महातमा भये अगारा। संत सरन सब सबी पुकारा ॥
संत से अधिक कोऊ नहिं राखा। देखौ सब संतन की साखा ॥

॥ दोहा ॥

संत सरन सब सब तरे, बिना संत नहिं अंत ।
जा को संत लखाइया, पुनि तिन पायौ पंथ ॥१॥
देखौ आदि अनादि से, बेद न पावै पार ।
तिरदेवा जोगी जती, सब कहै संत अगार ॥२॥
संत लखी कोउ ना लखै, अगम रीति रस सार ।
संत कृपा जेहि जेहि करैं, सो जन उतरै पार ॥३॥

॥ छंद ॥

संतन गति गाई अगम सुनाई । जिन जिन पाई पार भई ॥१॥
सब सब मिलि गावा महूँ सुनावा । अगम अथाहा आदि कही ॥२
देखौ निज बानी संत बखानी । जिन जिन जानी जानि लई ॥३॥
सतसंगति गाई भर्म छुटाई । संत सहाई राह दई ॥४॥
जग जीव न जानी अकथ कहानी। कोइ न मानी मार सही ॥५॥
कर्मन के मैले बहु रस पेले । कर कर चेले भार लई ॥६॥
मद मान पुजावै राह न पावै । चहुँ दिस धावै भर्म ग्रही ॥७॥
सत रीत न जानी संत बखानी । सुन सुन ज्ञानी कर्म रही ॥८॥
को भाखै लेखा सुनै न एका । बाँधे टेका भेख बहे ॥९॥
जड़ पाहन पूजै और न सूझै । बूझ न चेतन चित्त गहे ॥१०॥
सतसंग न जाना सुनै पुराना । मन बुधि बानी बाद बहे ॥११
तुलसी कहि गाई सत मत राही । जिन जिन पाई गाइ कहे ॥१२॥

॥ सोरठा ॥

ये गति अगम अपार, संत सार गति कस लखै ।
सकै संत के साथ, पकै चरन चित मैं चखै ॥१॥
सतगुरु दीन दयाल, करि निहाल अगमन दये ।
रहै चरन बिधि चाल, गहि अकाल तुलसी किये ॥२॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम अस कही बिचारी । दरसन किये भये सुख भारी ॥
संत गती सुनि ग्रंथ बखानी । तस तस तुलसी महिमा जानी॥
अस कही पलक नैन भरि आये । हिरदे उमँगि दीन गति गाये ॥

॥ सोरठा ॥

पलकराम कहै बात, नैन उमँगि ढुरि ढुरि बहै ।
लहै स्वाँस पर स्वाँस, बहै नीर धारा सही ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम बिधि ऐसी देखी । जैसे साधू बिरह बिबेकी ॥
सतसँग कीन्ह लीन मत माहीं । जस जस साध रीति सत चाहीं

॥ दोहा ॥

पलकराम मत दीन गति, तुलसी कही बिचार।
साध लच्छ बिधि जस कहै, तस तस इन के लार॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

जो कढ़ाव बिधि भेद बतावा। सो तौ सब सादृष्ट दिखावा॥
वाह गुरू बिधि कही बनाई। सो भी बूझ समझ मैं आई॥
गोरख की तुम कही बखाना। सो भी सत्त सत्त बिधि जाना॥
चौरासी सिध नौ नाथ बतावा। बावे साथ और बिधि गावा॥
पौड़ी सीढ़ी बावे कहिया। या बिधि खूब खूब समझइया॥
गुरु गोबिंद बिधि कही बखाना। सोभी साँच साँच कर माना॥
दसवाँ महल कहा समझाई। सो भी बिधो सत्त दरसाई॥
तुलसी स्वामी बूझौं बाता। ग्रंथ बिधी भाखौ बिख्याता॥
बावे आदि ग्रन्थ कस भाखा। पौड़ी की बिधि कस कस राखा॥
पचग्रन्थी सुखमनी बनाई। आसावार जपजी को गाई॥
या कौ भेद कछु कहौ बुझाई। ग्रन्थ बिधी बावे कस गाई॥
तुलसी स्वामी कहौ बिचारी। कहौ बखानि बावे बिधि सारी॥
या कौ मो को भेद बतावौ। ग्रन्थ भाव बिधि बिधि दरसावौ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुनौ हो स्वामी। निज मोहिं जानौ दास समानी॥
जो कछु बूझा बिधी बिधाना। सो ग्रन्थन बिधि कहूँ बखाना॥
पिरथम आदि ग्रन्थ गति गाऊँ। ता का मता भेद दरसाऊँ॥
आदि ग्रंथ बावे अस भाखी। ता मैं कही कहूँ सब साखी॥
आदि ग्रन्थ कह्यौ या कौ नामा। आदि से बँधी ग्रन्थ जिव जाना॥
जड़ चेतन जिव ग्रन्थ बँधानी। जब रचना बैराट बखानी॥
आदि से जीव ग्रन्थ जड़ संगा। सो कहै आदि ग्रन्थ रस रंगा॥

आदि ग्रन्थ जड़ चेतन माहीं । ता को आदि ग्रंथ बतलाई ॥
अस बावे मुख भाखी बानी । जड़ चेतन की गाँठि बँधानी ॥
अब पुनि पाँच ग्रंथ बिधि भाखा। सब बिस्तार कहूँ बिधि ता का॥
यह बैराट पाँच तत माहीं । पाँच तत्त तन बिधी बनाई ॥
धरती पवन गगन और नीरा । अगिनि पाँच मिलि रच्यो सरीरा॥
पाँच तत्त मिलि ग्रन्थि बँधानी । पचग्रन्थी जेहि नाम बखानी ॥
पाँच तत्त जड़ चेतन संगा । पचग्रन्थी मेँ ये रस रंगा ॥
ये बिधि बावे करी बखाना । बूझैंगे कोई संत सुजाना ॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारा । संत मता पुनि ता के पारा ॥
पिंड ब्रह्मंड हता नहिं भाई । जब की भाखौं साखि सुनाई ॥
जीवत निरखि नैन से देखा । मता संत का अगम अलेखा ॥
अब आसा के वार बताऊँ । ता की बिधी भेद समझाऊँ ॥
पाँच ग्रंथि जड़ चेतन आवा । ता को आसा वार बतावा ॥
आसा वार बँधा जग माहीं । आसा पार की सुधि बिसराई॥
आसा पार की राह भुलाना । आसा वार कर्म लिपटाना ॥
ता से आसा वार बतावा । आसा पार का मरम न पावा ॥
तब से जीव भयौ संसारी । आसा पार सुधि नाहिं सम्हारी
यह बिधि तत्त ग्रंथ जेहि माहीं । आसा वार बिधी यों गाई ॥
यह बिधि सतसंगति से पावै । मिलै संत बिधि सब दरसावै ॥
बिना संत किरपा नहिं पावै । मिलै संत बिधि सबै लखावै ॥
यह सुखमनी बिधी बिधि गाया । जो जो बावे ग्रन्थ बुझाया ॥
इड़ा पिंगला सुखमन माहीं । स्वाँसा पवन चढ़ै तेहि राही ॥
पाँचौ मुद्रा साधै जोगी । इंद्री जीत छाँड़ै रस भोगी ॥
मुद्रा पाँच बिधी बिधि साधै । सुखमनि मुद्रा धरै समाधै ॥
न्यारा न्यारा नाम बताऊँ । पाँचौ मुद्रा पुनि दरसाऊँ ॥
खेचरि भूचरि साधै सोई । और अगोचरि उनमुनि जोई॥

उनमुनि बसै अकास के माहीं। जोगी बास करै तेहि ठाहीं ॥
ये जोगी मति कहा पसारा। संत मता पुनि इन से न्यारा ॥
जोगी पाँचौ मुद्रा साधै। इड़ा पिंगला सुखमनि बाँधै ॥
सुखमनि घाट सुख मनी बताई। मानसरोवर आगे पाई ॥
जोगी मानसरोवर राखा। बावे अम्मरसर नहि भाखा ॥
जो पंजाब अमरसर गाया। सो बावे ने नहीं बताया ॥
अम्मरसर है अगम के माहीं। न्हात अमर होइ संत बताई ॥
करि असनान अमरसर माहीं। अमर होइ बावे अस गाई ॥
तुम तलाव मैं निस दिन न्हावा। अमर भया कोउ नजर न आवा
नित नित जीव अनेकन न्हावै। गृस्थ फकीर जगत सब जावै ॥
देखौ अमर एक नहिं भइया। न्हाइ न्हाइ सब जनम गँवइया॥
अम्मरसर असनान को पावै। चढ़ि असनान अमर होइ जावै
बावे गगन अमरसर गावै। करि असनान अमर पद पावै॥
जो जो गये अमरसर माहीं। ता का आवागवन नसाई॥
ये अम्मरसर पिरथी माहीं। पानी पैठि पैठि सब न्हाई ॥
जीव साध कोइ अमर न पाई। न्हाइ न्हाइ सब बैस बिताई ॥
जीवत अमर न मूए जावै। नित नित पैठि अमरसर न्हावै॥
ये तो अमरसर पानी भाई। वो अम्मरसर गगन समाई ॥
सूरति चढ़ै गगन मैं न्हाई। वो अम्मरसर बावे गाई ॥
और संत बरनन जो कीन्हा। कहि तेहि मानसरोवर चीन्हा॥
अम्मरसर करि कहेउ बखानी। मानसरोवर तेहि को जानी॥
करि असनान हंस होइ जाई। हंस होइ पुनि घर को पाई ॥
चौथा पद हंसा सोइ पावै। जीवत वाह गुरू मिलि जावै ॥
वाह गुरू चौथे पद पारा। सो चेला वाह गुरू निहारा ॥
जब लगि वाह गुरू नहिं पावै। तब लगि निगुरा जीव कहावै ॥
मानसरोवर संत बखाना। बावे अम्मरसर कहि माना ॥

सुखमनि घाट अमरसर पाई। ये बावे बिधि ग्रन्थन गाई ॥
ये जिव जप परमारथ पावै। अम्मरसर को सुरति चढ़ावै ॥
जप परमारथ बावे गावा। जब जिव चढ़ै गगन पर धावा ॥
जपजी को परमारथ याही। सूरति सुखमनि घाट अन्हाई ॥
सूरति जपै परे रित माहीं। जपजी को परमारथ याही ॥
सुखमनि ब्रावे सुरति चढ़ाई। सो जपजी परमारथ गाई ॥
पढ़े गुने कछु हाथ न आवा। पढ़ पढ़ बादै जनम गँवावा ॥
सुखमनि मारग संत के पासा। सुरति संत लख चढ़ै अकासा ॥
या को भेद संत से पावै। जो वे मिलैं घाट बतलावैं ॥
सुखमनि राह संत नित जावैं। परमारथ जप राह लखावैं ॥
ये बिधि भेष पंथ मैं नाहीं। भाखै जाति पंथ बिधि राही ॥
जैसे जगत जाति को माना। तैसे पंथी जाति बखाना ॥
पलकराम सुनियौ चित लाई। ये बिधि बावे सत्त लखाई ॥
तुम तौ पड़े पंथ के माहीं। जाति पाँति लेखे की राही ॥
पंथ राह कछु अगम कहाई। पंथ अगम बिधि बावे गाई ॥
सूरति बावे पंथ लखावा। सूरति चढ़ी गगन पर धावा ॥
गगन पंथ मारग को पावै। ता कौ संत पंथ मत गावै ॥
जाति पंथ मैं ये बिधि नाहीं। संत अजाति जाति नहिं जाही ॥
संत अजाति जाति नहिं मानैं। पंथ जाति बिधि एक न जानैं ॥
भेष जाति पंथी के माहीं। संत अजाति अगम घर जाई ॥
अगम पंथ चढ़ि अगम बतावा। अनुभौ भई संत गति गावा ॥
पलकराम बिधि समझ बिचारा। भेष पंथ से भेद नियारा ॥
पंथी जात जगत ब्यौहारा। या से कधी न उतरै पारा ॥
कर कढ़ाव हलुवा बनवावा। ता मैं से छै भाग कढ़ावा ॥
एक भाग गुरु पानी राखा। गुरु दरियाव ताहि को भाखा ॥
ऐसे अंध अचेत अबूझा। गुरु दरिया पानी मैं सूझा ॥

गुरु दरियाव राह नहिं जाना । हलुवा पानी डार बखाना ॥
ये बावे नहिं कही बिधाना । गुरु दरिया पानी मैं जाना ॥
गुरु का दर दरवाजा भाई । ता को गुरु दरियाव बताई ॥
गुरु दर दरवाजा जो पावै । सुखमनि घाट अमरसर न्हावै ॥
गुरु के दर दरवाजे माहीं । चढ़ै सो गगन अगम घर जाई ॥
जग गुरु दर दरियाव न चीन्हा । हलुवा पानी डार जो दीन्हा ॥
वाह गुरू पानी मैं जाना । जा को हलुवा चढ़न बखाना ॥
ऐसे बुद्धि हुई जम काला । हलुवा ले पानी मैं डाला ॥
वाह गुरू दरियाव न पावै । बिना संत कहौ को दरसावै ॥
बावे पानी गुरू न भाखो । देखौ दृष्टि ग्रन्थ मैं साखी ॥
बावे कही राह सोइ छूटी । पोल पोल सगरा जग लूटी ॥
इक बट डंड बाँस को पूजा । देखौ जड़ सँग लगे अबूझा ॥
चेतन ब्रह्म कहै सब माहीं । झंडा जड़ हलुवा कहु खाई ॥
अस अस भूल भर्म बस बूड़ा । संत मता कस मिलै अगूढ़ा ॥
नानक की जो बानी बूझै । तौ तुलसी सगरा मत सूझै ॥
आप डूब और जगत डुबावा । आदि अंत का मरम न पावा ॥
अस अस अंध धुंध का लेखा । वाके बचन नहीं कोइ पेखा ॥
तुलसी कहै नीच गति मोरी । सरनै पलकराम मैं तोरी ॥
मोरी कहनि अबूझ न मानो । मैं तुम्हरे चरनन लपटानो ॥
मैं किंकर संतन कर दासा । संत चरन बिन मोर न आसा ॥

॥ सोरठा ॥

पलकराम सुन ज्ञान, कहूँ ब्यान समझाइ कै ।
संतन करी बखान, सो बिधि बिधि तुम से कहूं ॥

॥ चौपाई ॥

सब्द ग्रंथ सुन भाखि सुनाऊँ । संतन मुख बानी समझाऊँ ॥
मन की लहर कहर को बूझै । जा को संत मता मत सूझै ॥

सब्द साखि मैं कीन्ह बखाना। बूझै सज्जन समझ समाना ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी संत सुजान, जानि समझि सुलटी कही ।
ये जग जान अयान, बिन समझै उलटी लगै ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम इक सब्द सुनाऊँ । ता मैं सब बरतंत बुझाऊँ ॥
रमक रेखते मैं बिधि गाई । पलकराम सुनियौ चित लाई ॥

॥ रेख़ता ॥

अली इक बात सुन सुलटी । बिना समझै लगै उलटी ॥१॥
कही सब संत ने बोली । गूढ़ मत गुप्त नहिं खोली ॥२॥
सुरत मन बुद्धि नहिं जावै । लखन मैं कौन बिधि आवै ॥३॥
अरी नहिं बेद ने जाना । कहत कर नेत गोहराना ॥४॥
जुगत जोगी नहीं जानी । ज्ञान नहिं ध्यान बिज्ञानी ॥५॥
जगत और भेष नहिं जानै । पढ़े पंडित्त भरमाने ।६॥
सकल तिरलोक लौं गावै । निरंजन जोति ठहरावै ॥७॥
अगम रस राह नहिं सूझै । संत मत कौन बिधि बूझै ॥८॥
अस्त रवि होन अँधियारा । हिये तम रूप मैं सारा ॥९॥
मिलै गुरु गैल बतलावै । तिमर तन बीच से जावै ॥१०॥
लखै लख संत के बैना । सुरति सुरमा खुलै नैना ॥११॥
तरक ताली खुलै ताला । निरखि तहँ होत उँजियाला ॥१२॥
अधर घर सुरति चढ़ धावै । अगम गति गूढ़ तब पावै ॥१३॥
सुरति जब उलट कर बूझा । उलट सब सुलट कर सूझा ॥१४॥
तुलसी तन बीच मैं हेरा । सुरति मन बुद्धि को फेरा ॥१५॥
कहनि कछु और बिधि गावै । उलट की सुलट कर भावै ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी समझ बूझ मन लावै । तब उलटी सुलटी कर भावै ॥
बिन सतसंग बिबेक न होई । संत बिना सूझै नहिं सोई ॥

झंडा तन बिच बीच बिचारा । गुरु दरियाव गगन के पारा ॥
अम्मरसर में पैठि अन्हाई । सो जिव सहज अमर होइ जाई॥
सो संतन ने नभ पर जोवा । तुम तलाव पानी तन धोवा ॥
वा का सतगुरु से लछ पावै । दीन दया सोइ भेद बतावै ॥
बेद मता संतन सम जानै । ऐसी मूरख बुद्धि बखानै ॥
संत अंत बेदन नहिं जाना । देखौ सुखमनि बावे बखाना ॥
बेद मता जो मूढ़ ठहरावै । संत का मता गूढ़ नहिं पावै ॥
या का सब्द साखि बतलाऊँ । पलकराम तोहि भाखि सुनाऊँ ॥

॥ सोरठा ॥

संत मता भौ पार, बेद बिधी जानै नहीं ।
सतगुरु सब्द अपार, भेप भेद जग भर्म मैं ॥

॥ रेख़ता ॥

बेद मत मूढ़ ठहरावै । संत मत गूढ़ नहिं पावै ॥१॥
पड़े भ्रम जाल के मूला । बेद बस कर्म के सूला ॥२॥
करै अली इष्ट मन रचि कै । मुए भ्रम भाव सब पचि कै ॥३॥
जिवत कोइ दरस ना पावै । मुए पर मुक्ति गोहरावै ॥४॥
अली ये जगत सब अंधा । पड़ा बस काल के फंदा ॥५॥
कहनि नहिं संत की भावै । बाट कहौ कौन बिधि पावै ॥६॥
भूल जुग चारि से आई । खानि बस मैल मन माहीं ॥७॥
भटक नर देह अब आया । ज्ञान चित चीन्ह घर पाया ॥८॥
गहे सत संत के चरना । निकरि भौसिंध से तरना ॥९॥
समझि लखि जीव कौ काजा । मरे सब जगत की लाजा ॥१०॥
तुलसी तन छूटि जब जावै । बहुरि नर देह नहिं पावै ॥११॥
पाहन और इष्ट पानी का । झूठ भ्रम खानि जाने का ॥१२॥
निकरि निरवार नहिं पावै । समझ सतसंग से आवै ॥१३॥
जगत दिन चारि का सँग है । भीख भौखानि मैं मँगिहै ॥१४॥

॥ सोरठा ॥

ये तन रतन समान, बार बार पावै नहीं।
सतगुरु करत बखान, सुपन जानि जग पेखना॥

॥ चौपाई ॥

जग दिन चार लार के संगी। फिर भै खानि भीख भै मंगी॥
ऐसा या जग का ब्यौहारा। जनम जात जूवा जस हारा॥
संत सब्द उलटा करि गाई। समझ बूझ मन काहू न पाई॥
पलकराम सुन सुलटी बानी। कोऊ सुलटि समझ नहिं जानी
कह संबाद सेठ परसंगा। ये बूझौ सब अपने अंगा॥
जेहि बिधि राह रेखता कीन्हा। या को आनौ समझ यकीना॥
उलटी चाल संत की बोली। बिन परचे को परदा खोली॥
अस उलटी उन कही अगूढ़ा। पंडित भेष न जानै मूढ़ा॥
पलकराम नहिं ग्रन्थन माहीं। पचि पचि मरे खोज नहिं पाई॥
सुनौ सेठ की कथा सुनाऊँ। ता की बिधि बरतंत लखाऊँ॥
सेठ रीति से बीती न्यारी। जगत भाव बरतंत बिचारी॥
पलकराम सुन सेठ सँबादा। वा पर भई जगत से ज्यादा॥
अब रस रीति रेखता गाऊँ। पलकराम तोहि बरन सुनाऊँ॥

रेखता ॥

सखी सुन सेठ संबादा। भई जग रीति से ज्यादा॥१॥
गुइयाँ सुन बात परसंगा। भये जग मान से भंगा॥२॥
अली सुन साह पर बीती। कहूँ क्या बात अनरीती॥३॥
कँवलपुर नगर के बासी। पुत्र गये तीर्थ को कासी॥४॥
सेठ घर नारि और पुत्री। रहै मन चित्त से उतरी॥५॥
चले दोउ जहाज समुँदर मैं। बहुत धन माल सुन घर मैं॥६॥
सुनौ एक दिवस की बाता। कहूँ बरतंत बिख्याता॥७॥
नारि ने यार इक कीन्हा। पुत्री नर इस्क मैं लीना॥८॥
कहूँ क्या बात इक दिन की। कर्म भै भाग मैं जिन की॥९॥

दिवस इक सेठ ने चीन्हा । पकर वोहियार को लीन्हा ॥१०॥
भया इन तीन मैं झगड़ा । लड़की लगवार को पकड़ा ॥११॥
सखी भये सेठ उदासी । कही दोउ जाउ तीर्थ कासी ॥१२॥
सेठ कहै बात सेठानी । मरम मारग मनै जानी ॥१३॥
बेटी बिधि और तुम संगा । करौ जग जाइ रस रंगा ॥१४॥
नहीं घर मैं रहन पावौ । निकरि कासी नगर जावौ ॥१५॥
गुसा सुन नारि उठि बैठी । चली सँग माय और बेटी ॥१६॥
गुसा बिष निकरि कर घर से । मिले कहै नारि नहिं बरसे ॥१७॥
बीच इक नगर मुलताना । रही बस राति को जाना ॥१८॥
फजर उठि रैन की जागी । चलन दर मँजल को लागी ॥१९॥
बाट बिच सहर आनूपा । राइ बलवान सुन भूपा ॥२०॥
सुवर सीकार को निकरे । कुँवर मद मान मैं जकरे ॥२१॥
दोऊ सँग डगर के माहीं । नारि दोउ नजर मैं आईं ॥२२॥
रहै बरसात का महिना । लखे पग पाँव के चीन्हा ॥२३॥
सुनौ उस भूप की बाता । बिधी बिधि बात बिख्याता ॥२४॥
कहे नृप राइ ने बैना । पुत्र सुन बात की सैना ॥२५॥
पाँव के चिन्ह चित लावो । ताहि पर दृष्टि ठहरावौ ॥२६॥
बड़े बिधि पाँव की नारी । मिलै सोइ नारि हम्मारी ॥२७॥
चलै सोइ चाल पग छोटी । हिये मन पुत्र के चोटी ॥२८॥
सुनौ इक बात अचरज की । कहूँ बरतंत सुन इस की ॥२९॥
बड़ी रही डील मैं बेटी । माय तन डील मैं हेठी ॥३०॥
भूप ने लीन्ह बेटी को । कुँवर लई माय हेठी को ॥३१॥
गये घर सहर महलौं मैं । करैं रस केल फेलौं मैं ॥३२॥
भूप घर पुत्र नारी का । कहूँ बिधि भेद सारी का ॥३३॥
नानी खुस खेल बालक को । खुसी होइ कहत मालिक को ॥३४॥
मौज मैं बात इक आई । कहूँ बरतंत मन भाई ॥३५॥

बेटो सुत पुत्र है नातो। लगे दिल देवर इक भाँती ॥३६॥
कुँवर भइया भात भाखा। नारी कहै नात नाती का ॥३७॥
दोऊ मेँ झटक झटकारा। करै कोइ संत निरवारा ॥३८॥
तुलसी ये भेद को जानी। सोई है साध परमानी ॥३९॥
बात बिधि अगम को बूझै। हिये की दृष्टि से सूझै ॥४०॥

॥ दोहा ॥

पलकराम यह सेठ को, बूझा बिधि बरतंत।
सेठ सेठानी पुत्र को, समझैँगे कोइ संत ॥

॥ चौपाई ॥

अस अस मता संत सब गाया। भेष गुरू कोइ भेद न पाया ॥
वाह गुरू बावे समझाऊँ। सोई सतगुरु संध दरसाऊँ ॥
जस जस संत अगम गति गाई। लखि लखि पिया रूप दरसाई ॥
निरखा घाट बाट मध माहीँ। सो बसंत मेँ समझि सुनाई ॥
हद अनहद के पार ठिकाना। लखि अरूप पुनि रूप बखाना॥

॥ बसंत ॥

लखि लखि लखिया पिय को रूप। जहँ अनहद बाजा बजै अनूप ॥टेक॥
बिजली चमकै अति अपार। गगन घोर नहिँ वार पार।
मन मतंग जहँ सुनत भूप। इंद्री सँग तजि रहै चूप ॥१॥
मानसरोवर हंस घाट। ले चढ़ि लागी अगम बाट।
अरध उरध मुख औँध कूप। चाँद सुरज नहिँ छाँह धूप ॥२॥
सूरति सुनि सतगुरु के बैन। निरखत हरखै हिये के नैन।
अरध़ पंथ इक गली है गूप। जहँ इक साहिब अति अनूप ॥३॥
कोट भान छबि रोम तेज। तीन लोक कोइ पड़ै न पैज।
तुलसी निरखि नित अज[१] अरूप। चढ़ि सूरति गइ पछिम पुहुप ॥४॥

॥ सोरठा ॥

रूप रेख नहिँ भेष, सो अरूप अंदर लखा।
संत चरन पद पेख, देखा हिये दृग नैन से ॥

---

(१) अज = अजन्मा। मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ "अजब" अशुद्ध है।

॥ चौपाई ॥

लख लख लख पिया जानि बखाना। हद अनहद के पार ठिकाना॥
अलख खलक दोऊ से न्यारा। पलकराम अस अगम अपारा॥
जिन सतसंग कीन्ह तिन जाना। बिना संग नहिं समझ समाना॥
पलकराम मैं पल पल वारी। तुलसी तुम्हरा दास बिचारी॥
बार बार चरनन सिर नाऊँ। सरन जानि कीजै निरबाहू॥
मैं अजान कछु जानौं न भेवा। तन मन चरन संत की सेवा॥
भाखा ज्ञान अबूझ न मानौ। मैं तुम्हरे चरनन कौ जानौं॥
जो जो बावे करी बखाना। ता की बिधि मत कहेउँ विधाना॥
जो बिधि बाबे कही बनाई। सो बिधि मैं तुम कान सुनाई॥
पलकराम यह भूल बताओं। मन मैं निंदा समझ न लाओ॥
निंदा संत करै कोइ नाहीं। निंदा चौरासी ले जाई॥
तत नानक कही भाखि बखाना। सो तुलसी ने कही बिधाना॥
बावे पाहन नाहिं पुजावा। तुम सिष को पाहन बतलावा॥
पाहन पूजा साध न गावैं। और जीव को नाहिं बतावैं॥
साधू चेतन आतम भाखा। चेतन की पूजा बिधि राखा॥
तुम सिष जड़ पूजा बतलावा। पाहन आसा बास लखावा॥
छूटै तन पाहन मन जावै। आसा जहँ जेहि तहाँ समावै॥
पुनि पाहन मैं होइहै बासा। अस अस सिष्य बँधाई आसा॥
गुरु गोबिंद ग्रंथ गति गावा। ता मैं बिधी सब्द बतलावा॥
सुनौ सब्द मैं भाखि सुनाऊँ। गुरु गोबिंद बानी मुख गाऊँ॥
पूजा पाहन नहीं बताई। देखौ गोबिंद ग्रन्थ मँझाई॥
देखौ ग्रन्थ मैं या की साखी। एक सब्द तुलसी कहि भाखी॥

॥ सवैया ॥

काहू ने पूजि धरौ सिर पाहन, काहू ने लिंग गरे लटकायो॥१॥
काहू बुतान[1] को पूजत है पसु, काहू मृतान[2] को पूजन धायौ॥२॥

---

(१) बुत = मूर्त्ति। (२) मुर्दों।

कूर क्रिया उरझौ सबही जग, वाहगुरू को भेद न पायौ ॥३॥
आदि गिरंथ को भूल गये सब, नानक बानी चित्त न लायौ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

येहि बिधि गोबिंद ग्रन्थ लखाई। देखौ सब्द ग्रन्थ के माहीं ॥
औरौ सुनो भूल इक गाऊँ। गुरु गोबिंद की साखि बताऊँ॥
गुरु गोबिंद मुख अपने गावा। ग्रन्थ बिधी मैं देखि बुझावा ॥
कृष्न राम भगवान जो भाखा। नहीं काल ने उन को राखा ॥
गुरु गोबिंद ग्रन्थ मैं गावा। भये भगवान काल ने खावा ॥

॥ सवैया ॥

कालै खाइ गयौ भगवान, सो जाग्रत या जुग जा की कला है ॥१
कालै खाइ गयौ ब्रह्मा सिव, कालै खाइ गयौ जोगिया है ॥२॥
कालै खाइ सुरासुर गंधर्ब, जच्छ भुजंग दिसा बेदिसा है ॥३॥
इंद्र मुनिंद्र सबै बस काल, इक नानक संत अकाल सदा है ॥४॥

॥ चौपाई ॥

सब्द साखि इक ग्रन्थ बतावा। नानक राम रहीम न गावा ॥
राम रहीम बेद नहिं माना। गुरु गोबिंद मत और बखाना ॥
ता की सब्द साखि सुनि लीजे। गुरु गोबिंद कही सो कीजै ॥

॥ सवैया ॥

पाँव गहे जब तैं तुम्हरे, तब तैं कोउ आँखि तरे नहिं आन्यौ ॥१
राम रहीम कुरान पुरान, अनेक कहे मत एक न मान्यो ॥२॥
सिम्रित सास्तर बेद कह्यो, बहु भेद कह्यौ हम एक न जान्यो ॥३॥
कहै नानक किरपा तुम्हरी कर, मैं न कह्यो सब तोहि बखान्यो ॥४॥

॥ चौपाई ॥

नानक ग्रन्थ मता अस गावा। तुम्हरा ग्रन्थ साखि बतलावा ॥
तुम्हरे भेष पंथ के माहीं। ग्रन्थ विधी कोउ बूझै नाहीं ॥
बावे कही सो नहिं तुम मानी। तुम ने अपना मनमत ठानी ॥
कही भगवान काल ने खाया। बावे ग्रन्थ मैं येहि बिधि गाया॥

तुम भगवान सत्त बतलावा । बावे सब्द असत्त लखावा ॥
राम राम सब सिष्य सिखावा । बावे सब्द काल सब गावा ॥
राम रहीम सब्द सब तोड़े । बावे पानी मेँ सब मोड़े ॥
अपने घर बावे की बानी । सब्द कही तुम एक न मानी ॥
बावे राम रहीम उठाये । तुम कहौ इष्ट कौन बिधि लाये ॥
नानक सब्द मेँ दिये उठाई । और कहै निंदक बतलाई ॥
पिरथम नानक सब्द बिचारौ । निंदक भाव और पर डारौ ॥
नानक राम रहीम उठावा । ता को निंदक नहिँ ठहरावा ॥
और जो कहै सत्त की बानी । ता को निंदक कर कर मानी ॥
ये तौ नानक सब्द पुकारे । राम रहीम काल बस डारे ॥
नानक पंथी जाकर नामा । नानक कही चले परमाना ॥
नानक कही बिधी नहिँ मानै । सब्द ग्रन्थ की साखि न जानै ॥
राम साखि बावे नहिँ माना । राम रहीम बेद नहिँ जाना ॥
ये तुम्हरे मति बावे गाई । ता को छाड़ि और मति धाई ॥
अपने गुरु मति राह बिचारौ । बावे कही सोई मति धारौ ॥
अब कहूँ एक बिधी बिधि गाई । पलकराम सुनियौ चित लाई ॥
साध दया आतम बिधि जानै । आतम कष्ट बहुत दुख मानै ॥
साध दयाल दया अस गावैँ । आतम दया बहुल बिधि लावैँ ॥
ऐसे ग्रन्थ संत सब गावैँ । बावे को दयाहीन न भावै ॥
दयाहीन बहुतै अधमाई । आतम हतै सो काल कसाई ॥
देखौ संत मते मेँ रीती । आतम हत सब कही अनीती ॥
पलकराम ये कैसी रीती । साहिबजादे करैँ अनीती ॥
लड़की[1] मारि करैँ अजगूता । यह हत्या आतम होइ भूना ॥

---

(१) पंजाब मेँ आम तौर पर और ख़ास कर जाटोँ मेँ (जिस क़ौम के लोग सिक्खोँ मेँ कसरत से हैँ) भ्रून हत्या यानी दुख़्तर-कुशी का रिवाज बड़ी कसरत से था । मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ "लड़की" के बदले हर जगह "बकरा" का शब्द रख दिया गया है ।

यह तो आप आतमा नासा। छूटै नहीं भोग बिन बासा ॥
जो चेतन बसै लड़की माहीं। सो चेतन है अपने ठाहीं ॥
लड़की देँह दृष्टि करि देखी। ता मैं अदृष्टि ताहि नहिं पेखी ॥
साधू देँह दृष्टि नहिं मानै। बोलै अदृष्टि ताहि पहिचानै ॥
देँही दृष्टि जगत की रीती। साधू देखै चेतन सेती ॥
ता को नास करौ तुम भाई। बावे यह बिधि कही अधमाई ॥
यह तुम पाप कीन्ह केहि काजा। साध दया मति आवै न लाजा ॥
ग्रन्थ माहिं देखौ तुम जाई। आतम हत्या साध न गाई ॥
या बिधि भूल करौ अजगूता। जम राजा बँधिहै मजबूता ॥
साखी बावे मति की जाना। पर-आतम हत नरक निदाना ॥
आज गृहस्थ लड़की जो मारै। ता को जगत अधम करि डारै ॥
साध बने यह कर्म बिचारौ। हिरदे दया नेक नहिं धारौ ॥
साधू चलै अनीती लारा। गृहस्थी डरै पाप के भारा ॥
औरौ सुनौ एक अधमाई। बिन बकरा मरे मास न आई ॥
बकरा मरै जीव दुख पावै। तब पुनि मास कसाई लावै ॥
आतम मरै कष्ट के माहीं। कसकै साधू देँह धुजाई ॥
ऐसे निष्ट साध जो खावैं। तिन को साधू कहि कहि गावैं ॥
दयाहीन इंद्री सुख भावै। जिभ्या रस मट्टी बतलावै ॥
जो कोइ पूछै कस कस खाई। तुम ता कौ मट्टी बतलाई ॥
जिवहत्या कछु नाहिं बिचारा। ऐसे साध अनीति अधारा ॥
करै स्वाद मट्टी बतलावै। इंद्री स्वाद बिधी नहिं गावै ॥
मट्टी तौ तब जानैं भाई। ढेला खेत उठावै खाई ॥
जब जिभ्या सुख चीन्ह न आवै। तब मट्टी कहि सच करि गावै ॥
नोन मिरिच पुनि छौंकै जाई। पुनि तेहि करै स्वाद से खाई ॥
कोइ कोइ गृस्थ बिष्नु तेहि थूकै। धूजै देँह प्रान तेहि सूखै ॥
गृस्थ अनीती मानैं नीके। मास खाइ तेहि संगति छेके ॥

ये साधन के कर्म निकामा । नरक परै छूटै जब जामा ॥
ऐसी कहाँ कहाँ की कहिया । गृस्थ डरै तेहि साधन लइया ॥
दरस साध के कहँ पुनीता । करै साध ये कर्म अनीता ॥
बड़े साध येहि बिधि से गाये । यह अनीति सब संत बताये ॥
पलकराम बिधि समझौ भाई । कहिये साध कि कहिये कसाई ॥
ये बावे मुख नहीं बखाना । मन अपने सुख इंद्री खाना ॥
तुलसी मैं तौ सब कौ दासा । देखि देखि जिव भयौ उदासा ॥
ऐसी कहि कहि कहँ लग गाई । मता साध का कहूँ न पाई ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी भाखौ भेवा । साहिबजादे कर्म के लेवा ॥
यह बिधि संत मते मैं नाहीं । सत सत ये तौ कही गुसाँई ॥
कहौ तुलसी इन का निरवारा । ये भी कबहूँ लगिहैं पारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम तुम सुनियौ स्वामी । ये तौ परिहैं नर्क की खानी ॥
आतम नास मास जिन खाया । बकरा मारि करम मैं आया ॥
आतम नास कीन्ह तेहि खाया । अपनी इंद्री सुख मैं लाया ॥
इंद्री सुख भयौ आतम बैरा । जिन के भये नरक मैं डेरा ॥
ये तौ कधी न छूटैं भाई । ये बैराट लौटि जो जाई ॥
साध फकीर गृस्थ पुनि कोई । जिन जिन कीन्ह नर्क गये सोई ॥
बैर भाव छूटे नहिं भाई । गला काटि सोइ बंधन पाई ॥
या का सुन बरतंत सुनाऊँ । जा की चाल हाल दरसाऊँ ॥
रामायन मैं देखौ जाई । साखि समझ बिधि देउँ दिखाई
और पुरान जान जिन बूझा । हत्या पाप सबन कहँ सूझा ॥

॥ दोहा ॥

राम बान बाली हता, मारे सब जग जानि ।
पुनि पूरबले बैर से, भील माल तन हानि ॥

॥ चौपाई ॥

राम कृष्न औतारी भाई । बाल भील होइ मारौ ताही ॥
पाँव पदम बिच मारेउ बाना । कृष्न बैर पुनि मरे निदाना ॥
ऐसे बैर न जैहै भाई । गला कटै बिन छूटि न पाई ॥
अब बावे मुख सब्द सुनाऊँ । नानक कही सोई समझाऊँ ॥

॥ शब्द ॥

दरदमंद दरवेस है, बेदरद कसाई ।
गल बिच छुरी चलाइया, तुझे दरद न आई ॥टेक॥
क्या बकरी क्या भेड़िया, क्या अपना जाया ।
सब का लोहू एक है, तुझै किन फुरमाया ॥ १ ॥
नानक लखि परचै भई, सब घट बिच प्यारा ।
सब जहान जिव एक है, घट माहिँ निहारा ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

यह नानक बिधि भाखि सुनाई । अपने घर की समझ न आई ॥
नानक साहिब बड़े दयाला । जीव हतन ग्रन्थन नहिँ डाला ॥
ये सब रीत स्वाद की लागी । स्वारथ जिभ्या पेट सँवारी ॥
कहिये दया संत की रीती । यह कस करी मुक्ति परतीती ॥
नित प्रति जीव कसाई मारै । हत्या कहि कहि संत पुकारै ॥
संत कसाई एकहि लेखा । या मैँ ठहरा कौन बिबेका ॥
यह अन्धे अन्धे कर लेखा । आतम मारि न करै बिबेका ॥
अंध धुंध सब भेष भुलावा । सब्दन बिच नानक नहिँ गावा ॥
कोइ बावे मुख साखि सुनावे । तौ तुलसी के मन मैँ आवै ॥
हत्या भई मुक्ति की दाता । नानक पंथ भेष सब खाता ॥
सबही भेष भेड़ की रीती । अंधे अंध कर्म मन चीती ॥

अब या का परसंग सुनाऊँ । घूघर[1] जुत्थ बैठ इक ठाऊँ ॥
जग अँधरा जस घूघर लेखा । जो बिरले कोइ ज्ञान बिबेका ॥
ज्ञानवंत कोइ बूझि बिचारै । लख अनीति आतम नहिं मारै
घूघर अंध काग भये भेषा । नीची बुद्धि कुबुधि कर लेखा ॥
घूघर दर दृष्टान्त बताऊँ । मंगल माहिं भेद दरसाऊँ ॥

॥ मंगल ॥

घूघर अंधे भेष टेक अभिमान मैं ।
सूझै न सब मैं ब्रह्म धुंध अज्ञान मैं ॥१॥
घूघर नेतर खुलै सुनौ सोइ साध है ।
देखा तन बिच भान सो ब्रह्म अगाध है ॥२॥
जाने भाखा भेद अंध वा को कहै ।
सब घूघर जिमि भेष टेक अपनी लहै ॥३॥
हंस सिरोमनि साध गगनगंगा बसै ।
काग कुबुद्धी भेष भर्म भौ मैं फँसै ॥४॥
वे का जानैं मर्म हंस केहि का कही ।
जस घूघर रबि अंध दिबस दीसै नहीं ॥५॥
सो सब अंधे भेष ब्रह्म बूझैं नहीं ।
तन बिच आतम जीव परख सूझै नहीं ॥६॥
मारत निकरै स्वाँस माँस सोइ खात हैं ।
सोइ साधू निज भेष नर्क मैं जात हैं ॥७॥
गृस्थ रहैं जग माहिं मास मछरी भखैं ।
जुग जुग नरक निवास तासु पुरखा चखैं ॥८॥
ये कोइ भेदी भेद संत बतलावहीं ।
गगन गंग कर बास सो हंस सुनावहीं ॥९॥

(१) उल्लू ।

काग कुबुद्धी जीव न मन उनके बसै ।
छूटै नर्क निदान जान जम ना फँसै ॥१०॥
तुलसी बूझि बिचार चारि जुग से कहो ।
जो कोइ मानै अंत संत सरना सोई ॥११॥

॥ चौपाई ॥

संत सार सरना सोइ पावै । नीति अनीति नजर में आवै ॥
संत सरन बिन पंथ न सूझै । जीव हतन तन दया न बूझै ॥
जस घूघर दिन दिखै न भाई । अस जग भेष नैन अँधराई ॥
दृग दिवस तेहि सूझि न आवै । राति परे चरने को जावै ॥
घूघर का परसंग सुनाऊँ । नीत अनीत भेद दरसाऊँ ॥
गूलर बृच्छ रहै कहुँ एका । ता पर घूघर बसैं अनेका ॥
आपस मैं चरचा भइ भाई । अपनी अपनी सबन सुनाई ॥
बोले एक सुरज कहँ रहिया । ता कौ कछु बिख्यान सुनइया ॥
ता में एक घूघर उठि बोला । दिन को सूरज उगै अतोला ॥
सब सुनि बात अचंभा कीन्हा । सुन कर कोउ न हुँकारी दीन्हा ॥
ये तो आज सुनी हम भाई । हम सब के यह मन नहिं आई ॥
वा को झूठा करि ठहराया । पूछा कहौ कहाँ सुनि आया ॥
उन से कहा सुनौ परसंगा । समुँदर बीच मिली जहँ गंगा ॥
ता बिच धाम मोर अस्थाना । कई दिवस जहँ बीति सिराना ॥
एकै दिवस भया अस लेखा हंसा सरवर आवत देखा ॥
समुँदर वार काग कहुँ आये उन हंसन पर चोँच चलाये ॥
हंसा कही सुनौ रे कागा मैला मन बुधि ज्ञान न जागा ॥
जग बिच सूरज उगै जहाना आँखि न सूझ अबूझ बखाना ॥
जस घूघर दर दिवस न सूझा अस अँधरा हम तोहि को बूझा
अस अस बातैं भईं बनाई सो मैं सुनी कान के माहीं ॥
डर कागा के रहूँ छिपाई अस विधि सुनी सुनौ रे भाई ॥

यह सब के मन भया अचंभा । दिवस अंध मानौ जस खंभा ॥
दिवस दृगन से सूझै न सोई । बूझै कहा दिर्ग बिन जोई ॥
ऐसे अंध भया सब भेषा । सूझै न संत मते का लेखा ॥
गूढ़ बचन बानी उन केरी । वे का जानैं अंध निवेरी ॥
ग्रंथ सब्द बिन बूझ न आवै । मन जस चलै तेही दिस धावै ॥
खान पान बस भेष दुकाने । मन जग लूटन नाहिं डराने ॥
अस अस ज्ञान भया सब माहीं । यों अस बूड़े भेष भुलाई ॥
जीव हतन ऐसी बिधि कीन्हा । क्रूर कर पाप आप सिर लीन्हा ॥
जीव हतन को दया न आई । ये साधू कोउ कहै न भाई ॥
ये सब नीच बुद्धि जग रीती । कोइ कोइ जाति न करै अनीती
जीव को मारि मास जो खाई । पुरखा तासु नरक मैं जाई ॥
अस अस जग मैं डरै बनाई । सो अस मास साध होइ खाई ॥
नानक ग्रंथ मैं नहीं बखाना । सब्द मास नहिं कीन्ह बिधाना ॥
सब साखी मैं देखौ लेखा । ये कस खाइ पंथ बिच भेषा ॥
आप खाइ और सबै सिखावै । कायथ या से सिष्य कहावै ॥
और खत्री सुन सिष्य सुनाई । मास खानि कीन्ही गुरुवाई ॥
ये गुरु सिष्य भाव अस लेखा । परै नरक दोउ घोर अलेखा ॥
सुनि साहिबजादों की रीती । लड़की मारि जो करैं अनीती ॥
कन्या पाप जगत मैं भारी । सो वे साधू करैं बिचारी ॥
अस अस पाप करम की जुगती । सो साधू नहिं पावै मुक्ती ॥
अस अस अधम काम जिन कीन्हा । जम ने बाँधा भये अधीना ॥
अस अस करम काम जो करिहै । धरि धरि काल जाल मैं डरिहै ॥
परे पारधी पंछिन माहीं । पकरि पकरि झोलिन मैं नाई ॥
पंछी पकरि पारधी लेखा । अस जम करै पकरि सब भेषा ॥
जे जे मास मीन जिन खाई । सोइ सोइ बाँधै काल कसाई ॥
या मैं नेक एक नहिं जानौ । बूझौ संत साखि सुन मानौ ॥

नानक और कबीर सुनाई । दादू दरिया सब ने गाई ॥
सब्द साखि बिच लेउ बिचारी। हत्या पाप नरक होइ भारी ॥
अस अस साधू सबहि पुकारै । ये मत नीच कीच की लारै ॥
ये पुरान मेँ देखौ जाई । सास्तर सबै अनीति बताई ॥
जग मेँ रीति अनीती जानै । सो साधन बिच साखि बखानै ॥
यहि बिधि संत मुक्ति गोहराई। मास खाइ भौ पार न जाई ॥
ये सब भेष टेक मन जानी । साखि सब्द बिच नाहिँ बखानी
सुन कर बूझै ज्ञान बिबेका । ये सब खान मान मद लेखा ॥
अपनी देखी करौ न भाई । नहिँ कोइ आगे साखि लखाई ॥
ये सब अंध धुंध कर लेखा । बूझै न ज्ञान पंथ कोइ भेषा ॥
संत दयाल दया निधि गावै। दयाहीन नहिँ साध कहावै ॥
जीव मारि जो करै बेहाला । वा को वोहि भया जम काला ॥
ये जिव हानि करै जो कोई । जिन ये कीन्ह नरक गये सोई ॥
या मेँ कोई लाख बुझावै । नरक बास आसा तन पावै ॥
देखौ मता संत कर बावे । ये तौ नरक करम मेँ जावे ॥
संत मते की राह नियारी । ये तौ भरम भाव जग सारी ॥
ये कहुँ संत मते में नाहीं । संतन का मति औरै भाई ॥
पलकराम बूझौ मन माहीं । संत मते की औरै राही ॥
संत मते का औरै लेखा । कोई भेष न किया बिबेका ॥
संतन सत सत कही बखाना । बिना बूझ निंदा कर जाना ॥
या से भाव भेद नहिँ पावै । बिना भेद निंदक ठहरावै ॥
जो बावे मुख कही लखाई । जैजैवंती में बिधि गाई ॥
जो कछु सुरति पंथ मति रीती। बावे बचन भाखि परतीती ॥
जैजैवंती में सब गाई । पलकराम सुनियै चित लाई ॥

॥ जैजैवंती ॥

एरी दृग माहिं तौ निरखि हिये माहीं, सूझा नहिं नैन से ॥टेक॥
तुलसी कहि निरखि बिचारी, नानक ग्रंथन मति झारी ।
सारी बानी सब्द बताई, जाइ देखौ ग्रंथ में ॥१॥
पलकराम सतसँग पावा, बानी सतगुरु सब्द लखावा ।
पाया संत चरन सरनाई, तिन से बिधि जाइ कै ॥२॥
पंथी भेद बिधी नहिं जानै, मति पंथी जाति बखानै ।
बावे पंथ सुरति गति गाई, पाये चढ़ि धाइ कै ॥३॥
सूरति कढ़ियाव बताई, परे साधन संध चढ़ाई ।
वाह गुरू चौथे पद पाया, सब गाया संत ने ॥४॥
गोरख जो गुष्ट बताई, मन गोरख इंद्री माहीं ।
चौरासी सिध नौ नाथा, नाथे नौ द्वार में ॥५॥
नाथे नौ द्वारे माहीं, चौरासी नित नित जाई ।
दृग से साँई नहिं देखा, लेखा येहि गुष्टि में ॥६॥
पौड़ी बिधि बावे गाई, सिढ़ी पौड़ी चढ़न बताई ।
तुम तौ बिधि पढ़ हारे, पारे नहिं देखिया ॥७॥
पचग्रन्थी तत्त लखाये, पृथवी पवन अकास समाये ।
अगिनी जल पाँच बँधाया, पचग्रन्थी गाइ कै ॥८॥
आदि ग्रन्थ परथम्म बखाना, जब बना ब्रह्मंड समाना ।
आदि ग्रन्थी रचना बाँधी, बावे कही जाय कै ॥९॥
सुखमनी ये घाट कहाई, इड़ा पिंगला सुखमनि माहीं ।
चढ़ी सूरति गगन समावा, पावा वोहि धाइ कै ॥१०॥
आसा के वार बताई, आसा भै वार बँधाई ।
आसा परे जब लखि पावै, सूरति सत पाइ कै ॥११॥
जप का परमारथ जाना, जब जीव सुरति पहिचाना ।
जब सुखमनि सुरति लगावा, चीन्हा पहिचानि कै ॥१२॥

सतगुरु दरियाव बखाना, सो बिधि तुलसी सब जाना।
लखि अलख अरूप अकाया, द्वारा निरखा पाइ कै ॥१३॥
अम्मरसर गुरू लखाई, जहँ जीव अमर होइ जाई।
अस माना चढ़ि असमाना, जाना जिन जाइ कै ॥१४॥
हलुवा बट छाकर लीन्हा, इक बट पानी मैं कीन्हा।
इक झंडा जाइ धरावा, चीन्हा नहिं भूल से ॥१५॥
जा को भगवान बतावा, बावे कही काल चबावा।
गोबिंदजी निज मुख भाखा, बावे कही साखि में ॥१६॥
बावे राम रहीम न माना, गुरु गोबिंद ग्रंथ बखाना।
मत संतन और बतावा, साहिब कोइ और है ॥१७॥
पूजा पाहन बावे न गाई, गुरु गोबिंद नहिं ठहराई।
तुम पूजौ अंध अचेता, चीन्हा नहिं भेद को ॥१८॥
आरति भौ खंड न भाखा, चाँद सूरज दीपक राखा।
गगना मैं थाल बताई, थाह मिलै सुति लाइ कै ॥१९॥
ये गति नानक बिधि गाई, सतसंग करै जब पाई।
संतन कोइ संधि लखावा, पावा सुत धाइ कै ॥२०॥
नानक सुत चढ़ी अकासा, कीन्हा सैल ब्रह्मंड निवासा।
ब्रह्मंड से परे सिधारे, निराकार नहिं जात है ॥२१॥
चौथा पद वाहगुरु माहीं, जहँ नानक सुरति चढ़ाई।
निराकार वहाँ नहिं जावै, चढ़े नानक धाइ कै ॥२२॥
तुलसी संतन गति न्यारी, जहँ जोति नहीं निराकारी।
इन को सब काल बतावै, तुलसी पीव दयाल है ॥२३॥

॥ बिलावल ॥

नानक नजरा निहाल पलक में निहाला ॥टेक॥
सूरति चली अगम चाल, छूटी ग्रन्थी निहाल।
सतगुरु वाहगुरू दयाल, नाल नौ के पारा ॥

दया के कपास पान, संतौं का सूत जान ।
ग्रन्थी जित बाट मान, ये जनेऊ सारा ॥
फीकी जग गाँठि खोल, तोल मोल न्यारा ॥१॥
त्रै पन नहिं तमक होइ, मन का जो मैल धोइ ।
ऐसी सत रीति जोइ, खोइ खूब डारा ॥
तेरा तोही मैं यार, सूरति नैना संवार ।
निरखा संतन निहार, माहिं मौज मारा ॥
सूरति ले निरत बूझि, सूझि सब्द सारा ॥२॥
पाँडे के गले घात, टूटै ना जरै जात ।
मैली ना होवै हाथ, धन वे सेवक न्यारा ॥
संतौं ने ग्रन्थ खोल, सूझा अगमन अमोल ।
गोबिंदजी गुरु अतोल, चोल चाल पारा ॥
पाया सत नाम संत, हाथ लाग हीरा ॥३॥
पौड़ी का अरथ जान, सीढ़ी चढ़ना पिछान ।
सूरति सुखमना सान, मान लै की लारा ॥
अंबर असमान देख, अंबरसर अधर पेख ।
पावै अदबुद अलेख, आदि अंत सारा ॥
दसवाँ महलन के पार, तार चार द्वारा ॥४॥
सूरति कढ़ियाव सार, साधो परे साध पार ।
गुरु गुरु दरियाव लार, कार कँवल मारा ॥
आदि ग्रन्थ गाँठि तोड़, पाँच ग्रन्थ बाट मोड़ ।
आसा के वार छोड़, जपजी के पारा ॥
तुलसी नानक कृपाल, मारि काल डारा ॥५॥

॥ सोरठा ॥

पलकराम सुन बात, बावे ये बिधि यौं कही ।
गोबिंद मुख बिख्यात, लाग चरन संतन मिलै ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ सोरठा ॥

सतसँग तुलसी सार, जो कछु अगम लखाइया ।
बावे बिधि बिधि पार, सार सार सगरा कहा ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी सत्त बताई । संत भेद हम तुम से पाई ॥
संत मता है अगम अलेखा । सो कोइ भेष न किया बिबेका ॥
पलकराम चरनन को दासा । सत सत संत चरन बिस्वासा ॥
जो जो भेद तुम भाखि सुनाया । सो तो हम सुपने नहिं पाया ॥
पूछौं बिधी भेद सब कहिया । वाह गुरू बावे कस पइया ॥
निराकार की आदि बतावौ । जोती आदि सबै दरसावौ ॥
इन के परे कौन है स्वामी । ता की महिमा बिधी बखानी ॥
तुम दयाल पूरे हौ स्वामी । बावे बिधी कहो सोइ जानी ॥
संतन अगम आदि कस गाई । सो स्वामी मोहिं भाखि सुनाई॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तीनि लोक से चौथा न्यारा । चौथे के परे अगम अपारा ॥
पुरुष तहाँ इक अगम अनामी। चौथा पद तेहि पार ठिकानी ॥
चौथा पद सतनाम कहाई तेहि नानक वाहगुरू बताई ॥
सत्त नाम वाहगुरू बतावा तेहि कबीर सत सब्द लखावा ॥
तीनौं नाम एक हैं भाई वे बासी चौथे पद माहीं ॥
वाहगुरू का अंस कहइया जा से सोलह निरगुन भइया ॥
ता मैं एक निरंजन राई गुरू अंस से जोती आई ॥
जोति निरंजन की है नारी। दोनौं मिलि कीन्हा बिस्तारी ॥
वाहगुरू पद इन से न्यारा । निराकार नहिं जोति पसारा ॥
तीनि लोक निराकार समाना। वाहगुरू चौथे मैं जाना ॥
वाहगुरू का भेद नियारा । निराकार नहिं पावै पारा ॥

जोति निरंजन किया बिधाना। उपजे तीन पुत्र परमाना ॥
ब्रह्मा बिष्नु महेसुर जाना। काल निरंजन से उतपाना ॥
निरंजन जोति काल अन्याई। दस औतार याहि के भाई ॥
काल ने लिये दसौ औतारा। तीनि पुत्र पुनि साज सँवारा ॥
ब्रह्मा बेद पुरान बनावा। ता में सकल जीव उरझावा ॥
देवल देव पखान पुजावा। ता में सकल जीव भरमावा ॥
निरंकाल काल अन्याई। जोती ठगिनी जाल बिछाई ॥
ब्रह्मा बिस्नु काल के बेटे। दस औतार काल के पेटे ॥
ये ठग ठग मिलि जाल पसारा। जीव बाँधि चौरासी डारा ॥
वाहगुरू का मरम न पाया। चेला जीव जहाँ से आया ॥
निरंकाल जोती ने भाई। वाहगुरू की राह छिपाई ॥
वहाँ जीव जाने नहिं पाई। ठग ठग मिलि सब जाल बिछाई
कोइ कोइ संत अगमपुर बासी। मारा काल भये अबिनासी ॥
सूरति चढ़ी गगन के माहीं। चौथा पद वाहगुरू दरसाई ॥
पदम कंज में गुरु का बासा। गुरू मिलैं तब चढ़ै अकासा ॥
संत मिलै कोइ वा घर बासी। दरसावै काटै वो फाँसी ॥
संत दयाल मिलै कोइ पावै। पलक एक में राह लखावै ॥
है पुनि अगम सुगम होइ जावै। वाहगुरू जीवत मिलि जावै ॥
नानक येही रीति से पावा। औरौ संत यही बिधि गावा ॥
तब तिन वाहगुरू पद भाखी। जीवत मिलै कही पद साखी ॥
तुम तौ वाहगुरू को मानौ। वाहगुरू का मरम न जानौ ॥
वाहगुरू मुख भाखि बखानौ। वाहगुरू की महिमा ठानौ ॥
बावे वाह गुरू बतलाया। तुम तौ याह गुरू मन लाया ॥
कस कस राह मिलै पुनि भाई। भेष पंथ ने राह भुलाई ॥
संत चीन्हि जावै सरनाई। वाह गुरू सहजै में पाई ॥
बिना संत कछु मिलै न भेदा। ऐसे काल करै जिव खेदा ॥

॥ पलकराम उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी तुम अगम सुनाई। ये कहुँ भेद जगत में नाहीं ॥
साध संत बहु खोजि सिराना। भेद पंथ में सुना न काना ॥
सुना भेद मन चक्रित भइया। ये तौ स्वामी अकथ सुनइया ॥
मैं तो सरन तुम्हारी लीन्हा। संत चरन जल मन जस मीना ॥
मो को चरन सरन में राखौ। सरन संत मन सत कर भाखौ ॥
मोर निबाह संत के हाथा। करिहैं मो को संत सनाथा ॥
मैं किंकर हौं सरन अनाथा। निबहौं संत चरन के साथा ॥
मो को संत चरन की आसा। दूजा और नहीं बिस्वासा ॥
अस कहि बहै नैन से पानी। स्वाँसा भरै चरन लपटानी ॥
साधू रीति प्रीति गति भाखी। सुरख भये नैना निज आँखी ॥
बोले बचन दीन गति गाई। अब अज्ञा अस्थाने जाई ॥
चरनपरसि पुनि अज्ञा लीन्हा। तुलसी सीस चरन पर दीन्हा ॥

॥ वचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सरनि मैं स्वामी। दया कीन्ह मोहिं अंतरजामी ॥
अस भाखि चल कीन्ह पयाना। पलकराम पहुँचे अस्थाना ॥
मन मैं मगन प्रीति भई गाढ़ी। सूरति लगी फिरै नहिं आड़ी ॥

॥ दोहा ॥

पलकराम बिधि कहा कहूँ, सत मत साधू भाय।
मन प्रति दीन प्रभाव अति, सब साधन के मायँ ॥१॥
साध संत हिये प्रीति ज्यौं, उमगत बारोइ बार।
नैन निरखि आँखी भरे, करै संत से भाव ॥२॥

॥ बिलावल ॥

पलकराम प्रेम मगन, संतन सरनाई।
अति अजान जान कछू, किंकर की नाँई ॥टेक॥

चरन चिन्ह भाव सुमन, संतन स्तुति परन बंध ।
नैना झर झरत नीर, बरनै लघुताई ॥
जोड़ जोड़ मुख कहत बैन, बानी मृदु पुलक गात ।
गुनन गिनत संत साथ, मन तन हित लाई ॥१॥
हिरदे हित हरन बैन, किंचित मन भरम भै न ।
निर निर निरभै समीर, थिरता अधिकाई ॥
भावन मन भाव लाइ, चावत चित चेत साथ ।
तुलसी ये भक्ति भाँत, चाहत चरनाई ॥२॥

॥ दोहा ॥

पलकराम के प्रेम की, तुलसी करत बखान ।
बैन बचन मुख चैन को, सो कहूँ कौन बयान ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे हरष समाय, पलकराम साधू समझ ।
मंजन तन परभाय, लाह लहर कस कस कहूँ ॥

॥ हिरदे उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि हिरदे बोला अस बानी । कासी में साधू अस जानी ॥
स्वामी साधू बड़े प्रमानी । संत चरन बिन और न जानो ॥
कासी में देखे यह साधू । कासी और कौंच पुनि काँदू ॥
स्वामी सत मत कोउ न चीन्हा। यह पुनि साध बड़े मति लीन्हा॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन हिरदे बाता । कासी नगर काल मति राता ॥
कासी करम जीव अज्ञाना । जुग चारौ जग जीव भुलाना ॥
कासी जगत धाम बतलावै । मरै जीव पुनि भूत कहावै ॥
सिव की पुरी धाम जग भाखा। उनके भूत प्रेत की साखा ॥

सिव भये भूत प्रेत के राजा। मरै जीव होइ भूत समाजा ॥
ये कासी मिलि भूत बड़ाई। सिव कैलास भूत में भाई ॥
ता से जड़ मत जीवन लीन्हा। जड़ सँग जिव जो भया अधीना
घटरामायन सुनि भौ सोरा। कासी नगर भया घनघोरा ॥
पंथ भेष जग लड़न खखारा। घट रामायन परी पुकारा ॥
अस सुन सोर भयो जग माहीं। सहर मुलक सब गँवई गाँई ॥
भेप पंथ मँ अचरज भइया। दरसन भेप लखन को अइया ॥

॥ दोहा ॥

जगत सोर सब भेष में, नगर गाँव सब ठैार ।
भेष फकीरी पंथ के, लख जाँचत सत मोर ॥

संवाद साथ गुपाल गुसाईं कबीर पंथी के

॥ चौपाई ॥

दरसन करन आये इक संती। मन मत नाम कबीरा पंथी ॥
हम पुनि धाइ चरन को लीन्हा। उन पुनि दया गुसाईं कीन्हा ॥
आसन दे कीन्हा सनमाना। पूछा रहौ कैान अस्थाना ॥
कहँ से दया गवन कियो स्वामी। किरपा कीन्ह दीन मोहिं जानी ॥

॥ उत्तर गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

तिरहुत देस धनौती गाँई। भगत नाम गोपाल गुसाईं ॥
भाव भक्ति हा साध कहावँ। संत चरन पर सीस नवावँ ॥
साध जान हमहूँ चलि आये। दरसन करि मन आनँद पाये ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

धरमदास के बंसन माहीं। कै कोइ साध और मति राही ॥
कबीरदास पुनि हैं धर्मदासा। उन से भिन्न रहौ केहि पासा ॥
यह बरतंत सुनावौ स्वामी। भाव भक्ति हा केहि बिधि जानी ॥

हम कबीर मति एक बिचारा। तुम कही और भेद बिस्तारा ॥
भाव भक्ति हो केहि विधि भइया। सो स्वामी मोहिं बरनि सुनइया ॥

॥ गुपाल गुसाईं उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसीदास सुनौ चित लाई। तुम अपना कहौ भेद जनाई ॥
कौन मते के साध कहावौ। अपना गुरु मति भेद बतावौ ॥
हम हमरा जब सत मत भाखैं। गुरु मत कहँ भेद नहिं राखैं ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

हमरे गुरु हैं संत सुजाना। हम तो गुरू संत को माना ॥
संत गुरू और पंथ न जानी। निस दिन संत चरन चित आनी ॥
संत चरन कर दास दिवाना। साधू सरन चरन लपटाना ॥
और इष्ट नाहिं दूजा भाऊ। निस दिन साधू चरन उमाऊ ॥
मैं निकाम कछु जानौं न भेदा। नीच बुद्धि मन छल बल खेदा ॥
तुम्हरे चरन सरन कछु पाई। मैं मतिहीन साध सरनाई ॥
दरसन तुम्हरे भये सनाथा। न्यारा करि पकरो मोरा हाथा ॥

॥ गुपाल गुसाइं उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी साधू तुम परमानी। बचन सुधा रस अमृत बानी ॥
तुम्हरा तोल बोल प्रिय मीठा। कासी मैं साधू तुम दीठा ॥
अब मैं गुरु मति भेद बताऊँ। भये जस भाव भक्ति हो नाऊँ ॥
भाख भये भगवान गुसाईं। गद्दी रहै धनौती माहीं ॥
उनके मति के साध कहावैं। बीजक मति परमान बतावैं ॥
रामैनी चौरासी गाई। ये कबीर मति कहा गुसाईं ॥
धर्मदास मति मूल न मानी। बंस मता हम सत्त न जानी ॥
मूल मरम बीजक के माहीं। बंस भेद यह जानत नाहीं ॥

मुख कबीर मति आप बखानी। तत्त बस्तु बीजक मैं आनी ॥
और ग्रंथ सब बंस बनाये। ये सब छुच्छम भर्म भुलाये ॥
इन मैं कछू नहीं है भाई। ये सब गये गवन गफलाई ॥
जो जो बंस राह मति माहीं। उन बीजक का मरम न पाई ॥
जो जो बंस राह मति चाली। जम सोँटे से भये बेहाली ॥
बंस राह चौके मैं भूला। कहा जानै मति बीजक अतूला ॥
एक बिधी तुलसी सुन लीजै। बंस मता चित नेक न दीजै ॥
बरनौं बंस राह की रीती। बीरा परवानै परतीती ॥
पान परवाना लिखि लिखि जोई। जा की कहूँ बरतंत बिलोई ॥
असत अजावन बीरा कीन्हा। बिंद बिरज से लिख कर दीन्हा
सो सिष भिष्ट खवावै भाई। अस अस बीरा बंस चलाई ॥

॥ दोहा ॥

बीज बिंद बीरा करै, सो सिष पान खवाइ ।
बंस राह रस रीति की, अस अस बूझ लखाइ ॥

॥ तुलसी साहिब उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

एक बिधी हमहूँ सुनि पाई। ता की स्वामी भाखि सुनाई ॥
बसै साध इक मँडले माहीं। गोबिंददास नाम रहै भाई ॥
वे हमरे अस्थाने आये। उन सब विधि बरतंत सुनाये ॥
इक दिन चरचा कही बुझाई। सो बिधि तुम को भाखि सुनाई
बीजक बरनन बात निकारी। उन बरतंत कहा सब झारी ॥
सो बरतंत कहिकै समझाऊँ। जस उन कही कहन दरसाऊँ ॥
धर्मदास सुत जुगल कहाई। एक नाम चूरामनि भाई ॥
बचन कबीर भाव से भइया। अस चूरामनि नाम कहइया ॥
दूजा नाम नरायन होई। ऐसे जुगल बंधु कहै सोई ॥
धर्मदास के दरब न थोरा। माया रहै सोइ चारि किरोरा ॥

गुन गुमास्ते दो रहे पासा । जागू भागू नाम प्रकासा ॥
दास कबीर एक दिन आये । धर्मदास पूजा मन लाये ॥
सालिगराम न्हवावै भाई । पूजा करिके ध्यान लगाई ॥
सो कबीर देखत मुसक्यानी । पत्थर कस धोवत नित पानी ॥
अस कबीर मुख बचन बखाना। धर्मदास मन मँ रिसियाना ॥
कस निंदक ने बचन सुनाया । ठाकुर को पत्थर ठहराया ॥
धर्मदास दिल गुसा समाई । पूजा साज उठायौ जाई ॥
है कोइ यह नास्तिक मत माहीं। चरचा इन से करौं बनाई ॥
धर्मदास पूछी इक बाता । पूजा सो सब करत सनाथा ॥
तुम पत्थर कैसी बिधि गावा। इष्ट हमारे दोष लगावा ॥
बेद पुरान सास्तर गावा । तिन को तुम पत्थर ठहरावा ॥
तुम्हरा मता कौन है भाई । सो तुम हम को भाखि सुनाई ॥

॥ कबीरदास ॥

॥ चौपाई ॥

सुनियौ धर्मदास इक बाता । ब्रह्मा से भये बेद सनाथा ॥
ब्रह्मा भये बैराट की नाभी । सो बैराट में किस की स्वाबी ॥
पाँच तत्त कहो कहँ से आये । सो रचि कै बैराट बनाये ॥
सो बैराट पिंड सब गावै । ये सब बिधी बेद बतलावै ॥
बिधि बेदान्त ब्रह्म कहि गावा। आतम भीतर सुद्ध बतावा ॥
और पुरान तुम्हरा गोहरावा। पत्थर पूजन कौन बतावा ॥
ये बैराट पिंड तन माहीं । गगन माहिं नौ खंड समाई ॥
पाँच तत्त तन बदन बनाया । ता में चेतन ब्रह्म समाया ॥
चेतन आतम सब के माहीं । तुम पत्थर पूजौ केहि राही ॥
धरमदास मन बूझि बिचारा। या से ज्ञान कहूँ निरबारा ॥
तब पंडित दो चारि बुलावा। ये फकीर कहा कहत बुझावा ॥
जहँ इक पंडित कंजा नामा । कहा फकीर कस करत बखाना॥

जो कछु बेद सनातन गाई । सो मति को हम मानैं भाई ॥
तुम फकीर कहौ कैसे साधू । धर्म भ्रष्ट करौ बाद बिबादू ॥
जोइ जोइ आदि राह चलिआई । मेटेउ सब यहँ से उठि जाई ॥
पंडित कहै कंजा अस बाला । येहि को काढ़ि देउ दै ताला ॥
इन सब धर्म नास्ती कीन्हा । मुख देखन नहिं जोग अलीना ॥
कंजा कहर लहरि कहि सारी । तब कबीर ने मौन बिचारी ॥

॥ कबीर दास ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि बोले बिन रहा न जाई । तुम पंडित हौ कर्म कसाई ॥
जग सब अंध धुंध करि डारा । पूजत पाहन जीव बिगारा ॥
पानी जीव बँधाई आसा । अस अस जगत कर्म बस फाँसा ।
देवी बकरा गला कटावौ । टका मूड़ बस पार करावौ ॥
माला टोपी काँध जनेऊ । करि असनान अचारी बनेऊ ॥
हाँड़ी हाड़ मास घर सीझा । तलफत गला कटत जिव छीजा ॥
पत्थर पानी जगत पुजाई । देखी पंडित को पँडिताई ॥
वेद पुरान ज्ञान समझावौ । दयाहीन हति आतम खावौ ॥
मछरी मास घास पसु खाई । अस तुम पसू नरक के माहीं ॥
सुन पंडित तन अगिनि समानो । गरम तवा जस डारौ पानी ॥
जग बिच रहत कसाई जाता । तुम बिन करै कौन यह बाता ॥
अब या का इक सब्द सुनाऊँ । सब्द साखि मैं लखन लखाऊँ ॥

॥ शब्द ॥

साधो भाई पाँड़े निपुन कसाई ।
बकरी मारि भैंड़ को धावै । दिल मैं दरद न आई ॥टेक॥
करि असनान तिलक दै बैठे । बिधि से देवी पुजाई ।
आतम मारि पलक मैं बिनसै । रुधिर की नदी बहाई ॥१॥
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये । सभा माहिं अधिकाई ।
इन से गुरु-दिच्छा सब माँगै । हँसी आवै मोहिं भाई ॥२॥

पाप कटन को कथा सुनावैं। करम करावैं नीचा।
हम तो दोऊ परस पर डीठा। बाँधे जम जग बीचा ॥३॥
गाइ बधै सो तुरुक कहावै। ये क्या इन से छोटे।
कह कबीर सुनौ हो साधो। कलि में बाम्हन खोटे ॥४॥

॥ साखी ॥

जला जीव तुम बिन बिन खाये। काहे को छाँड़ी गाई ॥१॥
बेद पुरान भागवत गीता। पढ़ि पढ़ि भये कसाई ॥२॥

॥ धर्मदास ॥

॥ चौपाई ॥

अरे फकीर कस खोटी बोलौ। पहुँचे करामात कछु खोलौ ॥

॥ कबीर दास ॥

॥ चौपाई ॥

जब कबीर इक बिधी बिचारी। धरमदास सुन बात हमारी ॥
अंतर सालिगराम दिखाऊँ। हिरदे ठाकुर काढ़ि बताऊँ ॥
गगन भूमि चढ़ि नैन पसारौ। ऐसे सालिगराम निहारौ ॥
कहि कबीर इक हुचकी लीन्हा। काढ़े ठाकुर भया यकीना ॥
पुनि ठाकुर कब्बीर बुलाये। सो चलि चले हाथ में आये ॥
देखत सब को भया अचंभा। मन बिस्वास बास बिच थंभा ॥
धरमदास मन साँच समाना। ये साधू कोइ परम निधाना ॥
जीव भाव मुक्ती अस जाना। तब पुनि गये चरन लपटाना ॥
मंदिर आसन कीन्ह बनाई। सत कबीर आसन पर आई ॥
तिरिया चरन आन करि लीन्हा। बचन बाक चूरामनि दीन्हा ॥
दास नरायन दूजे भाई। अस कबीर बिधि बरनि सुनाई ॥
सब घर के नर नारि बुलाये। चरन परसि के भवन सिधाये ॥
दास नरायन बोले बानी। गई मत बापू की हम जानी ॥
ये फकीर ठग कहँ से आया। सब घर जादू भर्म भुलाया ॥

दास नरायन दीन्हा ज्वाबै । ठग फकीर पै हम नहिं जावैं ॥
जब कबीर बोले मुख बानी । दास नरायन काल निसानी ॥

॥ दोहा ॥

कहा कबीर धर्मदास से, चौका करौ बनाइ ।
साज सकल बिधि आनिकै, बीरा सत्त समाइ ॥

॥ चौपाई ॥

तब चौके का साज मँगाया । धर्मदास चित चौका चाया ॥
चौका करि परवाना पावा । मुक्ति भाव सब बिधि दरसावा ॥
अस बरतंत कहा सब लेखा । कहूँ आगे का सुनौ बिबेका ॥
गोबिंददास समझ समझाई । गुपल गुसाइँ कहौ बुझाई ॥
अब आगे बरतंत सुनाई । गुपल गुसाईं सुन मन लाई ॥
अस कबीर धर्मदास चितावा । सो बरनन हम बरनि सुनावा ॥
कहत कबीर सुनौ धर्मदासा । माया मोह जगत जिव फाँसा ॥
सब माया को देउ लुटाई । साधू संग रहौ लौ लाई ॥
सुन करि धर्मदास सोइ कीन्हा । माया द्रब्य लुटाई दीन्हा ॥
पुनि कबीर दिल भये दयाला । सब्द साखि सब ग्रंथ निकाला ॥
बीजक और और कहो बानी । दीन्ही धर्मदास को आनी ॥
गुन गुमास्ते जागू भागू । चेला भये धरमनि सँग लागू ॥
धरमदास चित चेला होई । जागू भागू नाम बिलोई ॥
सब्द साखि बीजक और बानी । जागू भागू पास बखानी ॥
सिपुरस[१] धर्मदास ने कीन्हा । सोइ भागू सिर ऊपर लीन्हा ॥
दँहीं धरमदास तन त्यागा । तब चूरामनि ग्रन्थ जो माँगा ॥
और ग्रन्थ सब दीन्हेउ भाई । बीजक भागू लीन्ह चुराई ॥
रहे भगवान गुसाईं भाई । बीजक दै उन दीन्ह भगाई ॥
तब तिरहुत में गद्दी कीन्हा । जाइ धनौति महंती लीन्हा ॥
येहि बिधि भाव भक्ति हो भइया । गोबिंददास बरन अस कहिया ॥

---

(१) सपुर्द ।

और जागू कछु कही बखाना। गुपल गुसाईं सुन दै काना ॥
भये भगवान गुसाईं साधू। तिन की भाखूँ जड़ बुनियादू ॥
बाम्हन बालक जाति बखानी। मात पिता केहि जाति निदानी॥
जगबँधनी माता कर नाऊँ। पितु कालू बिधि बरनि सुनाऊँ॥
उनके पुत्र रहे वे भाई। नाम कहा भगवान गुसाइ ॥
पुनि पुरान में रहे प्रबीना। गुरूमत करनी भाव न कीन्हा ॥
पुनि कोई दिन मत में रहेऊ। तजि सतसंग गुसाईं भयेऊ ॥
जुगल गुरू मति छाँड़ि पराई। बीजक मिले भक्ति हा भाई॥
बीजक मति की चाल चलाई। जा से नाम भक्ति हा पाई ॥
अब कालू की आदि बताई। जा से भये भगवान गुसाईं ॥
कालू चलन बिषय रस राऊ। रहै तेलिन मँगली वोहि गाऊँ ॥
ता सँग इस्क मुहब्बत कीन्हा। लेकर पकरि राज सोइ लीन्हा ॥
मँगली तेलिन कालू दोई। बाँधे पकरि राज ने सोई ॥
कालू पितु सुन सब्द सुनाई। डंड दीन्ह पुनि लीन्ह छुड़ाई ॥
पुनि तेलिन ने सब्द बिचारा। मैं सँग रहौं रहौं येहि लारा ॥
सब बाम्हन मिलि बहुत बुझाई। कहिया बहुत न मानै भाई ॥
तब पितु माता दीन्ह निकारी। न्यारे रहे भये घरबारी ॥
मँगली नाम फेरि तब दीन्हा। जगबँधनी धर नाम नबीना ॥
मँगली से जगबँधनी कहिया। तेलिन नाम फेरि अस भइया ॥
जा से भये भगवान गुसाईं। येहि बिधि उन की आदि सुनाई

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चैापाई ॥

सुन बरतंत मनहिं मन भाखा। कछु कछु समभ मनहिं बिच राखा ॥
हम आगे बरतंत न जाना। उन बिधि बिधि सब सत्त बखाना ॥
हम सब भाँति सुनी यह बानी। तुलसी तुम ने करी बखानी ॥
गोबिंददास कही बिधि सारो। हम ने सुनी कहौं बिस्तारी ॥

जो बरनन उन भाखि सुनावा । जा में कछु मन में नहिं आवा ॥
कछु कछु तौ उन ठीक बतावा । कछु कछु समझ नहीं मन आवा
अब या का बरतंत सुनाऊँ । जस जस सुनी समझ समझाऊँ ॥
धर्मदास तन त्यागा भाई । जागू भागू कैद कराई ॥
धर्मदास का कीन्ह भँडारा । सब साधू आये ज्यौनारा ॥
समय पाइ भगवान गुसाईं । बोले द्वै साधू आये नाहीं ॥
पुनि कोइ साधु कान सुनि लइया । रहे साधु ये को अस कहिया ॥
तब बोले भगवान गुसाईं । जागू भागू नाम कहाई ॥
सो चूरामनि कैद कराई । सब मिलि कै उन को छुड़वाई ॥
तब चूरामनि लीन्ह बुलाई । साधु कैद से आनौ भाई ॥
तब दोउ साधु कैद से काढ़े । आये जहाँ साधु सब ठाढ़े ॥
सब पंगति ज्यौनार कराये । भोजन करि आसन पर आये ॥
सब साधुन मिलि न्याव सँवारा । बीजक देना बिधी बिचारा ॥
जब बीजक आयौ उन हाथा । अस बिधि वा तें भये सनाथा ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन कर बिधी भर्म मन आवा । तुम कछु औरहि और सुनावा ॥
उन सब कही और बिधि भाखी । तुम रस रमज और बिधि राखी ॥
यह तौ बिधी मिली नहिं भाई । तुम उन औरै और सुनाई ॥
अब आगे का करौ बयाना । बीजक कहौ बिधान बिधाना ॥
कस कस बीजक बरन सुनाया । जस कबीर मुख अपने गाया ॥
सब्द साखि सोइ भाखि सुनावौ । बीजक का बरतंत बतावौ ॥
जीव काल से बचै न भाई । भौ के पार कौन बिधि जाई ॥
सब्द अरथ साखी समझावौ । भिन भिन वा कौ अर्थ बतावौ ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

सुनियौ तुलसीदास गुसाईं । अब बीजक का सब्द सुनाई ॥

॥ शब्द ॥

साधो भक्ती सतगुरु आनी ॥ टेक ॥
नारी एक पुरुष दो जोय, बूझो पंडित ज्ञानी ॥१॥
पाहन फोड़ि गंग इक निकसी, चहुँ दिस पानी पानी ॥२॥
तेहि पानी दुइ परबत बूड़े, दरिया लहर समानी ॥३॥
उड़ि माखी तरवर के लागी, बोलै एकै बानी ॥४॥
वा माखी के माखा नाहीं, गरभ रहा बिन पानी ॥५॥
नारी सकल पुरुष वोहि खाया, ता से रह्यौ अकेला ॥६॥
कहै कबीर जो अब की समझै, सोई गुरू मैं चेला ॥७॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुपल गुसाईं । सब्द अरथ मोहिं कहौ बुझाई ॥
को सतगुरु को भक्ती लाये । ये कबीर कस बरनि सुनाये ॥
जुगल पुरुष केहि नारि ने जाई । पाहन फोड़ि गंग कस आई ॥
फैली गंगा चहुँ दिस पानी । यह कबीर कहा कही बखानी ॥
को दोउ परबत बूड़े पानी । कहौ या की भिनि भिनि करि छानी ॥
को दरिया कित लहर समाई । को तरवर को माखी भाई ॥
बिन माखा माखी गरभानी । सो कबीर कस कही बखानी ॥
परसे नर बिन गर्भ न होई । कस माखी गरभिनि भइ सोई ॥
कहौ को नारि पुरुष सब खाई । कही कबीर मैं नारि बचाई ॥
कौन नारि लख बचे बतावा । नारि बचे सोइ गुरू कहावा ॥
कही कबीर अपने मुख बानी । या का भाखौ भेद बखानी ॥
गुपल गुसाईं सुन मन माहीं । एक ज्वाब उन भाखि सुनाई ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

सुन स्वामी तुलसी समझाई । यह कबीर ने अगम सुनाई ॥
या मैं मन बुधि चित नहिं चाली । उपजी एक सुनाऊँ हाली ॥

सतगुरु नाम कबीर कहाये । वे जग में भक्ती ले आये ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

धर्मदास मुख होती बानी । तौ कबीर सतगुरू बखानी ॥
खुद कबीर मुख बचन बतावा । उन सतगुरु कहौ केहि को गावा
यह तौ अर्थ न आवा भाई । कहौ कबीर सो गुरू बताई ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

सुन स्वामी तुलसी इक बाता । मैं नहिं जानौं अर्थ बिख्याता॥
हम तौ सब्द पढ़न पढ़ि लीन्हा । गाइ गाइ खँजरी सँग कीन्हा ॥
बोले हाथ जोरि मुख बानी । स्वामी तुलसी कहौ बखानी ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी मन मुसकाने भाई । मैं कहा जानौं गुपल गुसाईं ॥
सतसंगति संतन में पाई । सो मैं भाखौं समझि सुनाई॥
सतगुरु तो सतपुरुष बताया । सत्तलोक रहे पुरुष अकाया ॥
वहँ से सुरति कबीरा आई । तीनि लोक ब्रह्मंड समाई ॥
आतम जीव कबीर कहाई । धर्मदास मन को बतलाई ॥
काया बीर कबीर कहाई । धर्मदास मन को समझाई ॥
मन इंद्री बिच बास कराये । गुन प्रकृती बिच जग उपजाये॥
काया बिच बस बँधे कबीरा । भूले सिंध अमोलक हीरा ॥
सिंध बुंद तजि सूरति आई । वा कर नाम कबीर कहाई ॥
बुंद सिंध की सुधि बिसराया । काया बन्द कबीर कहाया ॥
सत्त पुरुष पद कीन्हा मेला । सो कबीर सतगुरु का चेला ॥
और कबीर काया के माहीं । जड़ तन बस भौ में भरमाई ॥
जिन बीजक रचि बरन सुनाया । तिन कबीर वह सतगुरु पाया॥
वो सतगुरु का भेद बतावै । लोक अलोक राह समझावै ॥

जो कबीर का पंथ पिछानै । नहिँ पंथी सब जाति कहाने ॥
अब जागू भागू समझाऊँ । चूरामनि के चिन्ह चिन्हाऊँ ॥
जो जागे सो भागे भाई । मन चूरा सोइ ब्रह्म कहाई ॥
नर तन नाम नरायन जाना । गो सँग मन भगवान कहाना ॥
मन इंद्री गो संग गुसाईं । भग सँग भौ भगवान कहाई ॥
अस कबीर बीजक बिधि भाखा । तुम बेसमझ समझ नहि राखा
बीजक नाम बीज बिंद केरा । नाद विंद जग किया बसेरा ॥
बिंद बीज बीजक अस गाया । यह बिधि बीजक बरनि सुनाया ॥
अब सुन सब्द अर्थ समझाऊँ । कही कबीर बीजक सोइ गाऊँ ॥
बिंद बीज स्त्रिष्टी उपजाई । तन बैराट बनाया भाई ॥
बीजक एक बीज सब कीन्हा । नाद बिंद अस बीजक चीन्हा ॥
सत्त पुरुष सतगुरु से आई । सोई सुरति गई भक्त कहाई ॥
भौ रस बन्ध रही जग माहीँ । सो सूरति मन इच्छा भाई ॥
इच्छा नारि पुरुष मन मानी । पुरुष नारि अस द्वै उतपानी ॥
सब्द फोड़ि सूरति सोइ गंगा । मन बस फैल जगत रस रंगा ॥
सो चहुँ दिस फैली जग माहीँ । पानी परबत दोइ बुडाई ॥
सूरति नाम कबीर कहाई । धर्मदास यह मन है भाई ॥
द्वै परबत ये अस बिधि बूड़ा । यह बीजक मत कहा अगूढ़ा ॥
सब्द सिंध से सूरति आई । भौ दरियाव लहर जग माहीँ ॥
तरवर तन इच्छा मन राखी । कर्म भर्म इच्छा भई माखी ॥
बिना पुरुष की इच्छा नारी । बिन संयोग गर्भ भया भारी ॥
गर्भ कर्म इच्छा गरभानी । येहि बिधि गर्भ रहा बिन पानी ॥
इच्छा नारि जगत को खाया । या का चीन्ह कबीर बताया ॥
अब की बार नारि सोइ चीन्हा । सो गुरु कहूँ जगत परबीना ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी अगम अरथ समझाये । ये तौ हम सुपने नहिं पाये ॥
हम ठोली सायर रस जाना । या म तुम ने अगम बखाना॥
सतगुरु पद सतलोक लखावा । सूरति चेला मिलन बतावा ॥
सूरति मिलै सब्द के माहीं । सब्द जो मिलै अगम घर जाई
अगम सिंध से सब्द जो आया । सब्द ने सूरति को पठवाया ॥
सो सूरति गुन इंद्री माहीं । मन बनिया बैराट बनाई ॥
तन मन गुन गो ज्ञान समाना । कल्प कल्प भै भौ भरमाना ॥
अस अस समझि परा यह लेखा । तुलसी स्वामी वचन बिबेका
तुम ने कहन गहन सोइ गाई । हेरि हिये दिल माहिं समाई
हम ने पढ़ि पढ़ि जनम गँवाया । सब्द साखि खँजरी सँग गाया
या का भेद भाव नहिं चीन्हा । बूझा तुलसी कहन यकीना ॥

॥ दोहा ॥

अगम निगम गम पाइया, तुलसी चरन प्रताप ।
मैं महंत मन मान हौं, बीजक के बिस्वास ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी तुलसी अगम लखाई । बीजक भेद भर्म के माहीं ॥
अब स्वामी इक सब्द सुनाऊँ । या का अर्थ अंत समझाऊ ॥
या मैं कस कस कही बिचारा । बीजक में बरने निरधारा ॥

॥ शब्द ॥

एकै पुरुष एक है नारी, ता का करौ बिचारा ॥टेक॥
एकै अंड सकल चौरासी, भर्म भूलि संसारा ॥१॥
एक नारि जम जाल पसारा, जग मैं भया अँदेसा ॥२॥
खोजि खोजि काहू अंत न पाया, ब्रह्मा बिस्नु महेसा ॥३॥
नाग फाँस लीन्हे घट भीतर, मूसनि सब जग झारी ॥४॥

ज्ञान खड्ग बिन सब कोइ जूझै, पकरि केहू नहिं पाई ॥५॥
आपहि मूल फूल फुलवारी, आपहि चुनि चुनि खाई ॥६॥
कहै कबीर सोई जन उबरे, जिन गुरु लीन्ह जगाई ॥७॥

॥ दोहा ॥

नर नारी दोउ कौन है, कहो प्रभु अर्थ बिचार ।
गुपल गुसाईं सरन में, तुलसी चरन निहार ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

पुरुष निरंजन मन भया, इच्छा नारि बिचार ।
ये दोऊ मिलि जग ठगा, कही कबीर निरधार ॥

॥ चौपाई ॥

मनहिं निरंजन पुरुष बखानी । इच्छा जोती नारि कहानी ॥
पाँच तत्त ब्रह्मंड पसारा । जहँ लगि अंड कीन्ह बिस्तारा
ठगनी ठग मिलि सब ठगि लीन्हा। इच्छा मन सँग जगत अधीना
अस अस भूले भौ की खाना । चौरासी जम हाथ बिकाना ॥
एक नारि जम जाल पसारा । इच्छा मन किये काल अहारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस न बाचे । रजगुन तमगुन सतगुन राचे ॥
वोहि मन इच्छा नागिनि भाई । ठगि ठगि मूल सबन को खाई ॥
वोहि नारी का सब्द सुनाऊँ । बिधि बरनन ता का दरसाऊँ॥

॥ होली ॥

नर से निकसी इक नारी, कोइ बूझै साध बिचारी ॥ टेक ॥
हाथ न पाँव सीस नहिं काया, खाया सब जग झारी ।
माई न बाप आप से उपजी, करी खसम की ख्वारी ॥१॥
बारी न बूढ़ि तरुन तन नाहीं, सोवत सब जग मारी ।
आवै न जाय मरै ना जीवै, जुग जुग रहत करारी ॥२॥
ऋषी मुनी सब झारि बिगारी, सब जग त्राह पुकारी ।
रबि ससि सूर चंद्र तारा गन, ये सब खाइ बिडारी ॥३॥

चर और अचर सकल चर लीन्हा, कीन्ह ब्रह्मंड पसारी ।
चेतन जाग भाग सोइ बाचे, जिन सतगुरु सरनि सुधारी ॥४
चीन्है नारि सार सोइ पावै, तब उतरै भै पारी ।
तुलसीदास फाँस तजि भागै, संतन साथ उबारी ॥५॥

॥ चैापाई ॥

ऐसी नारि जबर जग माहीं । ज्ञान गिरा सब लीन्ह हिराई ॥
ज्ञान खड़ग बिन सब कोइ जूझा । बिन सतगुरु कोइ भेद न बूझा ॥
इच्छा मन कीन्ही फुलवारी । तन मन जीव ब्रह्मंड सँवारी ॥
इच्छा सें जग उपजा भाई । सोइ इच्छा जग खाइ बुड़ाई ॥
या से उबरे जोइ जन भाई । सतगुरु सत्त पुरुष दरसाई ॥
सूरति सत्त लोक मेँ बासा । सो बाचै सतगुरु का दासा ॥
गुरु मति पंथ भेष मेँ नाहीं । या से मुए टेक करि माहीं ॥
जगत गुरू जम जाल पसारा । ज्यौं धीमर मछरी गहि मारा ॥
पंथी गुरू भेद नहिं जानै । कान फूकि फिर भै मेँ आनै ॥
जगत गुरू सतगुरु नहिं चीन्हा । तन छूटे फिर काल अधीना ॥
जगत गुरू बिस्वास न माना । उनहूँ सतगुरु मरम न जाना ॥
अस परपंच गुरू जग माहीं । भैाजल मेँ जिव गोता खाई ॥
ये सब हाट बजार दुकानी । बूड़े गुरु चेला बिन पानी ॥
सब्द साखि सब भाखि बतावै । अर्थ भेद ता को नहिं पावै ॥
बिन सतसंग नजर नहिं आई । बिना संत बूड़े भै माहीं ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कही पुकारि, गुपल गुसाईं भेद यह ।
तुम बीजक मति माहिं, मरम भेद गति ना लखी ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चैापाई ॥

सब्द भेद मोहिं समझ सुनाई । तुलसी दरपन सी दरसाई ॥
चैारासी रामायनि गाई । या की तुलसी कहै अरथाई ॥
साखी एक समझ समझाई । ता मेँ सब रामायनि गाई ॥

॥ रमैनी ॥

जीव रूप इक अन्तर बासा । अन्तर जोति कीन्ह परकासा ॥१॥
इच्छा रूप नारि औतरी । तासु नाम गायत्री धरी ॥२॥

॥ चौपाई ॥

ये साखी स्वामी कस बूझा । हम बीजक मति रहे अबूझा ॥
भेद भाव नहिं जानैं भाई । ये संतन कहि अगम अगाही ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

अब रामायनि अरथ बताऊं । कही कबीर सोइ लखन लखाऊँ ॥
रूप सरीर जीव मध बासा । अन्तर जीव जोति परकासा ॥
जिव आतम सोइ सुरति कहाई । या का तेज जोति ठहराई ॥
जोती तेज ऐन पर आया । मन माया गुन भवन समाया ॥
गयउ जीव तिरगुन के माहीं । इच्छा नारि गायत्री गाई ॥

॥ सोरठा ॥

रामायनि बिच माहिं, येहि बिधि सब साखी लखौ ।
अन्तर घट के माहिं, तुलसी तन बिच सब कही ॥१॥
चौरासी रामायनी, राम ऐन दरपन महीं ।
सो चौरासी खानि, उतपनि जगत कबीर कहि ॥२॥
मन मत राम कहान, पिंड ब्रह्मंड मन सँग भया ।
अंडा खलक समान, अलख काल सँग बस रहा ॥३॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

ये स्वामी यह बूझ बुझाई । तुलसी कहनि समझ में आई ॥
यह कबीर कहि जग ब्यौहारा । या से नहीं जीव निरवारा ॥
मन चिताइ कै ज्ञान लखावा । बीजक में अस अस परभावा ॥
अगम पंथ की राह नियारी । सो लखि दई संत दरबारी ॥

तुम चरनन से अस अस बूझा । तुलसी गहनि कहनि से सूझा ॥
अब स्वामी साखी समझावौ । सोइ साखी का अर्थ बुझावौ ॥

॥ साखी ॥

जहिया जन्म मुक्त हता, तहिया हता न कोइ ।
छठी तुम्हारी हो जगी, तुम कहँ चले बिगोइ ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जब ब्रह्मंड पिंड किया साजा । निरमल जीव तनहिं करै राजा ॥
मन इच्छा तब हती न भाई । इंद्री षट रस जुबाँ[1] न चाही ॥
जीवन मुक्ति जीव तन माहीं । जब की साखी साखि सुनाई ॥
जब जेहि हता कोई नहिं भाई । काम क्रोध तजि आप रहाई ॥
छूटै[2] छै रस मैं मन बाँधा । हुआ जग जग मन रहा न सीधा ॥
हुआ अहंकार माहिं मन लागा । तेहि सँग चल बिगोइ मत त्यागा ।

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

साखी सतगुरु एक सुनाऊँ । या का भेद भाव दरसाऊँ ॥

॥ साखी ॥

पाँच तत्त का पूतरा, जुगत रचा म कीन्ह ।
मैं तोहि पूछौं पंडिता, सब्द बड़ा कै जीव ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

गुपल गुसाईं सुनिये बाता । अर्थ भेद भाखूँ बिख्याता ॥
पाँच तत्त पिंजर तन साजा । ता मैं आतम जीव बिराजा ॥
मन माया सँग रचा पसारा । पिंड पिंड तन मन बिस्तारा ॥
सब्द सुन्न से उठै अवाजा । तासु तेज जिव आतम राजा ॥

(१) जीभ । (२) झूठे ।

ब्रह्म सब्द तन भीतर माहीं । जीव अंस तन पिंजर पाई ॥
गुपल गुसाईं सुनियौ बानी । येहि बिधि अर्थ कबीर बखानी ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

इक साखी प्रभु और सुनाऊँ । या का अर्थ भेद समझाऊँ ॥

॥ साखी ॥

पाँच तत्त ले तन किया, सो तन ले क्या कीन्ह ।
कर्मन बस जिव रहत है, कर्मन को जिव दीन्ह ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुन गुपल गुसाईं । अन मन तन का मरम सुनाई ॥
नर तन पाँच तत्त से कीन्हा । बादहि जनम आप नहिं चीन्हा ॥
कर्म काल बस रहन निहारे । जीव कर्म बस रहन बिचारे ॥
गुपल गुसाईं सुन दे काना । यह साखी अस कही बिधाना ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चैापाई ॥

इक साखी और अरज बिचारी । वा की समझ कहौ निरबारी ॥

॥ साखी ॥

पाँच तत्त के भीतरै, गुप्त बस्तु अस्थान ।
बिरले मर्म कोइ पाइ है, गुरु के सब्द प्रमान ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चैापाई ॥

कहै तुलसी अब अर्थ सुनाऊँ । कहि कबीर मुख लखन लखाऊँ ॥
पाँच तत्त तन भीतर भाई । गुप्त अवाज उठै सुन माहीं ॥
बिरले गगन फोड़ि सुति जावै । परे मन निकरि सब्द गुरु पावै ॥
सूरति सिखर गिरा नभ राही । जब चढ़ि गई गगन गुरु पाई ॥

गुपल गुसाईं सुन यह बानी। बीजक मत कही भिनि भिनि छानी ॥
सतसँग रँग बिन नहिं निरवारा। बिन सतगुरु कस खुलै किवारा ॥
तुम बीजक के सब्द सुनाया। गाइ गाइ सब जनम गँवाया ॥
पढ़ते सब्द जनम गयौ बीती। समझ बूझ बिन अँधरे रीती ॥
सब्द समझ सतगुरु से पावै। बिन सतगुरु पढ़ि जनम गँवावै ॥
अब या का इक सब्द सुनाई। सुनियौ कानन गुपल गुसाईं ॥

॥ शब्द १ ॥

सब्द साखि भाखत भये, तन बीति सिराना हो ॥टेक॥
भेष पंथ भूले फिरैं, कोइ मरम न जाना हो।
सुन्न सहर सत द्वार मैं, चढ़ि सुति असमाना हो ॥१॥
नभ निवास न्यारी भई, मारग पहिचाना हो।
पछिम पार पट खोलि कै, खिरकी नियराना हो ॥२॥
होति जोति जगमग लखै, आतम दरसाना हो।
कँवल केल आगे चली, दल दोय दिखाना हो ॥३॥
परमातम पद परसि कै, लखा पुरुष पुराना हो।
अगम गली आगे चली, अलो आदि अनामा हो ॥४॥
तुलसीदास दुरबीन मैं, कोइ संत समाना हो।
अगम निगम गम गाइकै, जिन भाखि बखाना हो ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

सब्द भेद साखी लखै, सोइ साध सुजाना हो ॥टेक॥
अगम निगम गम चीन्ह कै, बानी पहिचाना हो।
सुरति सिष्य सब्दै गुरू, मिलि मारग जाना हो ॥१॥
लखि अकास औंधा कुआँ, ता मैं सुरति समाना हो।
गगन गिरा गरजत भई, फूटा असमाना हो ॥२॥
गंग जमुन बिच सरसुती, बेनी असनाना हो।
जोग ज्ञान गम ना लखै, अली अगम ठिकाना हो ॥३॥

तुलसी दर दुरबीन का, कोइ फोड़ि निसाना हो ।
सिंध बुन्द सागर मिला, सोइ सिंध कहाना हो ॥४॥

॥ सोरठा ॥

बुन्दा सिंध समान, मिलि सागर सागर भयौ ।
गुपल गुसाईं सब्द को, बिन बूझे बागर रह्यौ ॥

॥ चौपाई ॥

गुपल गुसाईं सब्द न बूझा । बीजक मनि मैं रहे अबूझा ॥
अगम निगम गम सब्द पुकारा। तुम अँधरे नहिं बूझ बिचारा
सब्द सिंध सतगुरु गोहरावैं । बिन सतसँग कस नजर समावै॥
हिये दृग नैन किवारी खोली । सोइ सतगुरु की समुझै बोली॥
सतगुरु अगम राह दरसाई । सब्द साखि सब भाखि सुनाई॥
पिय मारग मिलने की रीती । नैन नगर नित प्रति स्रुति प्रीती ॥
अब या का इक सब्द सुनाऊँ। तुम को रमज राह दरसाऊँ॥

॥ शब्द ॥

सुरति निरति निज नैन को, सतगुरु दरसावा हो ॥टेक॥
अति उतंग पिय पंथ को, तब मारग पावा हो ।
सुरति जहाज पै बैठि कै, अपने घर आवा हो ॥१॥
सजि सिँगार सुंदरि चली, पिय को अपनावा हो ।
फूलन सेज सँवारि कै, सजि पलँग बिछावा हो ॥२॥
लगन लार लै से मिली, पिय रीझ रिझावा हो ।
सुरति सुहागिनि साजि कै, पिय से लिपटावा हो ॥३॥
तुलसी तरँग रँग राह की, कछु कहत न आवा हो ।
पति परचे पिउ पास की, जाना जिन गावा हो ॥४॥

॥ चौपाई ॥

अस अस खुलि खुलि सब्द सुनावै । पंथ भूल से नजर न आवै ॥
पंथ राह रस्ते को गाया । तुम पंथी इक जाति बनाया ॥

पंथ अगम घर जो चढ़ि जावै। ता को नाम पंथ कहलावै ॥
उलट बास संतन ने भाखी। जा की समझ सूर कोइ राखी ॥
सुलटी को उलटी कर बूझा। उलटी सुलटी समझ न सूझा ॥
अब या को इक सब्द सुनाऊँ। उलटि सुलटि वोहि माहिँ दिखाऊँ ॥

॥ रेखता[1]

अली इक बात सुन सुलटी। बिना समझे लगै उलटी ॥१॥
कही सब संत ने बोली। गूढ़ मत गुप्त नहिँ खोली ॥२॥
सुरति मन बुद्धि नहिँ जावै। लखन मैँ कौन बिधि आवै ॥३॥
अरी नहिँ बेद ने जाना। कहत करि नेत गोहराना ॥४॥
जुगत जोगी नहीँ जानी। ज्ञान नहिँ ध्यान बिज्ञानी ॥५॥
जगत और भेष ना जाने। पढ़े पंडित्त भरमाने ॥६॥
सकल तिरलोक लौँ गावैँ। निरंजन जोति ठहरावैँ ॥७॥
अगम घर राह नहिँ सूझै। संत गति कौनि बिधि बूझै ॥८॥
अस्त रबि होत अँधियारा। हिये तम रूप मैँ सारा ॥९॥
मिलै गुरु गैल बतलावै। तिमर तन बीच से जावै ॥१०॥
लखै तब संत के बैना। सुरति सुरमा खुलै नैना ॥११॥
तरक ताली खुलै ताला। निरखि तहँ होत उजियाला ॥१२॥
अधर घर सुरति चढ़ धावै। अगम गति गूढ़ तब पावै ॥१३॥
सुरति जब उलट कर बूझा। उलट की सुलट कर सूझा ॥१४॥
तुलसी तन बीच मैँ हेरा। सुरति मन बुद्धि को फेरा ॥१५॥
कहन कछु और बिधि राखै। उलट की सुलट कर भाखै ॥१६॥

चौपाई

संत गती गति उलटी रीती। तुम्हरी बुधि जग बिदित अनीती ॥
चेला करि परिवार चलाई। संत मता कहो कस कस पाई ॥
बीजक टेक माहिँ तुम भूला। संतन का मत अगम अतूला ॥

(१) यह शब्द मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैँ नहीँ है।

बिन सतगुरु कोइ भेद न पाया। सब्द गाइ सब जनम गँवाया॥
गान पढ़न बूझन से न्यारा। संत भेद मत अगम अपारा॥
जब लग पंथ पकड़ नहिं छूटै। बुधि मति हीन पकड़ि जम लूटै॥
जो कबीर मति भाखि पुकारा। बिन सतगुरु नहिं बूझ बिचारा
पाइ महंती भेद न जाना। उन सतगुरु मति नहिं पहिचाना॥
जिन से बूझ समझ कहि पाई। पढ़ि बीजक सब जनम गँवाई॥

॥ सोरठा

बिन सतगुरु उपदेस, सुर नर मुनि नहिं निस्तरे।
ब्रह्मा बिस्नु महेस, और सबन की को गिनै॥

॥ चौपाई॥

सतगुरु सत्त पुरुष अबिनासी। सत्त लोक पद परम निवासी॥
सूरति चढ़ि पहुँचै उन पासी। सो सूरति सतगुरु की दासी॥
जब होइ जीव निर्कारि निरवारा। नहिं जग बूड़ै भौजल धारा॥
स्रवन लाइ सुन गुपल गुसाईं। ये कबीर मति अस बिधि गाई॥

॥ सोरठा॥

बूझै समझ बिचार, ये ब्रतंत भिनि भिनि कह्यौ।
बीजक मति निरवार, भाव भक्ति हा भेद सब॥

॥ चौपाई॥

अब आगे बरतंत सुनाऊँ। संत पंथ मति राह लखाऊँ॥
जस कबीर ने पंथ चलाया। सूरति पंथ अगम घर पाया॥
सो घर बिधि बिधि बरति सुनाऊँ। संत पंथ मति राह लखाऊँ॥
अब या की बरतंत बताऊँ। गगन गुमठ धधकार सुनाऊँ॥
नित प्रति उठै महल झनकारा। निरखा तुलसी बस्तु अपारा॥

॥ दोहा॥

ढोल ढोल धधकार की, मंदर उठै अवाज।
तुलसी सतगुरु संत से, पाई बस्तु अपार॥

॥ रेख़ता ॥

ढुलना सुनौ घधकारी । महलौं उठै झनकारी ॥१॥
लागी लगन अली मन को । लहरैं उठीं चलीं बन को ॥२॥
देखा पंथ सब झारी । ढूँढा जग भेप भिखारी ॥३॥
कहूँ ना निसाँ दिलदारी । खोजै पिया पिउ प्यारी ॥४॥
सभी सतगुरु संत बतावैं । कहूँ सतसँग से लखि पावै ॥५॥
बूझा सुना धुनि बानी । कोइ भाखै न भेद बखानी ॥६॥
अली अस अस बैस बितावा । कहूँ खोजत खोज न पावा ॥७॥
कंजा गुरु गैल लखाई । धुनि सुनि सत सुरति लखाई ॥८॥
तुलसी तन तपन बुझाई । सुनि स्रुति अपने घर आई ॥९॥
सिंधा बुंद समुँद समाना । लखि सूरति सब्द ठिकाना ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुपल गुसाईं । सब्द भेद सब साखि बताई ॥
अस अस बैस बीति गई सारी । खोजत खोजत जनम सिहारी ॥
कंज गुरू सोइ गैल लखाई । धुनि सुनि सुरति द्वार पर छाई ॥
तब तन मन की तपन बुझानी । सूरति सब्द मिली सहदानी ॥
सिंध बुंद जब मिला ठिकाना । सब्द सुरति लखि अगम बखाना

॥ सोरठा ॥

हिये पिय लखन लखाउ, गगन गुमठ दरसत लखा ।
सागर सुरति छुड़ाय, करम कलस कृत फूटि सब ॥

॥ चौपाई ॥

जब हिय मैं पिय को लखि पावा । गगन गुमठ सोइ अगम दिखावा
ये तन बीच हिये के माहीं । बस्तु अगोचर संत लखाईं ॥
जिन जिन घट मैं सुरति समाई । सो पहुँचे सतगुरु सरनाई ॥

॥ रेख़ता ॥

हिये मैं पिय लखि पावा । गगन गुमठ दरसावा ॥१॥
स्याह रंग सुरति से छूटा । कलसा करम का फूटा ॥२॥

सुन की धुनि दरसानी । पौरी पिया पहिचानी ॥३॥
सुन मैं सब्द लखि पावा । मन से सुरति दौड़ावा ॥४॥
फूला कँवल दल माहीं । सुरती सब्द मैं धाई ॥५॥
नाली निरखि नभ द्वारा । देखा ब्रह्मंड पसारा ॥६॥
गुरु से गली लखि पाई । प्यारी पिया घर जाई ॥७॥
बेनी बिबिधि बिधि देखा । भाखा अगम का लेखा ॥८॥
बूझै कोइ संत बिचारी । निरखा जिन नैन निहारी ॥९॥
तुलसी चरन का चेरा । पावन रज कीन्ह निबेरा ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

संत चरन रज धूर, सूर सुरति सगरी करी ।
भरी गगन के माहिं, गुमठ गगन चढ़ि लखि परी ॥

॥ दोहा ॥

सब्द सहर हेरा नहीं, किया न सतगुरु खोज ।
बीजक मति सँग पचि मुए, पढ़ पढ़ मनमत मौज ॥

॥ चौपाई ॥

गुपल गुसाईं खोज न कीन्हा । सब्द भेद का सार न चीन्हा ॥
बुधि मति हीन सूझ नहिं आई । गावत गावत जनम बिताई ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी तुलसी सरनि तुम्हारी । संत चरन पर तन मन वारी ॥
स्वामी चरन सरन मैं लीजै । दास जानि मोरा कारज कीजै ॥
मैं मति अंध नैन मति हीना । अब तौ तुलसी चरन यकीना ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि लीजै अब गुपल गुसाइ । बिन सतसंगति कोऊ न पाई ॥
सूरति सब्द समझ घट माहीं । पूछौ सोइ सतगुरु से राही ॥

सब्द गुरू सूरति जब पावै । चढ़ि चढ़ि गगन गुमठ पर आवै
गगना गुमठ फोड़ि असमाना । सूरति चढ़ि सब्दा गुरु जाना ॥
सार सब्द गुरु सुरति समानी । अस कबीर गुरु सिष्य पिछानी॥
गुरु सिष भया अगम गम चेला। सो साधू सतगुरु का चेला ॥

॥ सोरठा ॥

गुपल गुसाईं धाइ, पाँय पकर करि सिर दियो ।
हिया उमँगि जल धार, नैन नीर टप टप चुवै ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी बोध ताहि का कीन्हा । समझ बूझ मारग को लीन्हा ॥

भेद राम और रामायन का जो तुलसी साहिब ने अपने शिष्य हिरदे से कहा

॥ चौपाई ॥

हिरदे पंथ भेष सब बूड़ा । संत मते को लखै अगूढ़ा ॥
बेद मता सब कासी माहीं । बूड़े जा में भेष भुलाई ॥
रामायनि घट बूझि न जानी । सब जग पंडित भेष न मानी ॥
घट मठ मैं रामायनि गाई । कासी कदर भेष नहिं पाई ॥
सुनि सुनि के सब अचरज कीन्हा । बुधि मत हीन न काहू चीन्हा ॥
परमहंस सन्यासी जोगी । ब्रह्मचारि जग बिष रस भोगी ॥
भेष पंथ मति सगरे झारी । अस बिधि कासी परी पुकारी ॥
कासी नगर सोर भया भारी । जग पंडित सब कहै नकारी ॥
हिरदे घट रामायनि माहीं । निंदा की बिधि नाहिं सुनाई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सत मति मूल, जग अबूझ भूला फिरै ।
सहै करम कृत सूल, सत अतूल गति ना लखै ॥

॥ चौपाई ॥

सत मति संत राह गति गाई । पुनि काहू परतीत न आई ॥
अब कहूँ भाखि सो सुन संबादा। घट मैं अंड ब्रह्मंड अगाधा ॥

घट मैं रावन राम जो लेखा। भरत चत्रगुन दसरथ पेखा ॥
सीता लखन कौसल्या माहीं। मंथ्रा केकई सकल रहाई ॥
इंद्रजीत मंदोदरि भाई। रावन कुंभकरन घट माहीं ॥
सारा जगत पिंड ब्रह्मंडा। पाँच तत्त रचना कर अंडा ॥
जिन जिन घट अंदर मैं चीन्हा। सोइ सोइ साधू करैं बखाना ॥
या से अगम अगम येहि माहीं। निरखा देख नजर से आई ॥
नाम अनेक अनेकन कहिया। घट रामायन मैं दरसइया ॥
घट रामायन अगम पसारा। पिंड ब्रह्मंड लखा बिधि सारा ॥
नाम अनेक अनेकन कहिया। सो सब घट भीतर दरसइया ॥
अगम निगम और अकथ कहानी। तुलसी भाखी अगम निसानी ॥
घट रामायन ग्रंथ बनाई। साखी सब्द अगम बिधि गाई ॥
कही बिलावल जैजैवंती। कोइ कोइ बूझि अगम गति संती

॥ जैजैवंती[१] ॥

ए री घट माहिँ तो रामायन गाई, ग्रंथन बनाइ कै ॥ टेक ॥
तुलसी सब भाखि सुनाई, घट रामायन बिधि गाई।
पिंड पिंड ब्रह्मंड दिखाना, तुलसी लौ लाइ कै ॥१॥
दृग देखा पिंड ब्रह्मंडा, निरखा सात दीप नौखंडा।
अंडा तत पाँच बनाया, काया धसि जाइ कै ॥२॥
तीन लोक घट माहीं, पुनि चौथे जाइ समाई।
परे ता के रहत अनामी, स्वामी निरताइ कै ॥३॥
सूरति दृग दीप उड़ानी, लीला गिर जाय समानी।
सुन्न सेत सब्द सुहाना, पुनि आई धाइ कै ॥४॥
हिये हिरदे नैन खुलाना, जहँ निरखा पुरुष पुराना।
वहँ सुन्न न सब्द न बोला, खोला द्वार पाइ कै ॥५॥
मिला प्रीतम पुरुष पुराना, अगमन अज घर हम जाना।
स्यामा भइ गति मति मोरी, बुंदा सिंध पाइ कै ॥६॥

(१) यह शब्द मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है।

तुलसी संतन प्रति पाई, येहि अगम राह दरसाई ।
लिया अजर अगमपुर धामा, ता मैं रही छाइ कै ॥७॥
कहूँ अब सतसंगति गाई, भइ कासी नगर मँझाई ।
कासी काया भाखि बखानी, बिधि बिधि दरसाइ कै ॥८॥
हिरदे अहीर बखाना, हिरदे में हेर समाना ।
गुनुवाँ मन गुन सँग खेला, ता को कही गाइ कै ॥९॥
नैनू पंडित नैन कहाये, ता मैं स्यामा स्याम समाये ।
जहँ माना मन लै बैठा, पंडित पिंड आइ कै ॥१०॥
कर्मा करि करि कर्म कहाये, धर्मा सब धर्म चलाये ।
करिया पुतरी लै जाना, भाखूँ समझाइ कै ॥११॥
तकी तकि तकि नैन निहारा, सैनू सैनै सुरति सँवारा ।
रहे मन इत रेवतीदासा, या कौ कही गाइ कै ॥१२॥
फूलदास फूल गयौ कँवला, जहँ सूर दल पर सम्हला ।
प्रिय प्रीति सुरति चढ़ि आई, येही प्रियेलाल कै ॥१३॥
चढ़ि गई गगन के माहीं, परदा तीनौं फोड़ि समाई ।
पद चौथे जाइ निहारा, कंजा मैं गुरु पाइ कै ॥१४॥
गइ चौथे पद पर ताकी, राहि सुन्नी सुन्न न बाँकी ।
तुलसी मति कीन्ही दीना, संतन गति गाइ कै ॥१५॥
सम्मत सोलासै अट्ठारा, घट रामायन लिखि सारा ।
सूरति घट घट मैं देखा, लेखा पद जाइ कै ॥१६॥
कासी मैं चौल[1] उड़ाई, तब हम ने गुप्त छिपाई ।
जानै कोइ सतसंग बासी, नहिं कासी भाखियै ॥१७॥
हिरदे जाने जाति अहीरा, घट रामायन वोहि तीरा ।
कोइ सत मत मन का आवा, जा को कही गाइ कै ॥१८॥

---

(१) चुहल, हँसी ।

तुलसी तत तोल बताई, पुनि कहि कहि भाखि सुनाई।
घट रामायन बूझै, सूझै तिहूँ लोक मैं ॥१९॥

॥ सोरठा ॥

घट रामायन सार, सोलह सै अठरा कही ।
सही भई नहिं सार, लार निकट कासी बसे ॥

॥ चौपाई ॥

सोलहसै अठरा के माहीं । घट रामायन कीन्ह बनाई ॥
सम्बत सोलहसै अट्ठारा । घट रामायन साज सँवारा ॥
पिरथम घट रामायन गाई । कासी सुनि सब अचरज लाई ॥
तुलसी नाम इक साध गुसाईं । ग्रंथ कीन्ह इक भाखि बनाई ॥
ता मैं बेद कितेब न राखा । दस औतार कछू नहिं भाखा ॥
तीरथ बरत एक नहिं मानै । वो कहै और और परमानै ॥
पंडित हिरदे से भयौ झगरा । और भेष जग कासी सगरा ॥
तब तुलसी मन कियौ बिचारा । घट रामायन गुप्त करि डारा ॥
जग के माहिं चलन नहिं पाई । जग बिरोध नित झगरा लाई ॥
ये जग भवसागर की धारा । संत मता भवसागर पारा ॥
सत सत मति संतन ने गाया । पुनि काहू की दृष्टि न आया ॥
अगम निगम और आदि अनादा । समझै सुनि बूझै कोइ साधा ॥
काहू चित धर चेत न कीन्हा । ता से सतगुरु भेद न दीन्हा ॥
जग बिरोध देखा जब जानी । सात कांड रामायन बखानी ॥
घट रामायन संत कोइ चीन्हा । समझै संत होइ लौ लीना ॥
रावन राम कीन्ह संबादा । तब कासी मैं चली अगाधा ॥
तुलसी मता कोई नहिं चीन्हा । गुप्त भेद सब जग से कीन्हा ॥
ये भौसागर जगत असारा । तुलसी मता मते की लारा ॥
जग मैं बस्तु कोई नहिं चीन्हा । जा से ग्रंथ गुप्त कर दीन्हा ॥
जिन कोइ संत मते को चीन्हा । बूझै सोई होइ लौलीना ॥

॥ सोरठा ॥

कासी नगर मँझार, भरम भाव सगरे भयो ।
घट रामायन लार, ये निकाम कासी बसै ॥१॥
राम चरित्र बनाय, जगत भूल भ्रम ताहि मैं ।
इष्ट भाव ब्रत मान, समझाया समझै नहीं ॥२॥
जासु बनी है बात, देखन बिधि बिधि योँ कही ।
लही जो तुलसी दास, संत चरन रज धूरि धरि ॥३॥
हिरदे जानै बात, तुलसी तत मत लखि कही ।
लई अपनपौ आइ, जाइ सुरति सब्दै मिली ॥४॥
सतसँग करो हजार, बिना संत अंतै नहीं ।
भेष पंथ मैं नाहिँ, ये अतंत रस अगम है ॥५॥
मैं संतन कर दास, लखि हुलास अद्‌बुद कह्यौ ।
लह्यौ अमर पद बास, योँ अकास अंबर गह्यौ ॥६॥
सूरति निरति सँवारि, सार पार पद निरखि कै ।
बूझै बूझनहार, ये अगार अंदर कही ॥७॥
मैं संतन की लार, सत सँवार सूरति दई ।
गई सेत के पार, सत सतगुरु मैं मिलि रही ॥८॥
सत स्रुति महल अगार, फारि आठ अटकी नहीं ।
सटकी सिंध मँझार, पदम कंज निरखत रही ॥९॥
अललपच्छ इमि बास, सजि अकास आगे गई ।
लही अमरपुर बास, स्वाँस भास जहँ गम नहीं ॥१०॥

तुलसी साहिब के पूर्ब जन्म का हाल

॥ दोहा ॥

तुलसी कहत बताइ, अपनी उत्पति मति बिधी ।
सुधि सतसंगति लार, जग जब से तन मैं सिधी ॥

॥ चैापाई ॥

अब अपनी बिधि कहा बिसेखा । तुलसी कीच नीच कर लेखा ॥
मैं अति अधम अचेत अबूझा। संत चरन कछु मोहिं को सूझा ॥
मैं तो अजान जानि जित जाई। संतन कीन्ह जानि सरनाई ॥
मैं तो अचेत चेत चित नाहीं। संत चिताइ लीन्ह अपनाई ॥
मैं पुनि संत सरन सम नाहीं। संत दयाल दया के साईं ॥
तुलसी मत बुधि नाहिं बिबेका। संत चरन चित बाँधी टेका ॥
मैं अब अपनी आदि बताऔं। अपनी बिथा आदि गति गाऔं॥
जग ब्यौहार जगत जग राही। तन उपजा बिधि कहौं बुझाई ॥
राजापुर जमुना के तीरा। जहँ तुलसी का भया सरीरा ॥
बिधि बुन्देलखंड वोहि देसा। चित्रकोट बीच दस कोसा ॥
संबत पंद्रासै नावासी। भादौं सुदी मंगल एकादसी ॥
भया जनम सोइ कहौं बुझाई। बाल बुद्धि सुधि बुधि दरसाई ॥
तिरिया बरत भाव मन राता। बिधि बिधि रीत चित्त सँग साथा
ज्ञानहीन रस रँग सँग माता। कान्ह कुब्ज बाम्हन मोरी जाता॥
जगत भाव ऊँचा सब भाँते। कुल अभिमान मान मदमाते ॥
मोटा मन कछु चीन्ह अचीन्हा। ज्ञान मते मत रहौं मलीना ॥
एक बिधी चित रहौं सम्हारे। मिलै कोइ संत फिरौं तेहि लारे॥
संत साथ मोहिं नीका भावै। ज्ञान अज्ञान एक नहिं आवै ॥
अब आगे का सुनौ बिधाना। ता की बिधी कहौं परमाना ॥
संबत् सोलासै थे चौधा। ता दिन भया अगम का सौदा॥
सावन सुदी नौमी तिथि बारी। आधी राति भई गति न्यारी ॥
बिजुली चमक भई उँजियारी। कड़का घोर सोर अति भारी॥
मन मैं बहु बिधि भर्म समाया। यह अजगुत कहौ कहँ से आया॥
राति बीति गइ भयउ बिहाना। मन अचरज सोइ कहौं बिधाना
पुनि प्रति रोज रोज अस होई। एक दिवस सूरति चढ़ि जोई ॥

नील सिखर गुरुद्वारे माहीं । निरखा अचरज कहा न जाई ॥
कहँ लगि कहौं बिधी बिधि डंडा । पुनि सब निरखि परा ब्रह्मंडा ॥
गंगा जमुना और त्रिबेनी । कँवल माहिं सतगुरु की सैनी ॥
पद्म प्रयाग अगमपुर बासा । सतगुरु कंज सुरति पद पासा ॥
तीनि लोक भीतर सब देखा । कहौं कहाँ लगि बिधि बिधि लेखा ॥
जो ब्रह्मंड भरा जग माईं । सो देखा सब घट मैं जाई ॥
नित नित सैल सुरति सँग खेला। निरखा अगम निगम अस सैला॥
कस कस कहौं अगम बिधि नाना । एक दिवस चढ़ि अगम ठिकाना
वहँ की सैल चौज कछु भारी। अंड खंड ब्रह्मंड से न्यारी ॥
अस अस देखा अगम तमासा। चौथा पद सतलोक निवासा॥
वे सत सतगुरु भेंटे जाई । सूरति सत्तनाम रही छाई ॥
तीनि लोक से चौथा न्यारा । तहँ गइ सूरति सतगुरु पारा ॥
नित नित सैल कोई दिन कीन्हा। चौथा पद जहँ सतगुरु लीन्हा॥
एक दिवस भइ ऐसी रीती । सूरति चढ़ि रस आगे पीती ॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारी । उतरै चढ़ै चढ़ै नित चारी ॥
चौथे पद से न्यारा धामा । सतगुरु पद के पार अनामा ॥
तुलसी प्रीति सुरति की लागी। राति दिवस सोवै नहिं जागी ॥
कहँ लगि ब्यान कहौं गति गाई। तुलसी मो से कही न जाई ॥
जो सब बिधि मैं कहौं सुनाई । तौ जग कागद मिलै न स्याही ॥
ये बिधि देखा सकल बिधाना। अब कहौं सुनौ और बिधि नाना
कंज गुरू ने राह बताई । देह गुरू से कछु नहिं पाई ॥
अब आगे बिधि सुनौ बिधाना। ता को बिधी कहौं परमाना ॥
ऐसे कइ दिन बीति सिराने । राजापुरी जगत सब जाने ॥
लोग दरस को नित नित आवै। दरस भाव सब को उपजावै॥
नर नारी सब आवैं झारी । दरसन करैं सिपारस भारी ॥
हिरदे अहीर कासी का बासी। रहै राजापुर नौकर पासी ॥

वोहु प्रति दिन दरसन को आवै। प्रीति बड़ी हित कहा न जावै॥
राति दिवस दिन दिन रहै पासा। तुलसी बिना और नहिं आसा॥
एक दिवस भइ ऐसी रीती। कासी गये बहुत दिन बीती॥
हमरा चित हिरदे में बासी। हम चलि गये नग्र जहँ कासी॥
संबत सोलासै रहे पंद्रा। चैत मास बारस तिथि मँगरा॥
पहुँचे कासी नगर मँझाई। हिरदे सुनत दौड़ि चलि आई॥
आये चरन लीन्ह परसादी। बिधि बिधि रहन कुटी की साधी
कुटी बनाय कीन्ह अस्थाना। कासी में हम रहे निदाना॥
गंगा निकट कुटी जहँ कीन्हा। हिरदे नित आवै लौलीना॥
सतसँग रंग राह रस पीना। हम पुनि बस्तु अगम की दीन्हा
अस अस कछु दिन कासी माईं। रहे तहाँ पुनि सहज सुभाई॥
सोलासै सोला में सोई। कातिक बदी पंचमी होई॥
आये पलकराम इक संतो। रहे कासी में नानक पंथी॥
गुष्टि भाव बिधि उन से कीन्हा। खुसी भये मारग को लीन्हा॥
घट रामायन ग्रंथ बनावा। ता की बिधी दिवस सब गावा॥
सम्मत सोलासै अट्ठारा। उठी मौज ग्रंथ कियौ सारा॥
भादौं सुदी मंगल एकादसी। आरंभ कियो प्रथम मन भासी॥
सुनि कासी में अचरज कीन्हा। सोर नगर में भयो अलीना॥
पंडित जगत जैन अरु तुरका। भयौ झगरा आइ कासीपुर का॥
पंडित भेष जगत मिलि सारा। घट रामायन परी पुकारा॥
जो कुल झगरा रीति जस भाँती। जस जस भया दिवस अरु राती
ता से ग्रंथ गुप्त हम कीन्हा। घट रामायन चलन न दीन्हा॥
या से संत मते की रीती। जगत अजान न जानै प्रीती॥
सम्मत सोलासै इकतीसा। राम चरित्र कीन्ह पद ईसा॥
ईस कर्म औतारी भावा। कर्म भाव सब जगहिं सुनावा॥
जग मँ झगरा जाना भाई। रावन राम चरित्र बनाई॥

पंडित भेष जगत सब झारी । रामायन सुनि भये सुखारी ॥
अंधा अंधे बिधि समझावा । घट रामायन गुप्त करावा ॥
अब कहौं अंत समय अस्थाना । देह तजी बिधि कहौं बिधाना ॥

॥ दोहा ॥

सम्मत सोलासै असी, नदी बरुन के तीर ।
सावन सुकला सत्तमी, तुलसी तज्यो सरीर ॥

॥ चौपाई ॥

मैं अपना बरतंत बताई । समझ बूझ सुध बुध चित लाई ॥
जस जस भया बिधी बिधि लेखा । तस तस तुलसी कहा बिसेखा ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी नीच निकाम, गति मति उतपति सब सुधी ।
निधि स्तुति संत समान, आदि अंत तुलसी बिधी ॥

संतमत भेद बरनन

॥ छंद ॥

सरनि सूर संता सो लीला अनंता । कृपा कीन्ह कंथा दयालं कृपालं ॥१॥
मिटे दुक्ख दुंदा कटे काल फंदा । फटे भौ निखंदा न दुंदं न फंदं ॥२॥
दया संत जानी सो कहँ लौं बखानी । मता मूल मानी न करमं न भरमं ॥३॥
गुरू दीन्ह संधा भया नीच बंदा । जु तुलसी निखंदा सुबोधं प्रबोधं ॥४॥

॥ दोहा ॥

संत सरन सम मुक्ति मन, तन मन समझ सिहार ।
बूझि बचन मन मूल को, सबहि सूल मिटि जाय ॥१॥
पकरि पदर धरि संत पद, जद्यपि सुरति बिचार ।
लार लगन लागी रहै, तब उतरै भौ पार ॥२॥

॥ छंद ॥

लखौ संत स्वामी पकौ पंथ नामी । अचिंतं अनामी न ठामं न धामं ॥१॥
करौ प्रेम प्रीती सरन सूर सुरती । धरौ पद्म प्रीतं न नीतं अनीतं ॥२॥
धरै धीर चरना हरै पीर सरना । भगै भूमि भरमं न जनमं न मरनं ॥३॥

गुरू सब्द सारा निकरि सिंध पारा। घसी अगम धारा नियारं सुपारं॥४॥
चली सार संगी लगी लार चंगी। तनी तार तंगी उमंगै उलंघी॥५॥
लखौ लोक न्यारी पकौ प्रेम प्यारी। अधर मैं निहारी न रंगं न रूपं॥६
गहै सूर साधू सो भाखै अगाधू। न सावन न भादूँ न नीरं न पीरं॥७॥
बना बेनि घाटा लखी चीन्ह बाटा। सखी संग ठाटा बिराटं बिधानं॥८॥
लखी सुर्ति सैला चखी चौंज खेला। तका तुलसी तालं कटा भर्म जालं॥९॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी संत दयाल, निज निहाल मो कौ कियौ।
लियौ सरन के माहिँ, जाइ जन्म फिर कर जियौ॥

॥ दोहा ॥

भर्म भूल बस जग रहै, सहै जो जम के सूल।
फूल फँदै जग जाल मैँ, बंध न चीन्हा भूल॥१॥
ये जग जाल कराल है, फँद फँद मुनि बेहाल।
काल चाल चीन्हा नहीं, तुलसी संत कृपाल॥२॥
मैँ मतिमंद निकामता, पता न जानौं भेद।
खेद जन्म की मिटि गई, लई लगन स्रुति लार॥३॥
सतगुरु सुरति लखाइया, दिया जो भेद सुनाइ।
पाँय परसि रस बस रही, गई गगन के माहिँ॥४॥

॥ चैापाई ॥

तुलसी तन मन अगम तमासा। लखै साध कोइ बरनि बिलासा॥
कहि कहि कहौं संत के बैना। सुनि सुनि समझ भया सुख चैना॥
मो मन जानि जमक जस गाई। खाइ खलक सोइ नाहिँ सुनाई॥
ये जग जोर घोर अँधियारा। अंधे लगे अंध की लारा॥
संत मता नहिँ चीन्हि गँवारा। कस कस लखै पार पद न्यारा॥
नैन न चैन ऐन हिये झाँईं। सो कहौ संत अंत कस पाई॥
मैला मन मद माहिँ चलावै। साधन संग रंग नहिँ भावै॥
मन तरंग तन लहर गड़ानी। भया अंध कहौ कस कस जानी॥

॥ दोहा ॥

मन तरंग थिर ना भयौ, गही न सतगुरु टेक ।
भेष भरम बस पचि मरे, धर धर जनम अनेक ॥

॥ छंद ॥

तुलसी तोल बानी सो भाखा बखानी । अली आदि जानं सो छानं बखानं॥
कही आदि जेती भई भाख तेती। लई संत सेती जो सूझं सो बूझं
गुरू गैल गवना लखी लोक भवना। चखी चौज मौजं न सोगं न भोगं
पती पीर जानी मती मूल मानी । सती सूर सानी सो आपं मिलापं
मिली सिंध सारा जो सलिता सिधारा । धसी पैठि धारा जो सिंध सो बुंदं
असी सुर्त चाली मिली सब्द नाली। भई भैंट भालं अकालं न जालं
तलब तुलसि भारी लगी प्रेम प्यारी। पिया सोँ सवारं जो नैना निहारं

॥ दोहा ॥

प्रेम पियारी प्रीति सोँ, जीति जन्म मन सार ।
पार पकरि स्रुति सैल कर, भर भर भवन सिधार ॥

॥ चौपाई ॥

जोइ जोइ भेद भया सोइ भाखा । तुलसी कहन कछू नहिं राखा ॥
ये बिधि भया भेद सोइ गाया । तुलसी अगमन भाखि सुनाया॥

सोरठा

जोइ जोइ बिधि बरतंत, संत समझ मो को दई ।
लही जो तुलसीदास, कही कहन घट लखि परी ॥१॥
कहि लख लखन लखाव, चाव चौज जस जस भई ।
दही दधि माखन भाव, काढ़ि तत्त येहि बिधि लह्यौ ॥२॥
पद परसंग समान, जानि कल्प जुग जुगन की ।
पलक पार दरियाव, भावँ भेद लखि जिन कही ॥३॥

॥ चौपाई ॥

हित चित चेत सेत स्रुति सारा । संत चरन पर तन मन वारा ॥
मोरे बुधि बल बरन बिबेकी । मैं नित लखन संत की देखी ॥

कही सुनी नहिँ निज निज बानी। सब्द बूझ कोइ संत पिछानी॥
मोरे तन मन दृष्टि दिखानी। सो सब कृपा संत की जानी॥

॥ सोरठा ॥

संतन सरन उबार, लार लगन जो कोउ करै।
भरै भवन स्रुति द्वार, पार परसि पारस भये॥

॥ चौपाई ॥

मैं लोहा जड़ कीट समाना। गुरु पारस सँग कनक कहाना॥
कंचन भया सोन सुख माना। सो सराफ की तुलै दुकाना॥
पुनि गहना गढ़ि कीन्ह सुनारा। तोड़ मोड़ बहु भाँति सँवारा॥
पुनि पारस नहिँ सोन कहाना। सोन सोन जुग जुग जिव जाना॥
पारस परसत पारस होई। तस सतगुरु मत भाखा सोई॥
तुलसी सतगुरु पारस कीन्हा। लोहा सुगम अगम लखि लीन्हा
लोहा कंचन पारस होई। पारस पद संतन मत सोई॥
करि सतसंग रंग जोइ जाना। जिन वोहि पारस को पहिचाना
कर सोइ पारस कंचन होई। ये पारस सतगुरु सम सोई॥

॥ सोरठा ॥

पारस कंचन कीन्ह, दीन द्रब्य बस भौ भई।
दई दई कर्म लीन्ह, मीन बिबस बस जल भई॥१॥
सतगुरु पारस सार, लगै लार पारस करै।
सरै जीव कै काज, भरै सुरति भिनि भवन मैं॥२॥
सूरति सब्द मिलाप, आठ अटारी चढ़ि चली।
अली अगम गढ़ घाट, बाट लखन सतगुरु दई॥३॥

॥ चौपाई ॥

जिन सतगुरु पद चरत सिहारा। सोइ पारस भये अगम अपारा॥
सतगुरु पारस संत बखाना। चौथा पद चढ़ि अगम कहाना॥
या को भर्म भाव कोइ लावै। सतसँग करै भर्म खुलि जावै॥

जो कोइ कहै अगम कस भाखा। आदि अरु अगम सुरति रस चाखा
तुलसी तुच्छ ग्रंथ घट कीन्हा। बूझैं संत अगम लौ लीना ॥
मैं उन का बालक बिधि गाई। सुनिहैं संत बाल हित लाई ॥
मैं अजान बुधिहीन अचेता। वे सुनि करैं करैं हित हेता ॥
मैं बुधि लरिका की लरिकाई। बुधि बालक बिधि कीन्ह बनाई ॥
संत दयाल दया के स्वामी। तुलसी कीन्ही निरखि निसानी ॥

॥ सोरठा ॥

घट रामायन सार, जग बिरोध गुप्ते करी।
लगी संत के हाथ, बूझि भेद सारा लिया ॥१॥
अगम निगम रस सार, निरखि संत हाथै करी।
मथि माखन रस काढ़ि, जगत भाँड बिधि निरखि कै॥२॥
तुलसी तत मत जान, सत्त भेद निंदा नहीं।
ये मत माखन सार, जग असार जानै नहीं ॥३॥
सब संतन रस मूल, कर्म सूल गाढ़े कटे।
फटे कागद करतार, सार बस्तु हाथै लगी ॥४॥
तुलसी निपट अयान, जानि संत बूझै सोई।
घट रामायन सार, लखि अगार बिधि यों कही॥५॥
आदि अंत की बात, भाखि भेद संतन लखा।
पका परम पद पार, झका भर्म भौ में रहा ॥६॥
जिन बूझा मत मूल, सरन सूल सगरे कटे।
फटे भरम क्रम भूल, जब अतूल अद्बुद लखा ॥७॥

॥ दोहा ॥

जो ब्रह्मंड पिंड मैं मई, मइ मइ मोर पसार।
सब्द सार गुरु पदम की, तुलसी कहत निहार ॥

॥ चौपाई ॥

टाटी त्रोटक तोड़ बताई। छंद माहिँ सब संध लखाई ॥
जस जस भया गुरू सिष मेला। सो तुलसी त्रोटक मैं खोला ॥

या की बूझ संत कोइ जानी । जिन जिन मंजिल राह पिछानी
आदि अंत और अगम निवासा । ज्ञान भक्ति और जोग बिलासा॥
पुनि बैराग राग रस भारी । अगम निगम मत कहा बिचारी
गुरु सतगुरु मत मिलन मिलापा । छूटै तिमर अंध और आपा ॥
सतगुरु गगना मगन गुहारा । जब हिये नैना निरखि निहारा॥
पल पल सुरति पदम पद माहीं । ताकै ऐन सैन की राही ॥
प्रथमहिं बन्दौं सतगुरु स्वामी। तुलसी बारंबार प्रनामी ॥

॥ सोरठा ॥

गुरु पद गगन गुहार, जब निहार निरनय लखै ।
पकै पदम सुति सार, तकै ऐन अंदर मई ॥

॥ छंद १ ॥

प्रथम बंद स्वामी सो सतगुरु प्रनामी । अगम पंथ धामी सो वारं न पारं
परम पद्म मूलं सो महिमा अतूलं । कटे घोर सूलं अनंतं अपारं
कही तोल बानी अकथ गति कहानी । कहाँ लौ बखानी सो चरनारबिंदं
मुए जोग ज्ञानी सो महिमा न जानी । बरन बेद बानी सो नेता जो नेतं
तुलसी सैल सानी सो भाखा बखानी । जो बंदौं नमामी सो लेखा अलेखं

॥ छंद २ ॥

गुरू धाम कंजा मनी मैल मंजा । धनू तोड़ भंजा सो लीलं अपीलं
घोर गरजा घरारी कमठ सेस भारी । सो कड़का करारी सो अंगं भुअंगं
दिगज दिग्गपाली परे पट्ट चाली। रबी चाँप डाली सो तोलं अतोलं
हली भूमि भारी कुलाहल अपारी । धसी तोड़ धारं गगन घोर सारं
तकी सुन्न जाई पकी ताल माहीं। सो तुलसी अन्हाई छुटे कर्म मैलं

॥ छंद ३

अगम पंथ बाटा चढ़ी सुर्ति घाटा । गगन गैल फाटा सो आतं निआतं
पिला पील भारी चढ़ी सुर्ति सारी। सो खिरकी निहारी लखा ब्रह्म पूरं
अधर लेख लेखा सो जानै न भेषा । सुरति संत देखा सो लेखा अलेखं
तुलसी तत्त बानी किया मत्त छानी । लिया लै निदानं जो ज्ञानं सो ध्यानं

॥ छंद ४ ॥

कही सिंध आनी सो बुंदा न जानी। सो सतगुरु बखानी अनाथं सनाथं
अजर कूप भारी सो सूरत सँवारी। कटे कर्म बंधं बसे बुन्द सिंधं
चढ़ी चेट चाली खड़ी बंक नाली। धसी द्वारपाली प्रबोधं सो धोयं
तुलसी तत्त तोली अधर चाँप खोली। लखो संत बोली सो मोलं अमोलं

॥ छंद ५ ॥

जड़े जाल कर्मं पड़े भूल भर्मं। धरे धर अधर्मं न मरमं न सरमं
नहीं भक्त ज्ञानी जो आपा न जानी। सो पाषान पानी न जाना अजानं
मया मोह बंधे त्रिया पुत्र फंदे। त्रिषय भोग अंधे सो गंदं निखंदं
तुलसी छेक छोड़े हथी और घोड़े। तिनुका इस्क तोड़े सो मोड़ं करोड़ं

॥ छंद ६ ॥

गिरा गोह गाँठी परे पाँच बाटी। फँसे घोर घाटी सो ठाटं बैराटं
प्रकिरती पचीसं गुना नाम ईसं। गिरा गोह ग्रीसं सो प्रीसं अनीसं
जड़े जोड़ जानी पड़े पिंड पानी। चले चेत खानी न ज्ञानं न ध्यानं
तुलसी मैल मारं भया भूमि भारं। न तुरती सम्हारं सो वारं न पारं

॥ छंद ७ ॥

कृतिम काल जारं फिकर फहम फारं। निकर नौ निवारं सो भारं उतारं
अली आदि जानी भली भूल मानी। चली चोन्ह खानी हितानं चितानं
तिरकूट तालं करौ सैल भालं। मिलौ मौज मालं सो कालं निकालं
तुलसी तोल गाई गगन गैल जाई। सुरति सैल पाई सो साधं अगाधं

॥ छंद ८

अली आत्म रूपं अकासं सरूपं। रबी भास भूपं अनंतं अनूपं
निराकार कारं भई जोति जारं। लई विस्व भारं सो सारं सम्हारं
सरगुन स्याम वारं सो सृष्टी सवारं। रची खानि चारं सो भूमी अपारं
अली आस अंडा जमा जीव पिंडा। सो तुलसी अखंडा बैराटं ब्रह्मंडं

॥ छंद ९ ॥

गुना गोह तीतं बना आस क्रीतं। पके पाँच पीतं सो चीतं अनीतं
बैराट धारं सो बेदौ न पारं। जो नेतौ पुकारं सो वारं न पारं

निरबान बानं जगा जोग ध्यानं। पगा प्रेम पालं सो कालं करालं
तुलसी तत्त घोयं गठे गाँठि गोयं। पड़े पाँच मोयं जो सोयं सो खोयं

॥ सोरठा ॥

त्राटक तरक बिचार, समझि संध साधू लखै।
तकै सुरति धरि ध्यान, सो समान पद को चखै ॥१॥
घट रामायन अन्त, समझि सूर संतहि लखै।
झकै भेष और पन्थ, थकै जगत भौ भिल रहा ॥२॥

॥ दोहा ॥

पंडित ज्ञानी भेष जो, नहिं पावै कोइ अंत।
ये अतन्त रस अगम है, लखै सूर कोइ संत॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी मैं मतिहीन, संत चीन्ह मो को दई।
भई निरत पद लीन, होइ अधीन अन्दर मई॥

॥ इति ॥

॥ सूची पत्र ॥

घट रामायन–भाग १

संतबानी पुस्तकमाला

कबीर साहिब का साखी-संग्रह ... ... ।।।)
कबीर साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ तीसरा एडिशन ... ।।)
" " " भाग २ ... ... ।।)
" " " भाग ३ ... ... ।)
" " " भाग ४ ... ... =)
" " ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और झूलने ... ... ।)
" " अखरावती ... ... -)।।
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र .. ... ।=)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली मय जीवन-चरित्र भाग १ ... ।।।)
" " " भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित ... ।।।)
" " रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ... ।।।=)
" " घट रामायन दो भागों में, मय जीवन-चरित्र,
भाग १ ... १)
" " भाग २ . १)
गुरु नानक साहिब की प्राण-संगली सटिप्पण, जीवन-चरित्र सहित
भाग १ ... १)
" " " " भाग २ ... १)
दादू दयाल की बानी, भाग १ [साखी] जीवन-चरित्र सहित ... १-)
" " भाग २ [शब्द] ... ... ।।।-)
सुंदर बिलास और सुंदरदास जी का जीवन-चरित्र .. ... ।।≡)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलिया और जीवन-चरित्र ... ... ।।)
" " भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कबित्त और सवैया . ।।)
" " भाग ३—रागों के शब्द या भजन और साखियाँ . ।।)
जगजीवन साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ।।-)
" " " भाग २ ... ... ।।-)
दूलन दास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ≡)
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ .. ... ।।)।।
" " भाग २ . ... ।≡)।।
गरीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ।।।=)
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ।-)।।
दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र ... ।-)
" " के चुने हुए पद और साखी ... ≡)।।
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ... ।)।।
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... ।≡)